विक्रम संवत 2079 ■ भाद्रपद/आश्विन (क्वॉर) मास (07) ■ 01 सितम्बर 2022 ■ मूल्य : 25 रु.

चरैवेति

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2021-23, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 10 एवं 15 तारीख

जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान, जय अनुसंधान

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा जी ने स्वतंत्रता दिवस पर भाजपा मुख्यालय में राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्वतंत्रता दिवस पर महात्मा गांधी जी की समाधि पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सदैव अटल पर पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की समाधि पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने ''हर घर तिरंगा' अभियान मनाया।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने रक्षा बंधन का पर्व मनाया।

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा जी विभाजन विभिषिका स्मृति दिवस के मौन जुलूस में।

अनुक्रमणिका

संपादकीय ▶ **संजय गोविन्द खोचे** 04

- भ्रष्टाचार और परिवारवाद से मुक्ति जरूरी

राष्ट्र के नाम संदेश ▶ 05-07

- भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी...

05

08

25

- **स्वतंत्रता दिवस :** 08-16
जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान, जय अनुसंधान
- **नए भारत के रचना की नींव :** 17-18
राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमारे मूल विचारों के आधार पर-अमित शाह...
- **तिरंगा यात्रा :** 19
मुख्यमंत्री एवं प्रदेश अध्यक्ष के नेतृत्व में तिरंगा यात्रा निकली...
- **आलेख : विष्णुदत्त शर्मा** 20-21
निकाय परिणामों का संदेश जन-जन तक पहुंची भाजपा
- **आलेख : डॉ. नरोत्तम मिश्रा** 22-23
सुशासन की पहली शर्त, कानून का राज
- **नगरीय निकाय चुनाव:** 24
भाजपा का नगरीय निकायों में परचम - विष्णुदत्त शर्मा
- **बूथ विस्तारक अभियान :** 25
व्यवस्था परिवर्तन के लिए लगातार सरकार चाहिए, बूथ...
- **जनता का विश्वास :** 27
निकाय अध्यक्षों में जीत सरकार की जनकल्याणकारी...
- **आपदा को अवसर में बदला :** 28-31
जो प्रण लिया, वो पूरा हो गया...
- **मन की बात :** 32-37
अमृत महोत्सव की अमृतधारा बह रही है
- **शिक्षक दिवस :** 38-39
संपूर्ण शिक्षक बिरादरी के सम्मान का दिन है शिक्षक दिवस
- **पुण्यतिथि :** 40
देश सेवा में डॉ. विश्वेश्वरैया
- **विचार-प्रवाह :** 41-42
राष्ट्रीय जीवन के अनुकूल अर्थ-रचना

मुख्य व्रत-त्यौहार

1. ऋषिपंचमी 2. मोरयाईछठ, संतानसातें, मुक्ताभरणसप्तमी 3. राधाष्टमी, दूर्वाष्टमी 6. जलझूलनी (डोल) एकादशी 7. श्रवण द्वादशी 8. प्रदोष व्रत 9. पार्थिव भ. गणेश विसर्जन, अनंत चतुर्दशी, व्रत पूर्णिमा 10. स्ना. दा. पूर्णिमा, गुर्जर रोटपू. 11. पितृपक्ष प्रारम्भ 13. अंगारकी गणेश चतुर्थी व्रत 17. महालक्ष्मी व्रत 18. जिऊतिया व्रत 21. इंदिरा एकादशी व्रत, 23. प्रदोष व्रत 24. शिव चतुर्दशी व्रत 25. स्ना. दा. पितृमोक्ष अमावस 26. शारदीय नवरात्रारंभ, बैठकी 27. चन्द्रदर्शन 29. विनायकी चतुर्थी व्रत 30. उपांग ललिता व्रत

मुख्य जयंती-दिवस

1. गुरूग्रंथसाहिबप्रकाशदिवस 5. शिक्षकदिवस, डॉ. राधाकृष्णनज., संतमदरटेरेसापुण्यतिथि 8. विश्वसाक्षरतादिवस, माँवेलांकनी पर्व 9. सद्गुरू धनीदेव परमधामवास दि. 11. संत विनोबा भावे जयंती 13. स्वामी ब्रह्मानंद लोधी निर्वाण दि. 14. राष्ट्रीय हिन्दी दिवस 15. इं. मोक्षगुंडम विश्वश्वैरिया जयंती अभियंता दिवस 18. राजा शंकरशाह, रघुनाथशाह ब. दि. 24. प्राणनाथ प्रगटन महोत्सव 25. पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती

वर्ष-54, अंक : 08, भोपाल, सितम्बर 2022

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

हम भारत के गौरवशाली अतीत की तेजस्विता से प्रेरित है, लेकिन हम इसे जीवन का सर्वोच्च शिखर नहीं मानते, हमें वर्तमान की वास्तविक समझ है लेकिन हम वर्तमान से बंधे नहीं है। हमारी आंखों में भारत के उज्जवल भविष्य का सपना है। हम कर्मयोगी है।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

अध्यक्ष
अजय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष
प्रशांत हर्णे

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

कोषाध्यक्ष
कैलाश सोनी

प्रभारी वैचारिकी
डॉ. दीपक विजयवर्गीय

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- पच्चीस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

भ्रष्टाचार और परिवारवाद से मुक्ति जरूरी

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आव्हान पर हर घर, हर शहर, हर गाँव पर चारों ओर तिरंगा 13 से 15 अगस्त के बीच में शान से फहरा रहा था।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने हर घर तिरंगा का जो नारा देश वासियों को दिया था यह उसी का जीवंत परिणाम था। इस अभियान से देश में सामूहिक चेतना का भाव और ज्यादा जागृत हुआ।

इस बार के स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारत की सामूहिक शक्ति और एकता का दिव्य दर्शन हुआ। जब भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आव्हान पर हर घर, हर शहर, हर गाँव पर चारों ओर तिरंगा 13 से 15 अगस्त के बीच में शान से फहरा रहा था। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने हर घर तिरंगा का जो नारा देश वासियों को दिया था यह उसी का जीवंत परिणाम था। इस अभियान से देश में सामूहिक चेतना का भाव और ज्यादा जागृत हुआ। हमारा देश बहुत बड़ा है, यहां कई तरह की विविधताऐं हैं, कई भाषाऐं हैं, संस्कृतियां भी अलग-अलग हैं लेकिन सारे भारतवासियों का देश भक्ति का जज्बा पूरे देश में एक समान है। क्योंकि जब बात देश के आन-बान और शान तिरंगे को फहराने की आई तो हर भारतवासी एक ही भावना में बहता दिखाई दिया। तिरंगे के गौरव को हर भारतवासी ने भरपूर सम्मान दिया। यही हमारी एकता का परिचायक है। अमृत महोत्सव का यह रूप भारत ही नहीं पूरे विश्व में देखने को मिला।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लाल किले की प्राचीर से देश को सम्बोधित करते हुए देश की प्राथमिकताऐं स्पष्ट रूप से बता दीं। भारत अब बहुत तेजी से विकसित राष्ट्र होने की दिशा में बढ़ रहा है। इसके लिए देश में रिसर्च के वातावरण को और तेजी से विकसित किया जा रहा है। इसी भाव को ध्यान में रख कर भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देशवासियों को एक नया मंत्र, एक नया नारा दिया है

''जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान, जय अनुसंधान''।

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए अब देश में अनुसंधान को और ज्यादा बढ़ाया जायेगा।

अमृत महोत्सव का प्रारम्भ 2021 में हुआ था। पूरे वर्ष भारत के हर कोने में कई सारे कार्यक्रम इस दौरान, इस परिपेक्ष्य और इस उद्देश्य हेतु हुए। इसका मकसद सारे देशवासियों को यह बताना था कि देश की आजादी कितने प्रयासों के बाद प्राप्त हुई है। आजादी के लिए अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। पर इनको किसी न किसी कारण से इतिहास में जगह नहीं मिली और इन्हें वो सम्मान भी नहीं मिला जो इन्हें मिलना चाहिए था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के अभिनव प्रयास और मार्गदर्शन से अमृत महोत्सव के दौरान देश में खोज-खोज करके देश के हर कोने से ऐसे महान वीरों को, महापुरूषों को, त्यागियों को, तपस्वियों को, बलिदानियों को न सिर्फ याद किया बल्कि उन्हें दिल की गहराईयों से कृतज्ञ देशवासियों ने नमन किया।

आजादी के बाद के 75 वर्ष भारत के इतिहास में अनेक चुनौतियों से भरे रहे। हमने इस दौरान युद्ध भी देखे,कई उपलब्धियां हासिल करीं, सुख और दुख कई चीजों का इस दौरान अनुभव किया। पर जब हम पलट कर देखते हैं और विश्लेषण करते हैं तो हमें खुशी ज्यादा महसूस होती है, कि इन 75 वर्षों में हमने, हमारे पूर्वजों ने प्रचंड पुरूषार्थ किया। अनेक विपरीत परिस्थितियों के बाद भी हमने, भारतवासियों ने हार नहीं मानी, अपने संकल्पों को सदैव अपनी आँखों के सामने रखा। इसी का परिणाम है कि आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत विश्व की सबसे तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। भारत के साथ-साथ आजाद हुए हमारे पड़ोसी देशों को देखें, तो अतंर साफ -साफ दिख जावेगा। पर हम भारतवासियों के लिए यह संतोष का विषय तो है पर संतुष्टि का नहीं, हमें अभी और आगे जाना हैं, मीलों आगे जाना है, विश्व में भारत को सबसे ऊँचा और सबसे आगे देखना है, यही हम सब भारतवासियों का प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में लक्ष्य है।

आज भारत विश्व में सबसे तेज गति से बढ़ने वाले देशों में से एक है। ऐसा भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में 130 करोड़ भारतवासियों की सामूहिक शक्ति के प्रयास से सम्भव हो पाया है। भारत ने 200 करोड़ से ज्यादा के वैक्सिनेशन के लक्ष्य को रिकार्ड समय में प्राप्त किया। यही वह सामूहिक शक्ति है, सामूहिक प्रयास है जिसे भारत ने हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में प्राप्त किया है।

आज लगभग पूरे भारत में बिजली का कनेक्शन पहुँच गया है। आजादी के बाद का यह सबसे बड़ा काम भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में ही पूरा हुआ। वरना इसके पहले क्या हाल था पूरा देश जानता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश में जल्दी ही हर घर नल से जल पहुँच जायेगा। यह भी एक अभूतपूर्व उपलब्धि होगी।

एक बात तो तय है कि भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के ऊर्जावान नेतृत्व में 130 करोड़ भारतवासी जब कोई लक्ष्य निर्धारित करते हैं तो उसे अवश्य प्राप्त कर लेते हैं। आज का भारत संकल्प की शक्ति से तेज गति से विकास की दौड़ में आगे बढ़ने का आकांक्षी है और इसका कुशल नेतृत्व भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी कर रहे हैं। भारत की जनता का भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के ऊपर अटूट विश्वास है। तभी तो लाल किले की प्राचीर से भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्पष्ट रूप से भारत के विकास को रोकने वाली दो चीजों पर सीधा प्रहार किया और वो था भारत में भ्रष्टाचार और परिवारवाद, भाई-भतीजावाद। आने वाले समय में भारत के विकास के लिए वर्तमान पीढ़ी के साथ-साथ आने वाली पीढ़ी को भी इन दोनों बीमारियों से बचना और लड़ना बहुत जरूरी है। परिवारवाद ने देश का बहुत नुकसान किया है।

हमारे नौजवानों की योग्यता, आशा और आकांक्षाओं को परिवारवाद ग्रहण लगा देता है और इसी परिवारवाद के कारण भ्रष्टाचार पनपता है। आजादी के इस अमृत महोत्सव में हम सब देशवासियों को यह संकल्प लेना होगा कि हमें देश से इन दोनों बीमारियों को जल्दी से जल्दी खत्म करना है। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी का

76वें स्वाधीनता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्र के नाम संदेश

छिहत्तरवें स्वाधीनता दिवस की पूर्व संध्या पर देश-विदेश में रहने वाले सभी भारतीयों को मैं हार्दिक बधाई देती हूं। इस गौरवपूर्ण अवसर पर आपको संबोधित करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। एक स्वाधीन देश के रूप में भारत 75 साल पूरे कर रहा है। 14 अगस्त के दिन को विभाजन-विभीषिका स्मृति-दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इस स्मृति दिवस को मनाने का उद्देश्य सामाजिक सद्भाव, मानव सशक्तीकरण और एकता को बढ़ावा देना है। 15 अगस्त 1947 के दिन हमने औपनिवेशिक शासन की बेड़ियों को काट दिया था। उस दिन हमने अपनी नियति को नया स्वरूप देने का निर्णय लिया था। उस शुभ-दिवस की वर्षगांठ मनाते हुए हम लोग सभी स्वाधीनता सेनानियों को सादर नमन करते हैं। उन्होंने अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया ताकि हम सब एक स्वाधीन भारत में सांस ले सकें ।

भारत की आजादी हमारे साथ-साथ विश्व में लोकतंत्र के हर समर्थक के लिए उत्सव का विषय है। जब भारत स्वाधीन हुआ तो अनेक अंर्तराष्ट्रीय नेताओं और विचारकों ने हमारी लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली की सफलता के विषय में आशंका व्यक्त की थी।

उनकी इस आशंका के कई कारण भी थे। उन दिनों लोकतंत्र आर्थिक रूप से उन्नत राष्ट्रों तक ही सीमित था। विदेशी शासकों ने वर्षों तक भारत का शोषण किया था। इस कारण भारत के लोग गरीबी और अशिक्षा से जूझ रहे थे। लेकिन भारतवासियों ने उन लोगों की आशंकाओं को गलत साबित कर दिया। भारत की मिट्टी में लोकतंत्र की जड़ें लगातार गहरी और मजबूत होती गईं।

भारत की आजादी हमारे साथ-साथ विश्व में लोकतंत्र के हर समर्थक के लिए उत्सव का विषय है। जब भारत स्वाधीन हुआ तो अनेक अंर्तराष्ट्रीय नेताओं और विचारकों ने हमारी लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली की सफलता के

विषय में आशंका व्यक्त की थी। उनकी इस आशंका के कई कारण भी थे। उन दिनों लोकतंत्र आर्थिक रूप से उन्नत राष्ट्रों तक ही सीमित था। विदेशी शासकों ने वर्षों तक भारत का शोषण किया था। इस कारण भारत के लोग गरीबी और अशिक्षा से जूझ रहे थे। लेकिन भारतवासियों ने उन लोगों की आशंकाओं को गलत साबित कर दिया। भारत की मिट्टी में लोकतंत्र की जड़ें लगातार गहरी और मजबूत होती गईं।

अधिकांश लोकतान्त्रिक देशों में वोट देने का अधिकार प्राप्त करने के लिए महिलाओं को लंबे समय तक संघर्ष करना पड़ा था। लेकिन हमारे गणतंत्र की शुरुआत से ही भारत ने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को अपनाया। इस प्रकार आधुनिक भारत के निर्माताओं ने प्रत्येक वयस्क नागरिक को राष्ट्र-निर्माण की सामूहिक प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर प्रदान किया। भारत को यह श्रेय जाता है कि उसने विश्व समुदाय को लोकतंत्र की वास्तविक क्षमता से परिचित कराया।

मैं मानती हूं कि भारत की यह उपलब्धि केवल संयोग नहीं थी। सभ्यता के आरंभ में ही भारत-भूमि के संतों और महात्माओं ने सभी प्राणियों की समानता व एकता पर आधारित जीवन-दृष्टि विकसित कर ली थी। महात्मा गांधी जैसे महानायकों के नेतृत्व में हुए स्वाधीनता संग्राम के दौरान हमारे प्राचीन जीवन-मूल्यों को आधुनिक युग में फिर से स्थापित किया गया। इसी कारण से हमारे लोकतंत्र में भारतीयता के तत्व दिखाई देते हैं। गांधीजी सत्ता के विकेंद्रीकरण और जन-साधारण को अधिकार-सम्पन्न बनाने के पक्षधर थे।

पिछले 75 सप्ताह से हमारे देश में स्वाधीनता संग्राम के महान आदर्शों का स्मरण किया जा रहा है। 'आजादी का अमृत महोत्सव' मार्च 2021 में दांडी यात्रा की स्मृति को फिर से जीवंत रूप देकर शुरू किया गया। उस युगांतरकारी आंदोलन ने हमारे संघर्ष को विश्व-पटल पर स्थापित किया। उसे सम्मान देकर हमारे इस महोत्सव की शुरुआत की गई। यह महोत्सव भारत की जनता को समर्पित है। देशवासियों द्वारा हासिल की गई सफलता के आधार पर 'आत्मनिर्भर भारत' के निर्माण का संकल्प भी इस उत्सव का हिस्सा है। हर आयु वर्ग के नागरिक पूरे देश में आयोजित इस महोत्सव के कार्यक्रमों में उत्साह पूर्वक भाग ले रहे हैं। यह भव्य महोत्सव अब 'हर घर तिरंगा अभियान' के साथ आगे बढ़ रहा है। आज देश के कोने-कोने में हमारा तिरंगा शान से लहरा रहा है। स्वाधीनता आंदोलन के आदर्शों के प्रति इतने व्यापक स्तर पर लोगों में जागरूकता को देखकर हमारे स्वाधीनता सेनानी अवश्य प्रफुल्लित हुए होते।

हमारा गौरवशाली स्वाधीनता संग्राम इस विशाल भारत-भूमि में बहादुरी के साथ संचालित होता रहा। अनेक महान स्वाधीनता सेनानियों ने वीरता के उदाहरण प्रस्तुत किए और राष्ट्र-जागरण की मशाल अगली पीढ़ी को सौंपी। अनेक वीर योद्धाओं तथा उनके संघर्षों विशेषकर किसानों और आदिवासी समुदाय के वीरों का योगदान एक लंबे समय तक सामूहिक स्मृति से बाहर रहा। पिछले वर्ष से हर 15 नवंबर को 'जन-जातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाने का सरकार का निर्णय स्वागत-योग्य है। हमारे जन-जातीय महानायक केवल स्थानीय या क्षेत्रीय प्रतीक नहीं हैं बल्कि वे पूरे देश के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

एक राष्ट्र के लिए, विशेष रूप से भारत जैसे प्राचीन देश के लंबे इतिहास में, 75 वर्ष का समय बहुत छोटा प्रतीत होता है। लेकिन व्यक्तिगत स्तर पर यह काल-खंड एक जीवन-यात्रा जैसा है। हमारे वरिष्ठ नागरिकों ने अपने जीवनकाल में अद्भुत परिवर्तन देखे हैं। वे गवाह हैं कि कैसे आजादी के बाद सभी पीढ़ियों ने कड़ी मेहनत की, विशाल चुनौतियों का सामना किया और स्वयं अपने भाग्य-विधाता बने। इस दौर में हमने जो कुछ सीखा है वह सब उपयोगी साबित होगा क्योंकि हम राष्ट्र की यात्रा में एक ऐतिहासिक पड़ाव की ओर आगे बढ़ रहे हैं। हम सब 2047 में स्वाधीनता के शताब्दी-उत्सव तक की 25 वर्ष की अवधि यानि भारत के अमृत-काल में प्रवेश कर रहे हैं।

हमारा संकल्प है कि वर्ष 2047 तक हम अपने स्वाधीनता सेनानियों के सपनों को पूरी तरह साकार कर लेंगे। इसी काल-खंड में हम बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर के नेतृत्व में संविधान का निर्माण करने वाली विभूतियों के vision को साकार कर चुके होंगे। एक आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में हम पहले से ही तत्पर हैं। वह एक ऐसा भारत होगा जो अपनी संभावनाओं को साकार कर चुका होगा।

दुनिया ने हाल के वर्षों में एक नए भारत को उभरते हुए देखा है, खासकर COVID-19 के प्रकोप के बाद। इस महामारी का सामना हमने जिस तरह किया है उसकी सर्वत्र सराहना की गई है। हमने देश में ही निर्मित वैक्सीन के साथ मानव इतिहास का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान शुरू किया। पिछले महीने हमने दो सौ करोड़ वैक्सीन कवरेज का आंकड़ा पार कर लिया है। इस महामारी का सामना करने में हमारी उपलब्धियां विश्व के अनेक विकसित देशों से अधिक रही हैं। इस प्रशंसनीय उपलब्धि के लिए हम अपने वैज्ञानिकों, डॉक्टरों, नर्सों, पैरामेडिक्स और टीकाकरण से जुड़े कर्मचारियों के आभारी हैं। इस आपदा में कोरोना योद्धाओं द्वारा किया गया योगदान विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

कोरोना महामारी ने पूरे विश्व में मानव-जीवन और अर्थ-व्यवस्थाओं पर कठोर प्रहार किया है। जब दुनिया इस गंभीर संकट के आर्थिक परिणामों से जूझ रही थी तब भारत ने स्वयं को संभाला और अब पुनः तीव्र गति से आगे बढ़ने लगा है। इस समय भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ रही प्रमुख अर्थ-व्यवस्थाओं में से एक है। भारत के start-up eco-system का विश्व में ऊंचा स्थान है। हमारे देश में start-ups की सफलता, विशेषकर unicorns की बढ़ती हुई संख्या, हमारी औद्योगिक प्रगति का शानदार उदाहरण है। विश्व में चल रही आर्थिक कठिनाई के विपरीत, भारत की अर्थ-व्यवस्था को तेजी से आगे बढ़ाने का श्रेय सरकार तथा नीति-निर्माताओं को जाता है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान physical और digital infrastructure के विकास में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। प्रधानमंत्री गति-शक्ति योजना के द्वारा connectivity को बेहतर बनाया जा रहा है। परिवहन के जल, थल, वायु आदि पर आधारित सभी माध्यमों को भली-भांति एक दूसरे के साथ जोड़कर पूरे देश में आवागमन को सुगम बनाया जा रहा है। प्रगति के प्रति हमारे देश में दिखाई दे रहे उत्साह का श्रेय कड़ी मेहनत करने वाले हमारे किसान व मजदूर भाई-बहनों को भी जाता है। साथ ही व्यवसाय की सूझ-बूझ से समृद्धि का सृजन करने वाले हमारे उद्यमियों को भी जाता है। सबसे अधिक खुशी की बात यह है कि देश का आर्थिक विकास और अधिक समावेशी होता जा रहा है तथा क्षेत्रीय विषमताएं भी कम हो रही हैं।

लेकिन यह तो केवल शुरुआत ही है। दूरगामी परिणामों वाले सुधारों और नीतियों द्वारा इन परिवर्तनों की आधार-भूमि पहले से ही तैयार की जा रही थी। उदाहरण के लिए 'Digital India' अभियान द्वारा ज्ञान पर आधारित अर्थ-व्यवस्था की आधारशिला स्थापित की जा रही है। 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' का उद्देश्य भावी पीढ़ी को औद्योगिक क्रांति के अगले चरण के लिए तैयार करना तथा उन्हें हमारी विरासत के साथ फिर से जोड़ना भी है।

'Digital India' अभियान द्वारा ज्ञान पर आधारित अर्थ-व्यवस्था की आधारशिला स्थापित की जा रही है।

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' का उद्देश्य भावी पीढ़ी को औद्योगिक क्रांति के अगले चरण के लिए तैयार करना तथा उन्हें हमारी विरासत के साथ फिर से जोड़ना भी है।

आर्थिक प्रगति से देशवासियों का जीवन और भी सुगम होता जा रहा है। आर्थिक सुधारों के साथ-साथ जन-कल्याण के नए कदम भी उठाए जा रहे हैं। 'प्रधानमंत्री आवास योजना' की सहायता से गरीब के पास स्वयं का घर होना अब एक सपना नहीं रह गया है बल्कि सच्चाई का रूप ले चुका है। इसी तरह 'जल जीवन मिशन' के अंतर्गत 'हर घर जल' योजना पर कार्य चल रहा है।

इन उपायों का और इसी तरह के अन्य प्रयासों का उद्देश्य सभी को, विशेषकर गरीबों को, बुनियादी सुविधाएं प्रदान करना है। भारत में आज संवेदनशीलता व करुणा के जीवन-मूल्यों को प्रमुखता दी जा रही है। इन जीवन-मूल्यों का मुख्य उद्देश्य हमारे वंचित, जरूरतमंद तथा समाज के हाशिये पर रहने वाले लोगों के कल्याण हेतु कार्य करना है। हमारे राष्ट्रीय मूल्यों को, नागरिकों के मूल कर्तव्यों के रूप में, भारत के संविधान में समाहित किया गया है। देश के प्रत्येक नागरिक से मेरा अनुरोध है कि वे अपने मूल कर्तव्यों के बारे में जानें, उनका पालन करें, जिससे हमारा राष्ट्र नई ऊंचाइयों को छू सके।

आज देश में स्वास्थ्य, शिक्षा और अर्थ-व्यवस्था तथा इनके साथ जुड़े अन्य क्षेत्रों में जो अच्छे बदलाव दिखाई दे रहे हैं उनके मूल में सुशासन पर विशेष बल दिए जाने की प्रमुख भूमिका है। जब 'राष्ट्र सर्वोपरि' की भावना से कार्य किया जाता है तो उसका प्रभाव प्रत्येक निर्णय एवं कार्य-क्षेत्र में दिखाई देता है। यह बदलाव विश्व समुदाय में भारत की प्रतिष्ठा में भी दिखाई दे रहा है।

भारत के नए आत्म-विश्वास का स्रोत देश के युवा, किसान और सबसे बढ़कर देश की महिलाएं हैं। अब देश में स्त्री-पुरुष के आधार पर असमानता कम हो रही है। महिलाएं अनेक रूढ़ीयों और बाधाओं को पार करते हुए आगे बढ़ रही हैं। सामाजिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं में उनकी बढ़ती भागीदारी निर्णायक साबित होगी। आज हमारी पंचायती राज संस्थाओं में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की संख्या चौदह लाख से कहीं अधिक है।

हमारे देश की बहुत सी उम्मीदें हमारी बेटियों पर टिकी हुई हैं। समुचित अवसर मिलने पर वे शानदार सफलता हासिल कर सकती हैं। अनेक बेटियों ने हाल ही में सम्पन्न हुए राष्ट्रमंडल खेलों में देश का गौरव बढ़ाया है। हमारे खिलाड़ी अन्य अंर्तराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भी देश को गौरवान्वित कर रहे हैं। हमारे बहुत से विजेता समाज के वंचित वर्गों में से आते हैं। हमारी बेटियां fighter-pilot से लेकर space scientist होने तक हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं।

जब हम स्वाधीनता दिवस मनाते हैं तो वास्तव में हम अपनी 'भारतीयता' का उत्सव मनाते हैं। हमारा भारत अनेक विविधताओं से भरा देश है। परंतु इस विविधता के साथ ही हम सभी में कुछ न कुछ ऐसा है जो एक समान है। यही समानता हम सभी देशवासियों को एक सूत्र में पिरोती है तथा 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

भारत अपने पहाड़ों, नदियों, झीलों और वनों तथा उन क्षेत्रों में रहने वाले जीव-जंतुओं के कारण भी अत्यंत आकर्षक है। आज जब हमारे पर्यावरण के सम्मुख नई-नई चुनौतियां आ रही हैं तब हमें भारत की सुंदरता से जुड़ी हर चीज का दृढ़ता पूर्वक संरक्षण करना चाहिए। जल, मिट्टी और जैविक विविधता का संरक्षण हमारी भावी पीढ़ियों के प्रति हमारा कर्तव्य है। प्रकृति की देखभाल माँ की तरह करना हमारी भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। हम भारतवासी अपनी पारंपरिक जीवन-शैली से पूरी दुनिया को सही राह दिखा सकते हैं। योग एवं आयुर्वेद विश्व-समुदाय को भारत का अमूल्य उपहार है जिसकी लोकप्रियता पूरी दुनिया में निरंतर बढ़ रही है।

हमारे पास जो कुछ भी है वह हमारी मातृभूमि का दिया हुआ है। इसलिए हमें अपने देश की सुरक्षा, प्रगति और समृद्धि के लिए अपना सब कुछ अर्पण कर देने का संकल्प लेना चाहिए। हमारे अस्तित्व की सार्थकता एक महान भारत के निर्माण में ही दिखाई देगी। कन्नड़ा भाषा के माध्यम से भारतीय साहित्य को समृद्ध करने वाले महान राष्ट्रवादी कवि 'कुवेम्पु' ने कहा है-

नानु अलिवे, नीनु अलिवे
नम्मा एलु-बुगल मेले
मुडु-वुदु मुडु-वुदु
नवभारत-द लीले।
अर्थात
'मैं नहीं रहूंगा
न रहोगे तुम
परन्तु हमारी अस्थियों पर
उदित होगी, उदित होगी
नये भारत की महागाथा।'

उस राष्ट्रवादी कवि का यह स्पष्ट आव्हान है कि मातृ-भूमि तथा देशवासियों के उत्थान के लिए सर्वस्व बलिदान करना हमारा आदर्श होना चाहिए। इन आदर्शों को अपनाने के लिए मैं अपने देश के युवाओं से विशेष अनुरोध करती हूं। वे युवा ही 2047 के भारत का निर्माण करेंगे।

अपना सम्बोधन समाप्त करने से पहले मैं भारत के सशस्त्र बलों, विदेशों में स्थित भारतीय मिशनों और अपनी मातृभूमि को गौरवान्वित करने वाले प्रवासी-भारतीयों को स्वाधीनता दिवस की बधाई देती हूं। मैं सभी देशवासियों के सुखद और मंगलमय जीवन के लिए शुभकामनाएं व्यक्त करती हूं। ▪

मुख्यमंत्री एवं प्रदेश संगठन महामंत्री ने स्वाधीनता दिवस पर प्रदेश कार्यालय में किया ध्वजारोहण

मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने स्वाधीनता दिवस पर भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यालय, पं. दीनदयाल परिसर में ध्वजारोहण किया। ध्वजारोहण समारोह में मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने प्रदेशवासियों और पार्टी कार्यकर्ताओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दीं। ध्वजारोहण कार्यक्रम में उपस्थित पार्टी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी। ▪

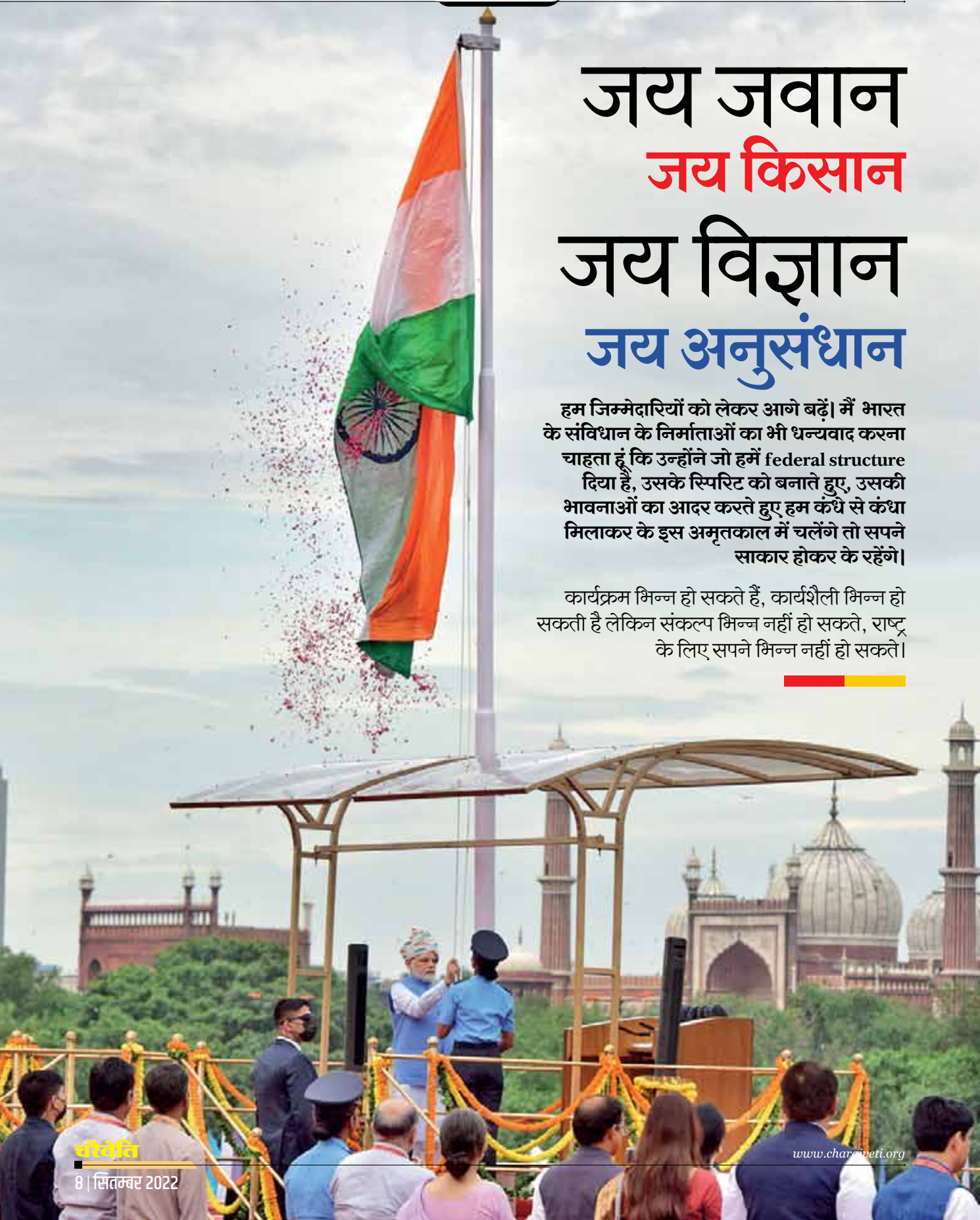

जय जवान
जय किसान
जय विज्ञान
जय अनुसंधान

हम जिम्मेदारियों को लेकर आगे बढ़ें। मैं भारत के संविधान के निर्माताओं का भी धन्यवाद करना चाहता हूं कि उन्होंने जो हमें federal structure दिया है, उसके स्पिरिट को बनाते हुए, उसकी भावनाओं का आदर करते हुए हम कंधे से कंधा मिलाकर के इस अमृतकाल में चलेंगे तो सपने साकार होकर के रहेंगे।

कार्यक्रम भिन्न हो सकते हैं, कार्यशैली भिन्न हो सकती है लेकिन संकल्प भिन्न नहीं हो सकते, राष्ट्र के लिए सपने भिन्न नहीं हो सकते।

आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर देशवासियों को अनेक-अनेक शुभकामनाएं।
बहुत-बहुत बधाई।

न सिर्फ हिन्दुस्तान का हर कोना, लेकिन दुनिया के हर कोने में किसी न किसी रूप में भारतीयों के द्वारा या भारत के प्रति अपार प्रेम रखने वालों के द्वारा विश्व के हर कोने में यह हमारा तिरंगा आन-बान-शान के साथ लहरा रहा है। मैं विश्व भर में फैले हुए भारत प्रेमियों को, भारतीयों को आजादी के इस अमृत महोत्सव की बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

यह दिवस ऐतिहासिक दिवस है। एक पुण्य पड़ाव, एक नई राह, एक नये संकल्प और नये सामर्थ्य के साथ कदम बढ़ाने का यह शुभ अवसर है। आजादी के जंग में गुलामी का पूरा कालंखड संघर्ष में बीता है। हिन्दुस्तान का कोई कोना ऐसा नहीं था, कोई काल ऐसा नहीं था, जब देशवासियों ने सैकड़ों सालों तक गुलामी के खिलाफ जंग न किया हो। जीवन न खपाया हो, यातनाएं न झेली हो, आहूति न दी हो। आज हम सब देशवासियों के लिए ऐसे हर महापुरूष को, हर त्यागी को, हर बलिदानी को नमन करने का अवसर है। उनका ऋण स्वीकार करने का अवसर है और उनका स्मरण करते हुए उनके सपनों को जल्द से जल्द पूरा करने का संकल्प लेने का भी अवसर है। हम सभी देशवासी कृतज्ञ है, पूज्य बापू के, नेता जी सुभाष चंद्र बोस के, बाबा साहेब अम्बेडकर के, वीर सावरकर के, जिन्होंने कर्तव्य पथ पर जीवन को खपा दिया। कर्तव्य पथ ही उनका जीवन पथ रहा। यह देश कृतज्ञ है, मंगल पांडे, तात्या टोपे, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू, चंद्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खां, राम प्रसाद बिस्मिल अनगिनत ऐसे हमारे क्रांति वीरों ने अंग्रेजों की हुकुमत की नींव हिला दी थी। यह राष्ट्र कृतज्ञ है, उन वीरांगनाओं के लिए, रानी लक्ष्मीबाई हो, झलकारी बाई, दुर्गा भाभी, रानी गाइदिन्ल्यू, रानी चेनम्मा, बेगम हजरत महल, वेलु नाच्चियार।
भारत की नारी शक्ति क्या होती है।
भारत की नारी शक्तिका संकल्प क्या होता है।
भारत की नारी त्याग और बलिदान की क्या पराकाष्ठा कर सकती है।

वैसी अनगिनत वीरांगनाओं का स्मरण करते हुए हर हिन्दुस्तानी गर्व से भर जाता है। आजादी का जंग भी लड़ने वाले और आजादी के बाद देश बनाने वाले डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी हों, नेहरू जी हों, सरदार वल्लभ भाई पटेल, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, लाल बहादुर शास्त्री जी, दीनदयाल उपाध्याय, जय प्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया, आचार्य विनोबा भावे, नाना जी देशमुख, सुब्रह्मण्यम भारती, अनगिनत ऐसे महापुरुषों को आज नमन करने का अवसर है।

हम आजादी की जंग की चर्चा करते हैं तो हम उन जंगलों में जीने वाले हमारे आदिवासी समाज का भी गौरव करना हम नहीं भूल सकते हैं। भगवान बिरसा मुंडा, सिद्धू कान्हू , अल्लूरी सीताराम राजू , गोविंद गुरू, अनगिनत नाम हैं जिन्होंने आजादी के आंदोलन की आवाज बनकर के दूर-सुदूर जंगलों में भी.... मेरे आदिवासी भाई-बहनों, मेरी माताओं, मेरे युवकों में मातृभूमि के लिए जीने-मरने के लिए प्रेरणा जगाई। ये देश का सौभाग्य रहा है कि आजादी की जंग के कई रूप रहे हैं और उसमें एक रूप वो भी था जिसमें नारायण गुरू हो, स्वामी विवेकानंद हो, महर्षि अरविंदो हो, गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर हो, ऐसे अनेक महापुरुष हिन्दुस्तान के हर कोने में, हर गांव में भारत की चेतना को जगाते रहे। भारत को चेतन मन बनाते रहे।

अमृत महोत्सव के दौरान देश ने.... पूरे एक साल से हम देख रहे हैं। 2021 में दांढी यात्रा से प्रारंभ हुआ। स्मृति दिवस को संवरते हुए हिन्दुस्तान के हर जिले में, हर कोने में देशवासियों ने आजादी के अमृत महोत्सव के लक्ष्यावृद्धि कार्यक्रम किए। शायद इतिहास में इतना विशाल, व्यापक, लंबा एक ही मकसद का उत्सव मनाया गया हो वो शायद ये पहली घटना हुई है और हिन्दुस्तान के हर कोने में उन सभी महापुरुषों को याद करने का प्रयास किया गया जिनको किसी न किसी कारण वश इतिहास में जगह नहीं मिली या उनको भुला दिया गया था। आज देश ने खोज-खोज करके हर कोने में ऐसे वीरों को, महापुरुषों को, त्यागियों को, बलिदानियों को, सत्यावीरों को याद किया, नमन किया। अमृत महोत्सव के दरम्यिान इन सभी महापुरुषों को नमन करने अवसर रहा।

14 अगस्त को भारत ने विभाजन विभिषिका स्मृति दिवस भी बड़े भारी मन से हृदय के गहरे घावों को याद करते हुए उन कोटि-कोटि जनों ने बहुत कुछ सहन किया था, तिरंगे की शान के लिए सहन किया था। मातृभूमि की मिट्टी से मोहब्बत के कारण सहन किया था और धैर्य नहीं खोया था। भारत के प्रति प्रेम ने नई जिंदगी की शुरूआत करने का उनका संकल्प नमन करने योग्य है, प्रेरणा पाने योग्य है।

आज जब हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं तो पिछले 75 साल में देश के लिए जीने मरने वाले, देश की सुरक्षा करने वाले, देश के संकल्पों को पूरा करने वाले, चाहे सेना के जवान हों, पुलिस के कर्मी हों, शासन में बैठे हुए ब्यूरोक्रेट्स हों, जनप्रतिनिधि हों, स्थानीय स्वराज की संस्थाओं के शासक-प्रशासक रहे हों, राज्यों के शासक-प्रशासक रहे हों, केंद्र के शासक-प्रशासक रहे हों, 75 साल में इन सबके योगदान को भी आज स्मरण करने का अवसर है और देश के कोटि-कोटि नागरिकों को भी, जिन्होंने 75 साल में अनेक प्रकार की कठिनाइयों के बीच भी देश को आगे बढ़ाने के लिए अपने से जो हो सका वो करने का प्रयास किया है।

75 साल की हमारी ये यात्रा अनेक उतार-चढ़ाव से भरी हुई है। सुख-दुख की छाया मंडराती रही है और इसके बीच भी हमारे देशवासियों ने उपलब्धियां की हैं, पुरुषार्थ किया है, हार नहीं मानी है। संकल्पों को ओझल नहीं होने दिया है। और इसलिए, और ये भी सच्चाई है कि सैंकड़ों सालों के गुलामी के कालखंड ने भारत के मन को, भारत के मानवी की भावनाओं को गहरे घाव दिए थे, गहरी चोटें पहुंचाई थीं, लेकिन उसके भीतर एक जिद भी थी, एक जिजीविषा भी थी, एक जुनून भी था, एक जोश भी था। और उसके कारण अभावों के बीच में भी, उपहास के बीच

में भी और जब आजादी की जंग अंतिम चरण में था तो देश को डराने के लिए, निराश करने के लिए, हताश करने के लिए सारे उपाय किए गए थे। अगर आजादी आई अंग्रेज चले जाएंगे तो देश टूट जाएगा, बिखर जाएंगे, लोग अंदर-अंदर लड़ करके मर जाएंगे, कुछ नहीं बचेगा, अंधकार युग में भारत चला जाएगा, न जाने क्या-क्या आशंकाएं व्यक्त की गई थीं। लेकिन उनको पता नहीं था ये हिन्दुस्तान की मिट्टी है, इस मिट्टी में वो सामर्थ्य है जो शासकों से भी परे सामर्थ्य का एक अंतर प्रभाव लेकर जीता रहा है, सदियों तक जीता रहा है और उसी का परिणाम है, हमने क्या कुछ नहीं झेला है, कभी अन्न का संकट झेला, कभी युद्ध के शिकार हो गए।

आंतकवाद ने डगर-डगर चुनौतियां पैदा कीं, निर्दोष नागरिकों को मौत के घाट उतार दिया गया। छद्म युद्ध चलते रहे, प्राकृतिक आपदाएं आती रही, सफलता विफलता, आशा निराशा, न जाने कितने पड़ाव आए हैं। लेकिन इन पड़ाव के बीच भी भारत आगे बढ़ता रहा है। भारत की विविधता जो औरों को भारत के लिए बोझ लगती थी। वो भारत की विविधता ही भारत की अनमोल शक्ति है। शक्ति का एक अटूट प्रमाण है। दुनिया को पता नहीं था कि भारत के पास एक inherent सामर्थ्य है, एक संस्कार सरिता है, एक मन मस्तिष्क का, विचारों का बंधन है। और वो है भारत लोकतंत्र की जननी है, Mother of Democracy है और जिनके जहन में लोकतंत्र होता है वे जब संकल्प कर के चल पड़ते हैं, वो सामर्थ्य दुनिया की बड़ी-बड़ी सल्तनतों के लिए भी संकट का काल लेकर के आती है। ये Mother of Democracy, ये लोकतंत्र की जननी, हमारे भारत ने सिद्ध कर दिया कि हमारे पास एक अनमोल सामर्थ्य है।

75 साल की यात्रा में आशाएं, अपेक्षाएं, उतार -चढ़ाव सब चीज के बीच में हरेक के प्रयास से हम जहां तक पहुंच पाए पहुंचे थे, और 2014 में देशवासियों ने मुझे दायित्व दिया। आजादी के बाद जन्मा हुआ मैं पहला व्यक्ति था जिसको लाल किले से देशवासियों को गौरवगान करने का अवसर मिला था। लेकिन मेरे दिल में जो भी आप लोगों से सीखा हूँ। जितना आप लोगों को जान पाया हूं मेरे देशवासियों, आपके सुख दुख को समझ पाया हूँ। देश की आशा अपेक्षाओं के भीतर वो कौन सी आत्मा बसती है, उसको जितना मैं समझ पाया हूं, उसको लेकर के मैंने अपना पूरा कालखंड देश के उन लोगों को empower करने में खपाया। मेरे दलित हो, शोषित हो, पीड़ित हो, वंचित हो, आदिवासी हो, महिला हो, युवा हो, किसान हो, दिव्यांग हो, पूर्व हो, पश्चिम हो, उत्तर हो, दक्षिण हो, समुद्र का तट हो, हिमालय की कन्दराएँ हो, हर कोने में महात्मा गांधी का जो

सपना था आखिरी इंसान की चिंता करने का, महात्मा गांधी जी की जो आकांक्षा थी अंतिम छोर पर बैठे हुए व्यक्ति को समर्थ बनाने की, मैंने अपने आप को उसके लिए समर्पित किया है, और उन 8 साल का नतीजा और आजादी के इतने दशकों का अनुभव आज 75 साल के बाद जब अमृत काल की ओर कदम रख रहे हैं, अमृत काल की ये पहली प्रभात है तब मैं एक ऐसे सामर्थ्य को देख रहा हूं। और जिससे मैं गर्व से भर जाता हूं।

मैं आज देश का सबसे बड़ा सौभाग्य ये देख रहा हूं कि भारत का जनमन आकांक्षित जनमन है। Aspirational Society किसी भी देश की बहुत बड़ी अमानत होती है। और हमें गर्व है कि आज हिन्दुस्तान के हर कोने में, हर समाज के हर वर्ग में, हर तबके में, आकांक्षाएं उफान पर हैं। देश का हर नागरिक चीजें बदलना चाहता है, बदलते देखना चाहता है, लेकिन इंतजार करने को तैयार नहीं है, अपनी आंखों के सामने देखना चाहता है, कर्तव्य से जुड़ कर करना चाहता है। वो गति चाहता है, प्रगति चाहता है। 75 साल में संजोय हुए सारे सपने अपनी ही आंखों के सामने पूरा करने के लिए वो लालायित है, उत्साहित है, उतावला भी है।

कुछ लोगों को इसके कारण संकट हो सकता है। क्योंकि जब aspirational society होती है तब सरकारों को भी तलवार की धार पर चलना पड़ता है। सरकारों को भी समय के साथ दौड़ना पड़ता है और मुझे विश्वास है चाहे केन्द्र सरकार हो, राज्य सरकार हो, स्थानीय स्वराज्य की संस्थाएं हों, किसी भी प्रकार की शासन व्यवस्था क्यों न हो, हर किसी को इस aspirational society को address करना पड़ेगा, उनकी आकांक्षाओं के लिए हम ज्यादा इंतजार नहीं कर सकते। हमारे इस aspirational society ने लंबे अरसे तक इंतजार किया है। लेकिन अब वो अपनी आने वाली पीढ़ी को इंतजार में जीने के लिए मजबूर करने को तैयार नहीं हैं और इसलिए ये अमृत काल का पहला प्रभात हमें उस aspirational society के आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए बहुत बड़ा सुनहरा अवसर लेकर के आई है।

हमने पिछले दिनों देखा है एक और ताकत का हमने अनुभव किया है और वो है भारत में सामूहिक चेतना पुर्नजागरण हुआ है। एक सामूहिक चेतना का पुर्नजागरण आजादी के इतने संघर्ष में जो अमृत था, वो अब संजोया जा रहा है, संकलित हो रहा है। संकल्प में परिवर्तित हो रहा है, पुरुषार्थ की पराकाष्ठा जुड़ रही है और सिद्धि का मार्ग नजर आ रहा है। ये चेतना, मैं समझता हूं कि चेतना का जागरण ये पुर्नजागरण ये हमारी सबसे बड़ी अमानत है। और ये पुर्नजागरण देखिए 10 अगस्त तक लोगों को पता तक नहीं होगा शायद कि देश के भीतर कौन सी ताकत है। लेकिन पिछले तीन दिन से जिस प्रकार से तिरंगे झंडे को लेकर के तिरंगा की यात्रा को लेकर के देश चल पड़ा है। बड़े-बड़े social science के experts वे भी शायद कल्पना नहीं कर सकते कि मेरे भीतर के अंदर कि मेरे देश के भीतर कितना बड़ा सामर्थ

दिखा दिया है। ये पुर्नचेतना, पुर्नजागरण का पल है। ये लोग समझ नहीं पाएं हैं।

जब देश जनता कर्फ्यू के लिए हिन्दुस्तान का हर कोना निकल पड़ता है, तब उस चेतना की अनुभूति होती है। जब देश ताली, थाली बजाकर के corona warriors के साथ कंधे से कंधा मिलाकर के खड़ा को जाता है, तब चेतना की अनुभूति होती है। जब दीया जलाकर के corona warrior को शुभकामनाएं देने के लिए देश निकल पड़ता है, तब उस चेतना की अनुभूति होती है। दुनिया कोरोना के काल खंड में वैक्सिन लेना या न लेना, वैक्सिन काम की है या नहीं है, उस उलझन में जी रही थी। उस समय मेरे देश के गांव गरीब भी दो सौ करोड़ डोज, दुनिया को चौंका देने वाला काम करके दिखा देते हैं। ये ही चेतना है, ये ही सामर्थ्य है इस सामर्थ्य ने आज देश को नई ताकत दी है।

इस एक महत्वपूर्ण सामर्थ्य को मैं देख रहा हूं जैसे aspirational society, जैसे पुर्नजागरण वैसे ही आजादी के इतने दशकों के बाद पूरे विश्व का भारत की तरफ देखने का नजरिया बदल चुका है। विश्व भारत की तरफ गर्व से देख रहा है, अपेक्षा से देख रहा है। समस्याओं का समाधान भारत की धरती पर दुनिया खोजने लगी है। विश्व का यह बदलाव, विश्व की सोच में यह परिवर्तन 75 साल की हमारी अनुभव यात्रा का परिणाम है।

हम जिस प्रकार से संकल्प को लेकर चल पड़े है दुनिया इसे देख रही है, और आखिरकार विश्व भी उम्मीदें लेकर जी रहा है। उम्मीदें पूरी करने का सामर्थ्य कहां पड़ा है वो उसे दिखने लगा है। मैं इसे स्त्री शक्ति के रूप में देखता हूं। तीन सामर्थ्य के रूप में देखता हूं, और यह त्रि-शक्ति है aspiration की, पुर्नजागरण की और विश्व के उम्मीदों की और इसे पूरा करने के लिए हम जानते हैं दोस्तों आज दुनिया में एक विश्वास जगने में मेरे देशवासियों की बहुत बड़ी भूमिका है। 130 करोड़ देशवासियों ने कई दशकों के अनुभव के बाद स्थिर सरकार का महत्व क्या होता है, राजनीतिक स्थिरता का महत्व क्या होता है, political stability दुनिया में किस प्रकार की ताकत दिखा सकती है।

नीतियों में कैसा सामर्थ्य होता है, उन नीतियों पर विश्व का कैसे भरोसा बनता है। यह भारत ने दिखाया है और दुनिया भी इसे समझ रही है। और अब जब राजनीतिक स्थिरता हो, नीतियों में गतिशीलता हो, निर्णयों में तेजी हो, सर्वव्यापकता हो, सर्वसमाज विश्वस्ता हो, तो विकास के लिए हर कोई भागीदार बनता है। हमने सबका साथ, सबका विकास का मंत्र लेकर हम चले थे, लेकिन देखते ही देखते देशवासियों ने सबका विश्वास और सबके प्रयास से उसमें और रंग भर दिए हैं। और इसलिए हमने देखा है हमारी सामूहिक शक्ति को, हमारे सामूहिक सामर्थ्य को हमने देखा है। आजादी का अमृत महोत्सव जिस प्रकार से मनाया गया, जिस प्रकार से आज हर जिले में 75 अमृत सरोवर बनाने का अभियान चल रहा है, गांव-गांव के लोग जुड़ रहे हैं, कार्य सेवा कर रहे हैं। अपने प्रयत्नों से अपने गांव में जल संरक्षण के लिए बड़ा अभियान चला रहे हैं। और इसलिए भाईयों-बहनों, चाहे स्वच्छता का अभियान हो, चाहे गरीबों के कल्याण का काम हो, देश आज पूरी शक्ति से आगे बढ़ रहा है।

लेकिन भाईयों-बहनों हम लोग आजादी के अमृतकाल में हमारी 75 साल की यात्रा को उसका गौरवगान ही करते रहेंगे, अपनी ही पीठ थपथपाते रहेंगे, तो हमारे सपने कहीं दूर चले जाएंगे। और इसलिए 75 साल का कालखंड कितना ही शानदार रहा हो, कितने ही संकटों वाला रहा हो, कितने ही चुनौतियों वाला रहा हो, कितने ही सपने अधूरे दिखते हो उसके बावजूद भी आज जब हम अमृतकाल में प्रवेश कर रहे हैं अगले 25 वर्ष हमारे देश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसलिए जब मैं आज मेरे सामने लाल किले पर से 130 करोड़ देशवासियों के सामर्थ्य का स्मरण करता हूँ, उनके सपनों को देखता हूँ, उनके संकल्प की अनुभूति करता हूं तो साथियों मुझे लगता है आने वाले 25 साल के लिए हमें उन पंचप्रण पर अपनी शक्ति को केंद्रित करना होगा। अपने संकल्पों को केंद्रित करना होगा। अपने सामर्थ्य को केंद्रित करना होगा। और हमें उन पंचप्रण को लेकर के, 2047 जब आजादी के 100 साल होंगे आजादी के दिवानों के सारे सपने पूरे करने का जिम्मा उठा करके चलना होगा।

जब मैं पंचप्रण की बात करता हूं तो-

पहला प्रण - अब देश बड़े संकल्प लेकर ही चलेगा। बहुत बड़े संकल्प लेकर के चलना होगा। और वो बड़ा संकल्प है विकसित भारत, अब उससे कुछ कम नहीं होना चाहिए।

बड़ा संकल्प- दूसरा प्रण - किसी भी कोने में हमारे मन के भीतर, हमारी आदतों के भीतर गुलामी का एक भी अंश अगर अभी भी कोई है तो उसको किसी भी हालत में बचने नहीं देना है। अब शत-प्रतिशत, शत-प्रतिशत सैंकड़ों साल की गुलामी ने जहां हमें जकड़ कर रखा है, हमें हमारे मनोभाव को बांध करके रखा हुआ है, हमारी सोच में विकृतियां पैदा करके रखी हैं। हमें गुलामी की छोटी से छोटी चीज भी कहीं नजर आती है, हमारे भीतर नजर आती है, हमारे आस-पास नजर आती है हमें उससे मुक्ति पानी ही होगी। ये हमारी दूसरी प्रण शक्ति है।

तीसरी प्रण शक्ति- हमें हमारी विरासत पर गर्व होना चाहिए, हमारी विरासत के प्रति क्योंकि यही विरासत है जिसने कभी भारत को स्वर्णिम काल दिया था। और यही विरासत है जो समयानुकूल परिवर्तन करने की आदत रखती है। यही विरासत है जो काल-बाह्य छोड़ती रही है। नित्य नूतन स्वीकारती रही है। और इसलिए इस विरासत के प्रति हमें गर्व होना चाहिए।

चौथा प्रण - वो भी उतना ही महत्वपूर्ण है और वो है एकता और एकजुटता। 130 करोड़ देशवासियों में एकता, न कोई अपना न कोई पराया, एकता की ताकत, 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के सपनों के लिए हमारा चौथा प्रण है। और

पांचवां प्रण - पांचवां प्रण है नागरिकों का कर्तव्य, नागरिकों का कर्तव्य, जिसमें प्रधानमंत्री भी बाहर नहीं होता, मुख्यमंत्री भी बाहर नहीं होता वो भी नागरिक है। नागरिकों का कर्तव्य। ये हमारे आने वाले 25 साल के सपनों को पूरा करने के लिए एक बहुत बड़ी प्रण शक्ति है।

जब सपने बड़े होते हैं, जब संकल्प बड़े होते हैं तो पुरुषार्थ भी बहुत बड़ा होता है। शक्ति भी बहुत बड़ी मात्रा में जुड़ जाती है। अब कोई कल्पना कर सकता है कि देश उस 40-42 के काल खंड को याद कीजिए, देश उठ खड़ा हुआ था। किसी ने हाथ में झाड़ू लिया था, किसी ने तकली ली थी, किसी ने सत्याग्रह का मार्ग चुना था, किसी ने संघर्ष का मार्ग चुना था, किसी ने काल क्रांति की वीरता का रास्ता चुना था। लेकिन संकल्प बड़ा था 'आजादी' और ताकत देखिए बड़ा संकल्प था तो आजादी लेकर रहे। हम आजाद हो गये। अगर संकल्प छोटा होता, सीमित होता तो शायद आज भी संघर्ष करने के दिन चालू रहते, लेकिन संकल्प बड़ा था, तो हमने हासिल भी किया।

अब आज जब अमृत काल की पहली प्रभात है, तो हमें इन पच्चीस साल में विकसित भारत बना कर रहना है। अपनी आंखों के सामने और 20-22-25 साल के मेरे नौजवान, मेरे देश के मेरे सामने है, मेरे देश के नौजवानों जब देश आजादी के 100 साल मनाएगा। तब आप 50-55 के हुए होंगे, मतलब आपके जीवन का ये स्वर्णिम काल, आपकी उम्र के ये 25-30 साल भारत के सपनों को पूरा करने का काल है। आप संकल्प ले करके मेरे साथ चल पड़िए साथियों, तिरंगे झंडे की शपथ ले करके चल पड़िए, हम सब पूरी ताकत से लग जाएं। महासंकल्प, मेरा देश विकसित देश होगा, developed country होगा, विकास के हरेक पैरामीटर में हम मानव केंद्रीत व्यवस्था को विकसित करेंगे, हमारे केंद्र में मानव होगा, हमारे केंद्र के मानव की आशा-आकांक्षाएं होंगी। हम जानते हैं, भारत जब बड़े संकल्प करता है तो करके भी दिखाता है।

जब मैंने यहां स्वच्छता की बात कही थी मेरे पहले भाषण में, देश चल पड़ा है, जिससे जहां हो सका, स्वच्छता की ओर आगे बढ़ा और गंदगी के प्रति नफरत एक स्वभाव बनता गया है। यही तो देश है, जिसने इसको करके दिखाया है और कर भी रहा है, आगे भी कर रहा है, यही तो देश है, जिसने वैक्सीनेशन, दुनिया दुविधा में थी, 200 करोड़ का लक्ष्य पार कर लिया है, समय-सीमा में कर लिया है, पुराने सारे रिकॉर्ड तोड़ करके कर लिया है, ये देश कर सकता है। हमने तय किया था देश को खाड़ी के तेल पर हम गुजारा करते हैं, झाड़ी के तेल की ओर कैसे बढ़ें, 10 प्रतिशत इथेनॉल ब्लेडिंग का सपना बड़ा लगता था। पुराना इतिहास बताता था संभव नहीं है, लेकिन समय से पहले 10 प्रतिशत इथेनॉल ब्लेडिंग करके देश ने इस सपने को पूरा कर दिया है।

ढाई करोड़ लोगों को इतने कम समय में बिजली कनेक्शन पहुंचाना, छोटा काम नहीं था, देश ने करके दिखाया। लाखों परिवारों के घर में 'नल से जल' पहुंचाने का काम आज देश तेज गति से कर रहा है। खुले में शौच से मुक्ति, भारत के अंदर आज संभव हो पाया है।

अनुभव कहता है कि एक बार हम सब संकल्प ले करके चल पड़ें तो हम निर्धारित लक्ष्यों को पार कर सकते हैं। Renewable energy का लक्ष्य हो, देश में नए मेडिकल कॉलेज बनाने का इरादा हो, डॉक्टरों की तैयारी करवानी हो, हर क्षेत्र में पहले से गति बहुत बढ़ी है। और इसलिए मैं कहता हूँ अब आने वाले 25 साल बड़े संकल्प के हों, यही हमारा प्रण, यही हमारा प्रण भी होना चाहिए।

दूसरी बात मैंने कही है, उस प्रण शक्ति की मैंने चर्चा की है कि गुलामी की मानसिकता, देश की सोच सोचिए भाइयो, कब तक दुनिया हमें

सर्टिफिकेट बांटती रहेगी? कब तक दुनिया के सर्टिफिकेट पर हम गुजारा करेंगे? क्या हम अपने मानक नहीं बनाएंगे? क्या 130 करोड़ का देश अपने मानकों को पार करने के लिए पुरुषार्थ नहीं कर सकता है। हमें किसी भी हालत में औरों के जैसा दिखने की कोशिश करने की जरूरत नहीं है। हम जैसे हैं वैसे, लेकिन सामर्थ्य के साथ खड़े होंगे, ये हमारा मिजाज होना चाहिए। हमें गुलामी से मुक्ति चाहिए। हमारे मन के भीतर दूर-दूर सात समंदर के नीचे भी गुलामी का तत्व नहीं बचे रहना चाहिए साथियों। और मैं आशा से देखता हूँ, जिस प्रकार से नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनी है, जिस मंथन के साथ बनी है, कोटि-कोटि लोगों के विचार-प्रवाह को संकलित करते हुए बनी है और भारत की धरती की जमीन से जुड़ी हुई शिक्षा नीति बनी है, रसकस हमारी धरती के मिले हैं। हमने जो कौशल्य पर बल दिया है, ये एक ऐसा सामर्थ्य है, जो हमें गुलामी से मुक्ति की ताकत देगा।

हमने देखा है कभी-कभी तो हमारा टेलेंट भाषा के बंधनों में बंध जाता है, ये गुलामी की मानसिकता का परिणाम है। हमें हमारे देश की हर भाषा पर गर्व होना चाहिए। हमें भाषा आती हो या न आती हो, लेकिन मेरे देश की भाषा है, मेरे पूर्वजों ने दुनिया को दी हुई ये भाषा है, हमें गर्व होना चाहिए।

आज डिजिटल इंडिया का रूप हम देख रहे हैं। स्टार्ट अप देख रहे हैं। कौन लोग हैं? ये वो टैलेंट है जो टीयर-2, टीयर-3 सीटी में किसी गांव गरीब के परिवार में बसे हुए लोग हैं। ये हमारे नौजवान हैं जो आज नई-नई खोज के साथ दुनिया के सामने आ रहे हैं। गुलामी की मानसिकता हमें उसे तिलांजलि देनी पड़ेगी। अपने सामर्थ्य पर भरोसा करने होगा।

दूसरी एक बात जो मैंने कही है, तीसरी मेरी प्रणशक्ति की बात है वो है हमारी विरासत पर। हमें गर्व होना चाहिए। जब हम अपनी धरती से जुड़ेंगे, तभी तो ऊंचा उड़ेंगे, और जब हम ऊंचा उड़ेंगे तो हम विश्व को भी समाधान दे पाएंगे। हमने देखा है जब हम अपनी चीजों पर गर्व करते हैं। आज दुनिया holistic health care की चर्चा कर रही है लेकिन जब holistic health care की चर्चा करती है तो उसकी नजर भारत के योग पर जाती है, भारत के आयुर्वेद पर जाती है, भारत के holistic lifestyle पर जाती है। ये हमारी विरासत है जो हम दुनिया को दे रहे हैं। दुनिया आज उससे प्रभावित हो रही है। अब हमारी ताकत देखिए। हम वो लोग हैं जो प्रकृति के साथ जीना जानते हैं। प्रकृति को प्रेम करना जानते हैं। आज विश्व पर्यावरण की जो समस्या से जूझ रहा है। हमारे पास वो विरासत है, ग्लोबल वार्मिंग की समस्याओं के समाधान का रास्ता हम लोगों के पास है। हमारे पूर्वजों ने दिया हुआ है।

जब हम lifestyle की बात करते हैं, environment friendly lifestyle की बात करते हैं, हम life mission की बात करते हैं तो दुनिया का ध्यान आकर्षित करते हैं। हमारे पास ये सामर्थ्य है। हमारा बड़ा धान मोटा धान मिलेट, हमारे यहां तो घर-घर की चीज रही है। ये हमारी विरासत है, हमारे छोटे किसानों के परिश्रम से छोटी-छोटी जमीन के टुकड़ों में फलने फूलने वाली हमारी धान। आज दुनिया अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर millet year मनाने के लिए आगे बढ़ रही है। मतलब हमारी विरासत को आज दुनिया, हम उस पर गर्व करना सीखें। हमारे पास दुनिया को बहुत कुछ देने को है। हमारे family values विश्व के सामाजिक तनाव की जब चर्चा हो रही है। व्यक्तिगत तनाव की चर्चा होती है, तो लोगों को योग दिखता है। सामूहिक तनाव की बात होती है तब भारत की पारिवारिक व्यवस्था दिखती है। संयुक्त परिवार की एक पूंजी सदियों से

हमारी माताओं-बहनों के त्याग बलिदान के कारण परिवार नाम की जो व्यवस्था विकसित हुई ये हमारी विरासत है। इस विरासत पर हम गर्व कैसे करें। हम तो वो लोग हैं जो जीव में भी शिव देखते हैं। हम वो लोग हैं जो नर में नारायण देखते हैं। हम वो लोग हैं जो नारी को नारायणी कहते हैं। हम वो लोग हैं जो पौधे में परमात्मा देखते हैं। हम वो लोग हैं जो नदी को मां मानते हैं। हम वो लोग हैं जो हर कंकर में शंकर देखते हैं। ये हमारा सामर्थ्य है हर नदी में मां का रूप देखते हैं। पर्यावरण की इतनी व्यापकता विशालता ये हमारा गौरव जब विश्व के सामने खुद गर्व करेंगे तो दुनिया करेगी।

हम वो लोग हैं जिसने दुनिया को वसुधैव कुटुम्बकम् का मंत्र दिया है। हम वो लोग हैं जो दुनिया को कहते हैं 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति।' आज जो 'holier than thou' का संकट जो चल रहा है, तुझसे बड़ा मैं हूँ, ये जो तनाव का कारण बना हुआ है दुनिया को एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति का ज्ञान देने वाली विरासत हमारे पास है। जो कहते हैं सत्य एक है जानकार लोग उसको अलग-अलग तरीके से कहते हैं। यह गौरव हमारा है। हम लोग हैं, जो कहते हैं यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे, कितनी बड़ी सोच है, जो ब्रह्माण्ड में है वो हर जीव मात्र में है। यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे, यह कहने वाले हम लोग हैं। हम वो लोग हैं जिसने दुनिया का कल्याण देखा है, हम जग कल्याण से जन कल्याण के राही रहे हैं। जन कल्याण से जग कल्याण की राह पर चलने वाले हम लोग जब दुनिया की कामना करते हैं, तब कहते हैं- सर्वे भवन्तु सुखिनः। सर्वे सन्तु निरामयाः। सबके सुख की बात सबके आरोग्य की बात करना यह हमारी विरासत है। और इसलिए हम बड़ी शान के साथ हमारी इस विरासत का गर्व करना सीखे, यह प्रण शक्ति है हमारी, जो हमें 25 साल के सपने पूरा करने के लिए जरुरी है।

एक और महत्वपूर्ण विषय है एकता, एकजुटता। इतने बड़े देश को उसकी विविधता को हमें सेलिब्रेट करना है, इतने पंथ और परंपराएं यह हमारी आन-बान-शान है। कोई नीचा नहीं, कोई ऊंचा नहीं है, सब बराबर हैं। कोई मेरा नहीं, कोई पराया नहीं सब अपने हैं। यह भाव एकता के लिए बहुत जरुरी है। घर में भी एकता की नींव तभी रखी जाती है जब बेटा-बेटी एकसमान हो। अगर बेटा-बेटी एक समान नहीं होंगे तो एकता के मंत्र नहीं गुथ सकते हैं। जेंडर इक्वैलिटी हमारी एकता में पहली शर्त है। जब हम एकता की बात करते हैं, अगर हमारे यहां एक ही पैरामीटर हो एक ही मानदंड हो, जिस मानदंड को हम कहे इंडिया फर्स्ट मैं जो कुछ भी कर रहा हूँ , जो भी सोच रहा हूँ , जो भी बोल रहा हूँ इंडिया फर्स्ट के अनुकूल है। एकता का रास्ता खुल जाएगा दोस्त। हमें एकता से बांधने का वो मंत्र है, हमें इसको पकड़ना है। मुझे पूरा विश्वास है, कि हम समाज के अंदर ऊंच-नीच के भेदभावों से मेरे-तेरे के भेदभावों से हम सबकी पुजारी बनें। श्रमेव जयते कहते हैं हम श्रमिक का सम्मान यह हमारा स्वभाव होना चाहिए।

मैं लाल किले से मेरी एक पीड़ा और कहना चाहता हूँ, यह दर्द मैं कहे बिना नहीं रह सकता। मैं जानता हूँ कि शायद यह लाल किले का विषय नहीं हो सकता। लेकिन मेरे भीतर का दर्द मैं कहाँ कहूँगा। देशवासियों के सामने नहीं कहूँगा तो कहाँ कहूंगा और वो है किसी न किसी कारण से हमारे अंदर एक ऐसी विकृति आयी है, हमारी बोलचाल में, हमारे व्यवहार में, हमारे कुछ शब्दों में हम नारी का अपमान करते हैं। क्या हम स्वभाव से, संस्कार से, रोजमर्रा की जिंदगी में नारी को अपमानित करने वाली हर बात से मुक्ति का संकल्प ले सकते हैं। नारी का गौरव राष्ट्र के सपने पूरे करने में बहुत बड़ी पूंजी बनने वाला है। यह सामर्थ्य मैं देख रहा हूँ और इसलिए मैं इस बात का आग्रही हूँ।

मैं पांचवीं प्रणशक्ति की बात करता हूँ। और वो पांचवीं प्रणशक्ति है-नागरिक का कर्तव्य।

दुनिया में जिन-जिन देशों ने प्रगति की है, जिन-जिन देशों ने कुछ achieve किया है। व्यक्तिगत जीवन में भी जिसने achieve किया है। कुछ बातें उभर करके सामने आती है। एक अनुशासित जीवन, दूसरा कर्तव्य के प्रति समर्पण व्यक्ति के जीवन की सफलता हो, समाज की हो, परिवार की हो, राष्ट्र की हो, यह मूलभूत मार्ग है। यह मूलभूत प्रणशक्ति है और इसलिए हमें कर्तव्य पर बल देना ही होगा। यह शासन का काम है कि बिजली 24 घंटे पहुंचाने के लिए प्रयास करे, लेकिन यह नागरिक का कर्तव्य है कि जितनी ज्यादा यूनिट बिजली बचा सकते है बचाएं। हर खेत में पानी पहुंचाना सरकार की जिम्मेदारी है, सरकार का प्रयास है, लेकिन 'per drop more crop' पानी बचाते हुए आगे बढ़ना मेरे हर खेत से आवाज उठनी चाहिए। केमिकल मुक्त खेती, ऑर्गेनिक फार्मिंग, प्राकृतिक खेती यह हमारा कर्तव्य है।

चाहे पुलिस हो, या पीपुल हो, शासक हो या प्रशासक हो, यह नागरिक कर्तव्य से कोई अछूता नहीं हो सकता। हर कोई अगर नागरिक के कर्तव्यों को निभाएगा तो मुझे विश्वास है कि हम इच्छित लक्ष्य को प्राप्त करने में समय से पहले सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

आज महर्षि अरबिंदों की जन्म जयंती भी है। मैं उस महापुरूष के चरणों में नमन करता हूं। लेकिन हमें उस महापुरूष को याद करना होगा जिन्होंने कहा था स्वदेशी से स्वराज, स्वराज से सुराज। यह उनका मंत्र है हम सबको सोचना होगा कि हम कब तक दुनिया के और लोगों पर निर्भर रहेंगे। क्या हमारे देश को अन्न की आवश्यकता

हो, हम out source कर सकते हैं क्या? जब देश ने तय कर लिया कि हमारा पेट हम खुद भरेंगे, देश ने करके दिखाया या नहीं दिखाया, एक बार संकल्प लेते हैं तो होता है। और इसलिए आत्मनिर्भर भारत यह हर नागरिक का, हर सरकार का, समाज की हर इकाई का यह दायित्व बन जाता है। यह आत्मनिर्भर भारत यह सरकारी एजेंडा, सरकारी कार्यक्रम नहीं है। यह समाज का जन आंदोलन है, जिसे हमें आगे बढ़ाना है।

आज जब हमने यह बात सुनी, आजादी के 75 साल के बाद जिस आवाज को सुनने के लिए हमारे कान तरस रहे थे, 75 साल के बाद वो आवाज सुनाई दी है। 75 साल के बाद लाल किले पर से तिरंगे को सलामी देने का काम पहली बार Made In India तोप ने किया है। कौन हिन्दुस्तानी होगा, जिसको यह बात, यह आवाज उसे नई प्रेरणा, ताकत नहीं देगी। और इसलिए मेरे प्यारे भाई-बहनों में आज मेरे देश के सेना के जवानों का हृदय से अभिनंदन करना चाहता हूं। मेरी आत्मनिर्भर की बात को संगठित स्वरूप में, साहस के स्वरूप में मेरी सेना के जवानों ने सेना नायकों ने जिस जिम्मेदारी के साथ कंधे पर उठाया है। मैं उनको जितना salute करूं, उतनी कम है दोस्तों। उनको आज मैं सलाम करता हूं। क्योंकि सेना का जवान मौत को मुट्ठी में ले करके चलता है। मौत और जिंदगी के बीच में कोई फासला ही नहीं होता है, और तब बीच में वो डट करके खड़ा होता है। और वो मेरे सेना का जवान तय करे कि हम तीन सौ ऐसी चीजें अब list करते हैं जो हम विदेश से नहीं लाएंगे। हमारे देश का यह संकल्प छोटा नहीं है।

मुझे इस संकल्प में भारत के 'आत्मनिर्भर' भारत के उज्जवल भविष्य के वो बीज मैं देख रहा हूं जो इस सपनों को वट वृक्ष में परिवर्तित करने वाले हैं। Salute! Salute! मेरे सेना के अधिकारियों को Salute. मैं मेरे छोटे छोटे बालकों को 5 साल 7 साल की आयु के बालक, उनको भी Salute करना चाहता हूं। उनको भी सलाम करना चाहता हूं। जब देश के सामने चेतना जगी, मैंने सैंकड़ों परिवारों से सुना है, 5-5, 7 साल के बच्चे घर में कह रहें हैं कि अब हम विदेशी खिलौने से नहीं खेलेंगे। 5 साल का बच्चा घर में विदेशी खिलौने से नहीं खेलेंगे, ये जब संकल्प करता है ना तब आत्मनिर्भर भारत उसकी रगों में दौड़ता है। आप देखिए पीएलआई स्कीम, एक लाख करोड़ रुपया, दुनिया के लोग हिन्दुस्तान में अपना नसीब आजमाने आ रहे हैं। टेक्नोलॉजी लेकर के आ रहे हैं। रोजगार के नये अवसर बना रहे हैं। भारत मैन्यूफैक्चरिंग हब बनता जा रहा है। आत्मनिर्भर भारत कि बुनियाद बना रहा है। आज electronic goods manufacturing हो, मोबाइल फोन का manufacturing हो, आज देश बहुत तेजी से प्रगति कर रहा है। जब हमारा ब्रह्मोस दुनिया में जाता है, कौन हिन्दुस्तानी होगा जिसका मन आसमान को न छूता होगा दोस्तों। आज हमारी मेट्रो coaches हमारी वंदे भारत ट्रेन विश्व के लिए आकर्षण बन रहा है।

हमें आत्मनिर्भर बनना है, हमारे एनर्जी सेक्टर में। हम कब तक एनर्जी के सेक्टर में किसी और पर dependent रहेंगे और हमें सोलार का क्षेत्र हो, विंड एनर्जी का क्षेत्र हो, रिन्यूएबल के और भी जो रास्ते हों, मिशन हाइड्रोजन हो, बायो फ्यूल की कोशिश हो, electric vehicle पर जाने की बात हो, हमें आत्मनिर्भर बनकर के इन व्यवस्थाओं को आगे बढ़ाना होगा।

आज प्राकृतिक खेती भी आत्मनिर्भर का एक मार्ग है। फर्टीलाइजर से जितनी ज्यादा मुक्ति, आज देश में नेनो फर्टीलाइजर के कारखाने एक नई आशा लेकर के आए हैं। लेकिन प्राकृतिक खेती, केमिकल फ्री खेती आत्मनिर्भर को ताकत दे सकती है। आज देश में रोजगार के क्षेत्र में ग्रीन जॉब के नए-नए क्षेत्र बहुत तेजी से खुल रहे हैं। भारत ने नीतियों के द्वारा 'स्पेस' को खोल दिया है। ड्रोन की बहुत दुनिया में सबसे प्रगतिशील पॉलिसी लेकर के आए हैं। हमने देश के नौजवानों के लिए नए द्वार खोल दिए हैं।

मैं प्राइवेट सेक्टर को भी आव्हान करता हूं आइए... हमें विश्व में छा जाना है। आत्मनिर्भर भारत का ये भी सपना है कि दुनिया को भी जो आवश्यकताए हैं उसको पूरा करने में भारत पीछे नहीं रहेगा। हमारे लघु उद्योग हो, सूक्ष्म उद्योग हो, कुटीर उद्योग हो, 'जीरो डिफेक्ट जीरो इफेक्ट' हमें करके दुनिया में जाना होगा। हमें स्वदेशी पर गर्व करना होगा।

हम बार-बार लाल बहादुर शास्त्री जी को याद करते हैं, जय जवान-जय किसान का उनका मंत्र आज भी देश के लिए प्रेरणा है। बाद में अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जय विज्ञान कह करके उसमें एक कड़ी जोड़ दी थी और देश ने उसको प्राथमिकता दी थी। लेकिन अब अमृतकाल के लिए एक और अनिवार्यता है और वो है जय अनुसंधान। **जय जवान-जय किसान-जय विज्ञान-जय अनुसंधान**- इनोवेशन। और मुझे मेरे देश की युवा पीढ़ी पर भरोसा है। इनोवेशन की ताकत देखिए, आज हमारा यूपीआई-भीम, हमारा डिजिटल पेमेंट, फिनटेक की दुनिया में हमारा स्थान, आज विश्व में रियल टाइम 40 पर्सेंट अगर डिजिटली फाइनेंशियल का ट्रांजेक्शन होता है तो मेरे देश में हो रहा है, हिन्दुस्तान ने ये करके दिखाया है।

अब हम 5जी के दौर की ओर कदम रख रहे हैं। बहुत दूर इंतजार नहीं करना होगा, हम कदम मिलाने वाले हैं। हम ऑप्टिकल फाइबर गांव-गांव में पहुंचा रहे हैं। डिजिटल इंडिया का सपना गांव से गुजरेगा, ये मुझे पूरी जानकारी है। आज मुझे खुशी है हिन्दुस्तान के चार लाख कॉमन सर्विस सेंटर्स गांवों में विकसित हो रहे हैं। गांव के नौजवान बेटे-बेटियां कॉमन सर्विस सेंटर चला रहे हैं। देश गर्व कर सकता है कि गांव के क्षेत्र में चार लाख Digital Entrepreneur का तैयार होना और सारी सेवाएं लोग गांव के लोग उनके यहां लेने के लिए आदी बन जाएं, ये अपने-आप में टेक्नोलॉजी हब बनने की भारत की ताकत है।

ये जो डिजिटल इंडिया का मूवमेंट है, जो सेमीकंडक्टर की ओर हम कदम बढ़ा रहे हैं, 5जी की ओर कदम बढ़ा रहे हैं, ऑप्टिकल फाइबर का नेटवर्क बिछा रहे हैं, ये सिर्फ आधुनिकता की पहचान है, ऐसा नहीं है। तीन बड़ी ताकतें इसके अंदर समाहित हैं। शिक्षा में आमूल-चूल क्रांति- ये डिजिटल माध्यम से आने वाली है। स्वास्थ्य सेवाओं में आमूल-चूल क्रांति डिजिटल से आने वाली है। कृषि जीवन में भी बहुत बड़ा बदलाव डिजिटल से आने वाला है। एक नया विश्व तैयार हो रहा है। भारत उसे बढ़ाने के लिए और मैं साफ देख रहा हूं दोस्तों ये Decade, मानव जाति के लिए tecahade का समय है, टेक्नोलॉजी का Decade है। भारत के लिए तो ये tecahade, जिसका मन टेक्नोलॉजी से जुड़ा हुआ है। आईटी की दुनिया में भारत ने अपना एक लोहा मनवा लिया है, ये tecahade का सामर्थ्य भारत के पास है।

हमारा अटल इनोवेशन मिशन, हमारे incubation centre, हमारे स्टार्टअप एक नया, पूरे क्षेत्र का विकास कर रहे हैं, युवा पीढ़ी के लिए नए अवसर ले करके आ रहे हैं। स्पेस मिशन की बात हो, हमारे Deep Ocean Mission की बात हो, समंदर की गहराई में जाना हो या हमें आसमान को छूना हो, ये नए क्षेत्र हैं, जिसको ले करके हम आगे बढ़ रहे हैं।

हम इस बात को न भूलें और भारत ने सदियों से देखा हुआ है, जैसे देश में कुछ नमूना रूप कामों की जरूरत होती है, कुछ बड़ी-बड़ी ऊंचाइयों की जरूरत होती है, लेकिन साथ-साथ धरातल पर मजबूती बहुत आवश्यक होती है। भारत की आर्थिक विकास की संभावनाएं धरातल की मजबूती से जुड़ी हुई हैं। और इसलिए हमारे छोटे किसान-उनका सामर्थ्य, हमारे छोटे उद्यमी-उनका सामर्थ्य, हमारे लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, सूक्ष्म उद्योग, रेहड़ी-पटरी वाले लोग, घरों में काम करने वाले लोग, ऑटो रिक्शा चलाने वाले लोग, बस सेवाएं देने वाले लोग, ये समाज का जो सबसे बड़ा तबका है, इसका सामर्थ्यवान होना भारत के सामर्थ्य की गारंटी है और इसलिए हमारे आर्थिक विकास की ये जो मूलभूत जमीनी ताकत है, उस ताकत को सर्वाधिक बल देने की दिशा में हमारा प्रयास चल रहा है।

हमारे पास 75 साल का अनुभव है, हमने 75 साल में कई सिद्धियां भी प्राप्त की हैं। हमने 75 साल के अनुभव में नए सपने भी संजोए हैं, नए संकल्प भी लिए हैं। लेकिन अमृत काल के लिए हमारे मानव संसाधन का आप्टिमम आउटकम कैसे हो? हमारी प्राकृतिक संपदा का आप्टिमम आउटकम कैसे हो? इस लक्ष्य को लेकर के हमें चलना है। और तब मैं पिछले कुछ सालों के अनुभव से कहना चाहता हूँ। आपने देखा होगा, आज अदालत के अंदर देखिए हमारी वकील के क्षेत्र में काम करने वाली हमारी नारी शक्ति किस ताकत के साथ नजर आ रही है। आप ग्रामीण क्षेत्र में जनप्रतिनिधि के रूप में देखिए। हमारी नारी शक्ति किस मिजाज से समर्पित भाव से अपनी गांवों की समस्याओं को सुलझाने में लगी हुई हैं। आज ज्ञान का क्षेत्र देख लीजिए, विज्ञान का क्षेत्र देख लीजिए, हमारे देश की नारी शक्ति सिरमौर नजर आ रही है।

आज हम पुलिस में देखें, हमारी नारी शक्ति लोगों की सुरक्षा की जिम्मेदारी उठा रही है। हम जीवन के हर क्षेत्र में देखें, खेल-कूद का मैदान देखें या युद्ध की भूमि देखें, भारत की नारी शक्ति एक नए सामर्थ्य, नए विश्वास के साथ आगे आ रही है। मैं इसको भारत की 75 साल की जो यात्रा में जो योगदान है, उसमें अब कई गुना योगदान आने वाले 25 साल मैं मेरी नारी शक्ति का देख रहा हूं, मेरी माताओं-बहनों का मेरी बेटियों का देख रहा हूं, और इसलिए ये सारे हिसाब-किताब से ऊपर है। सारे आपके पैरामीटर से अतिरिक्त है। हम इस पर जितना ध्यान देंगे, हम जितने ज्यादा अवसर हमारी बेटियों को देंगे, जितनी सुविधाएं हमारी बेटियों के लिए केंद्रित करेंगे, आप देखना वो हमें बहुत कुछ लौटाकर करके देंगी। वो देश को इस ऊंचाई पर ले जाएगी। इस अमृत काल में जो सपने पूरे करने में जो मेहनत लगने वाली है, अगर उसमें हमारी नारी शक्ति की मेहनत जुड़ जाएगी, व्यापक रूप से जुड़ जाएगी तो हमारी मेहनत कम होगी हमारा समय सीमा भी कम हो जाएगा, हमारे सपने और तेजस्वी होंगे, और ओजस्वी होंगे, और दैदीप्यमान होंगे और इसलिए आइये हम जिम्मेदारियों को लेकर आगे बढ़ें। मैं आज भारत के संविधान के निर्माताओं का भी धन्यवाद करना चाहता हूं कि उन्होंने जो हमें federal structure दिया है, उसके स्पिरिट को बनाते हुए, उसकी भावनाओं का आदर करते हुए हम कंधे से कंधा मिलाकर के इस अमृतकाल में चलेंगे तो सपने साकार होकर के रहेंगे। कार्यक्रम भिन्न हो सकते हैं, कार्यशैली भिन्न हो सकती है लेकिन संकल्प भिन्न नहीं हो सकते, राष्ट्र के लिए सपने भिन्न नहीं हो सकते।

आइए हम एक ऐसे युग के अंदर आगे बढ़ें। मुझे याद है जब मैं गुजरात का मुख्यमंत्री था। केंद्र में हमारे विचार की सरकार नहीं थी, लेकिन मेरे गुजरात में हर जगह पर मैं एक ही मंत्र ले के चलता था कि भारत के विकास के लिए गुजरात का विकास। भारत का विकास हम कहीं पर भी हों, हम सबके मन मस्तिष्क में रहना चाहिए। हमारे देश के कई राज्य हैं, जिन्होंने देश को आगे बढ़ाने में बहुत भूमिका अदा की है, नेतृत्व किया है, कई क्षेत्रों में उदाहरणीय काम किए हैं। ये हमारे federalism को ताकत देते हैं। लेकिन आज समय की मांग है कि हमें cooperative federalism के साथ-साथ cooperative competitive federalism की जरूरत है, हमें विकास की स्पर्धा की जरूरत है।

हर राज्य को लगना चाहिए कि वो राज्य आगे निकल गया। मैं इतनी मेहनत करूंगा कि मैं आगे निकल जाऊंगा। उसने यह 10 अच्छे काम किए हैं मैं 15 अच्छे काम कर के दिखाऊंगा। उसने तीन साल में पूरा किया है मैं दो साल में कर के दिखाऊंगा। हमारे राज्यों के बीच में हमारी service सरकार की सभी इकाइयों के बीच में वो स्पर्धा का वातावरण चाहिए, जो हमें विकास की नई ऊंचाईयों पर ले जाने के लिए प्रयास करे।

इस 25 वर्ष का अमृतकाल के लिए जब हम चर्चा करते हैं, तब मैं जानता हूं चुनौतियां अनेक है, मर्यादाएं अनेक हैं, मुसीबतें भी हैं, बहुत कुछ है, हम इसको कम नहीं आंकते। रास्ते खोजते हैं, लगातार कोशिश कर रहे हैं लेकिन दो विषयों को तो मैं यहां पर चर्चा करना चाहता हूं। चर्चा अनेक विषयों पर हो सकती है। लेकिन मैं अभी समय की सीमा के साथ दो विषयों पर चर्चा करना चाहता हूं। और मैं मानता हूं हमारी इन सारी चुनौतियों के कारण, विकृतियों के कारण, बिमारियों के कारण इस 25 साल का अमृत काल उस पर शायद अगर हमने समय रहते नहीं चेते, समय रहते समाधान नहीं किए तो ये विकराल रूप ले सकते हैं। और इसलिए मैं सब की चर्चा न करते हुए दो पर जरूर चर्चा करना चाहता हूं। एक है भ्रष्टाचार और दूसरा है भाई-भतीजावाद, परिवारवाद। भारत जैसे लोकतंत्र में जहां लोग गरीबी से जूझ रहे हैं जब ये देखते हैं, एक तरफ वो लोग हैं जिनके पास रहने के लिए जगह नहीं है। दूसरी ओर वो लोग हैं जिनको अपना चोरी किया हुआ माल रखने के लिए जगह नहीं है। यह स्थिति अच्छी नहीं है दोस्तों। और इसलिए हमें भ्रष्टाचार के खिलाफ पूरी ताकत से लड़ना है। पिछले आठ वर्षों में direct benefit transfer के द्वारा आधार, mobile इन सारी आधुनिक व्यवस्थाओं का उपयोग करते हुए दो लाख करोड़ रुपये जो गलत हाथों में जाते थे, उसको बचाकर के देश की भलाई के लिए लगाने में हम सफल हुए। जो लोग पिछली सरकारों में बैंकों को लूट-लूट कर के भाग गए, उनकी सम्पत्तियां जब्त कर के वापिस लाने की कोशिश कर रहे हैं। कईयों को जेलों में जीने के लिए मजबूर कर के रखा हुआ है। हमारी कोशिश है जिन्होंने देश को लूटा है उनको लौटाना पड़े वो स्थिति हम पैदा करेंगे।

अब भ्रष्टाचार के खिलाफ मैं साफ देख रहा हूं कि हम एक निर्णायक कालखंड में कदम रख रहे हैं। बड़े-बड़े भी बच नहीं पाएंगे। इस मिजाज के साथ भ्रष्टाचार के खिलाफ एक निर्णायक कालखंड में अब हिन्दुस्तान कदम रख रहा है। और मैं लाल किले की प्राचीर से बड़ी जिम्मेवारी के साथ कह रहा हूं। और इसलिए, भाईयों-बहनों भ्रष्टाचार दीमक की तरह देश को खोखला

कर रहा है। मुझे इसके खिलाफ लड़ाई लड़नी है, लड़ाई को तेज करना है, निर्णायक मोड़ पर इसे लेकर के ही जाना है। तब मेरे 130 करोड़ देशवासी, आप मुझे आर्शीवाद दीजिए, आप मेरा साथ दीजिए, मैं आज आप से साथ मांगने आया हूं, आपका सहयोग मांगने आया हूं ताकि मैं इस लड़ाई को लड़ पाऊं। इस लड़ाई को देश जीत पाए और सामान्य नागरिक की जिंदगी भ्रष्टाचार ने तबाह करके रखी हुई है। मैं मेरे इन सामान्य नागरिक की जिंदगी को फिर से आन, बान, शान के लिए जीने के लिए रास्ता बनाना चाहता हूं। और इसलिए, मेरे प्यारे देशवासियों यह चिंता का विषय है कि आज देश में भ्रष्टाचार के प्रति नफरत तो दिखती है, व्यक्त भी होती है लेकिन कभी-कभी भ्रष्टाचारियों के प्रति उदारता बरती जाती है, किसी भी देश में यह शोभा नहीं देगा।

और कई लोग तो इतनी बेशर्मी तक चले जाते हैं कि कोर्ट में सजा हो चुकी हो, भ्रष्टाचारी सिद्ध हो चुका हो, जेल जाना तय हो चुका हो, जेल गुजार रहे हो, उसके बावजूद भी उनका महिमामंडन करने में लगे रहते हैं, उनकी शान-ओ-शौकत में लगे रहते हैं, उनकी प्रतिष्ठा बनाने में लगे रहते हैं। अगर जब तक समाज में गंदगी के प्रति नफरत नहीं होती है, स्वच्छता की चेतना जगती नहीं है। जब तक भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचारी के प्रति नफरत का भाव पैदा नहीं होता है, सामाजिक रूप से उसको नीचा देखने के लिए मजबूर नहीं करते, तब तक यह मानसिकता खत्म होने वाली नहीं है। और इसलिए भ्रष्टाचार के प्रति भी और भ्रष्टाचारियों के प्रति भी हमें बहुत जागरूक होने की जरूरत है।

दूसरी एक चर्चा मैं करना चाहता हूं भाई-भतीजावाद, और जब मैं भाई-भतीजावाद परिवारवाद की बात करता हूं तो लोगों को लगता है मैं सिर्फ राजनीति क्षेत्र की बात करता हूं। जी नहीं, दुर्भाग्य से राजनीति क्षेत्र की उस बुराई ने हिन्दुस्तान की हर संस्थाओं में परिवारवाद को पोषित कर दिया है। परिवारवाद हमारी अनेक संस्थाओं को अपने में लपेटे हुए है। और इसके कारण मेरे देश के talent को नुकसान होता है। मेरे देश के सामर्थ्य को नुकसान होता है। जिनके पास अवसर की संभावनाएं हैं वो परिवारवाद भाई-भतीजे के बाद बाहर रह जाता है। भ्रष्टाचार का भी कारण यह भी एक बन जाता है, ताकि उसका कोई भाई-भतीजे का आसरा नहीं है तो लगता है कि भई चलो कहीं से खरीद करके जगह बना लूं।

इस परिवारवाद से भाई-भतीजावाद से हमें हर संस्थाओं में एक नफरत पैदा करनी होगी, जागरूकता पैदा करनी होगी, तब हम हमारी संस्थाओं को बचा पाएंगे। संस्थाओं के उज्ज्वल भविष्य के लिए बहुत आवश्यक है। उसी प्रकार से राजनीति में भी परिवारवाद ने देश के सामर्थ्य के साथ सबसे ज्यादा अन्याय किया है। परिवारवादी राजनीति परिवार की भलाई के लिए होती है उसको देश की भलाई से कोई लेना-देना नहीं होता है और इसलिए लाल किले की प्राचीर से तिरंगे झंडे के आन-बान-शान के नीचे भारत के संविधान का स्मरण करते हुए मैं देशवासियों को खुले मन से कहना चाहता हूं, आइये हिन्दुस्तान की राजनीति के शुद्धिकरण के लिए भी, हिन्दुस्तान की सभी संस्थाओं की शुद्धिकरण के लिए भी हमें देश को इस परिवारवादी मानसिकता से मुक्ति दिला करके योग्यता के आधार पर देश को आगे ले जाने की ओर बढ़ना होगा। यह अनिवार्यता है। वरना हर किसी का मन कुंठित रहता है कि मैं उसके लिए योग्य था, मुझे नहीं मिला, क्योंकि मेरा कोई चाचा, मामा, पिता, दादा-दादी, नाना-नानी कोई वहां थे नहीं। यह मनस्थिति किसी भी देश के लिए अच्छी नहीं है।

देश के नौजवानों, मैं आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए, आपके सपनों के लिए मैं भाई-भतीजावाद के खिलाफ लड़ाई में आपका साथ चाहता हूं। परिवारवादी राजनीति के खिलाफ लड़ाई में मैं आपका साथ चाहता हूं। यह संवैधानिक जिम्मेदारी मानता हूं मैं। यह लोकतंत्र की जिम्मेदारी मानता हूं मैं। यह लालकिले के प्राचीर से कही गई बात की ताकत मैं मानता हूं। और इसलिए मैं आज आपसे यह अवसर चाहता हूं। हमने देखा पिछले दिनों खेलों में, ऐसा तो नहीं है कि देश के पास पहले प्रतिभाएं नहीं रहीं होंगी, ऐसा तो नहीं है कि खेल-कूद की दुनिया में हिन्दुस्तान के नौजवान हमारे बेटे-बेटियां कुछ कर नहीं रहे। लेकिन selection भाई-भतीजेवाद के चैनल से गुजरते थे। और उसके कारण वो खेल के मैदान तक उस देश तक तो पहुंच जाते थे, जीत-हार से उन्हें लेना-देना नहीं था। लेकिन जब transparency आई योग्यता के आधार पर खिलाड़ियों का चयन होने लगा पूर्ण पारदर्शिता से खेल के मैदान में सामर्थ्य का सम्मान होने लगा। आज देखिए दुनिया में खेल के मैदान में भारत का तिरंगा फहरता है। भारत का राष्ट्रगान गाया जाता है।

गर्व होता है और परिवारवाद से मुक्ति होती है, भाई भतीजावाद से मुक्ति होती है तो यह नतीजे आते हैं। यह ठीक है, चुनौतियां बहुत है, अगर इस देश के सामने करोड़ों संकट है, तो करोड़ों समाधान भी हैं और मेरा 130 करोड़ देशवासियों पर भरोसा है। 130 करोड़ देशवासी निर्धारित लक्ष्य के साथ संकल्प के प्रति समर्पण के साथ जब 130 करोड़ देशवासी एक कदम आगे रखते हैं न तो हिन्दुस्तान 130 कदम आगे बढ़ जाता है। इस सामर्थ्य को लेकर के हमें आगे बढ़ना है। इस अमृतकाल में, अभी अमृतकाल की पहली बेला है, पहली प्रभात है, हमें आने वाले 25 साल के एक पल भी भूलना नहीं है। एक-एक दिन, समय का प्रत्येक क्षण, जीवन का प्रत्येक कण, मातृभूमि के लिए जीना और तभी आजादी के दीवानों को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। तभी 75 साल तक देश को यहां तक पहुंचाने में जिन-जिन लोगों ने योगदान दिया, उनका पुण्य स्मरण हमारे काम आयेगा।

देशवासियों से आग्रह करते हुए नई संभावनाओं को संजोते हुए, नए संकल्पों को पार करते हुए आगे बढ़ने का विश्वास लेकर आज अमृतकाल का आरंभ करते हैं। आजादी का अमृत महोत्सव, अब अमृतकाल की दिशा में पलट चुका है, आगे बढ़ चुका है, तब इस अमृतकाल में सबका प्रयास अनिवार्य है। सबका प्रयास ये परिणाम लाने वाला है। टीम इंडिया की भावना ही देश को आगे बढ़ाने वाली है। 130 करोड़ देशवासियों की ये टीम इंडिया एक टीम के रूप में आगे बढ़कर के सारे सपनों को साकार करेगी। ▪

राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमारे मूल विचारों के आधार पर-अमित शाह

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत सरकार 2020 में जो नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लेकर आई, इसका आज तक किसी ने विरोध नहीं किया है क्योंकि इसे बनाते वक्त व्यापक विचार विमर्श किया गया और सभी को इसमें अपने विचार प्रतिबिंबित होते नजर आते हैं।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमारे मूल विचारों के आधार पर बनी पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति है। शिक्षा का मतलब सिर्फ रोजगार देना नहीं बल्कि मनुष्य की आंतरिक शक्तियों की अभिव्यक्ति और उसको उत्कृष्ट बनाना है

एक महान नेता वह होता है जो रास्ते को जानता है और रास्ता दिखाता है आज के जमाने में ऐसे कई लोग हैं मगर कुशाभाऊ जी एकमात्र ऐसे नेता थे जो रास्ते पर चलते भी थे और साथ में लोगों को चलाते भी थे। रास्ते को जानना, रास्ता दिखाना और उस पर स्वयं चलना बहुत बड़ी बात होती है और यही बात कुशाभाऊ जी को महान बनाती है। कुशाभाऊ जी बहुत ही सरल, सहज और विनम्र व्यक्तित्व के धनी थे और उन्होने अनेक प्रकार की कठिन परिस्थितियों में भी रास्ता दिखाने का काम किया।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने महान भारत के निर्माण का बीजारोपण किया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी द्वारा लायी गयी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, भारत की आत्मा और भारतीयता की उद्घोषणा है। शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तीन प्रमुख आधार हैं। देश में पहले जब भी शिक्षा नीति आई तब विवाद जरूर हुए, किसी न किसी ने इसका विरोध किया, इस पर टिप्पणी की क्योंकि शिक्षा का विषय ही ऐसा है जिसमें ढेर सारे विचारों का होना जरूरी भी है और उचित भी है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत सरकार 2020 में जो नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लेकर आई, इसका आज तक किसी ने विरोध नहीं किया है क्योंकि इसे बनाते वक्त व्यापक विचार विमर्श किया गया और सभी को इसमें अपने विचार प्रतिबिंबित होते नजर आते हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमारे मूल विचारों के आधार पर बनी पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति है। शिक्षा का मतलब सिर्फ रोजगार देना नहीं बल्कि मनुष्य की आंतरिक शक्तियों की अभिव्यक्ति और उसको उत्कृष्ट बनाना है। मनुष्य के मन की शक्ति का महत्तम उपयोग करने के रास्ते पर ले जाने वाली शिक्षा ही सार्थक शिक्षा है और इसीलिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 21वीं सदी को ज्ञान की सदी कहा है।

शिक्षा ज्ञान, विज्ञान और सभी गतिविधियों के मूल स्रोत को फिर से पुर्नजीवित करने का काम करती है और इसी नजरिए से नई शिक्षा नीति को बनाया गया है। पहले दुर्भाग्य से एक ऐसी शिक्षा नीति थी जिसका आधार केवल और केवल रटा-रटाया कोर्स बनाकर बच्चों को नौकरी की दिशा में ले जाना था। आज नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अध्ययन और इसका इंटरप्रिटेशन करने वाले कई विद्वानों को इसमें रोजगार की प्रबल संभावनाएं, बेरोजगारी उन्मूलन, प्राथमिक शिक्षा में बच्चे की अभिव्यक्ति को मंच देने और टेक्नोलॉजी के लिए ढेर सारा स्पेस दिखाई पड़ता है। साथ ही कई लोगों को इसमें रिसर्च एंड डेवलपमेंट और दुनिया भर के सबसे अच्छे कोर्सों को भारत में लाने का विचार भी दिखाई पड़ता है। नई शिक्षा नीति में संपूर्ण भारत के शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के विचारों को समाहित कर उन्हे जमीन पर उतारा गया है।

आज तक किसी भी देश की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्वभाषा को इतना महत्व नहीं दिया गया, लेकिन भारत की नई शिक्षा नीति में स्वभाषा में प्राथमिक शिक्षा पर बहुत बल दिया गया है। बच्चे के विकास की नींव के लिए यह बहुत जरूरी है

भारत को एक ग्लोबल स्टडी डेस्टिनेशन बनाने के लिए 2030 तक प्रत्येक जिले में मल्टीडिसीप्लिनरी हायर एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन भी स्थापित किए जाएंगे जिससे दुनिया भर का ज्ञान देश में आए और भारत का ज्ञान पूरी दुनिया में जाए।

2040 तक सभी उच्च शिक्षा संस्थानों में बहु विषयक शैक्षिक पाठ्यक्रम संस्थान बनाने का भी लक्ष्य रखा गया है। नई शिक्षा नीति में ई लर्निंग पर भी बहुत बल दिया गया है और दिव्यांग जनों के लिए एक अलग प्रकार के अभ्यास क्रम बनाने का काम किया गया है। भारत जैसी बड़ी और जीवंत अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करनी है

कि बच्चे पहला ज्ञान अपनी भाषा में प्राप्त करें, सोचने की आदत अपनी भाषा में डालें और अपनी भाषा में ही अपनी संस्कृति और इतिहास की जानकारी प्राप्त करें और देश के प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने यह बहुत बड़ा काम किया है। आप बच्चे को एक अच्छा डॉक्टर, इंजीनियर और वैज्ञानिक तो बना सकते हो परंतु अगर उसको बड़ा व्यक्ति बनाना है तो उसके मन की सभी शक्तियों को एक मंच देते हुए उसे उन्नत बनाने का काम करने का काम एक सफल शिक्षा नीति ही कर सकती है और नई शिक्षा नीति में इस पर बहुत अधिक बल दिया गया है। पहली बार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने इसका बीजारोपण किया है पूरा भरोसा है कि 20-25 साल में यह बीज वट वृक्ष बन कर न केवल भारत बल्कि समग्र विश्व को छाया देने का काम करेगा। नई शिक्षा नीति भारत के भविष्य और नए भारत की रचना की नींव है।

अंग्रेजों ने अपना शासन चलाने के लिए भारतीय समाज के अंदर कई प्रकार की हीन भावना निर्मित की थी और अब इन भावनाओं को त्यागने का समय आ गया है। दुनिया के कई देशों ने अपनी अपनी भाषाओं को समाहित और सुरक्षित करते हुए बहुत सारे अनुसंधान किए, और भारत भी यह कर सकता है। इसीलिए प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने टेक्निकल और मेडिकल एजुकेशन के संपूर्ण अभ्यास क्रम का भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने का बीड़ा उठाया है। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा व कोर्स को सभी स्थानीय भाषाओं में तैयार किया जाएगा, साथ ही विश्व स्तरीय उच्च गुणवत्ता वाले नए अभ्यास क्रम की रचना का काम भी किया जा रहा है।

भारत को एक ग्लोबल स्टडी डेस्टिनेशन बनाने के लिए 2030 तक प्रत्येक जिले में मल्टीडिसीप्लिनरी हायर एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन भी स्थापित किए जाएंगे जिससे दुनिया भर का ज्ञान देश में आए और भारत का ज्ञान पूरी दुनिया में जाए। 2040 तक सभी उच्च शिक्षा संस्थानों में बहु विषयक शैक्षिक पाठ्यक्रम संस्थान बनाने का भी लक्ष्य रखा गया है। नई शिक्षा नीति में ई लर्निंग पर भी बहुत बल दिया गया है और दिव्यांग जनों के लिए एक अलग प्रकार के अभ्यास क्रम बनाने का काम किया गया है। भारत जैसी बड़ी और जीवंत अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करनी है तो नॉलेज क्रिएशन के बगैर यह संभव नहीं हो सकता। इसके लिए टेक्नोलॉजी और हर क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा देना होगा, नई शिक्षा नीति में इसकी बहुत सारी व्यवस्थाएँ की गई हैं।

नई शिक्षा नीति में उच्च शिक्षा में ऑनलाइन पाठ्यक्रम को भी बहुत महत्व दिया गया है, काम करने के साथ साथ बच्चा अगर उच्च शिक्षा लेना चाहता है तो वह ऑनलाइन पाठ्यक्रम के माध्यम से इसे हासिल कर सकता है। इस पाठ्यक्रम को अगर और पॉपुलर बनाया जाए तो रोजगार प्राप्त करने के साथ-साथ बच्चा शिक्षा भी प्राप्त कर सकता है। भारत सरकार ने 99 संस्थानों की पहचान कर 33000 करोड़ रुपए का इन्वेस्टमेंट किया है क्योंकि हम इन्हें वर्ल्ड क्लास बनाना चाहते हैं। 5 साल बाद जब विश्व स्तरीय संस्थानों की तालिका बनेगी तो उसमें भारत के संस्थान 1 से 10 स्थान के अंदर जरूर दिखाई पड़ेंगे। 2022 में 33 भारतीय विश्वविद्यालयों ने क्युएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में अपना स्थान सुनिश्चित किया है। जेईई, नीट और आईएएस, आईपीएस की परीक्षा 12 भारतीय भाषाओं में दी जा सकती है। अंग्रेजी के मोह की वजह से हम अपने टैलेंट का 5 प्रतिशत उपयोग ही देश के विकास में कर पा रहे हैं क्योंकि आज भी 95 प्रतिशत बच्चे मातृभाषा में पढ़ते हैं, लेकिन जिस दिन स्थानीय भाषा में पढ़े बच्चे की देश की हर व्यवस्था में पूछ होगी उस दिन भारत विश्व फलक पर सूर्य की भांति चमकेगा। श्री मोदी जी के नेतृत्व में 2020 में नई शिक्षा नीति के रूप में महान भारत के निर्माण का जो बीज बोया गया है वह एक वटवृक्ष बनकर न केवल भारत बल्कि समग्र विश्व को छाया देने का काम करेगा, समग्र विश्व को विकास देने का काम करेगा और वसुदेव कुटुंबकम की अपनी कल्पना को चरितार्थ करेगा। ▪

मुख्यमंत्री एवं प्रदेश अध्यक्ष के नेतृत्व में तिरंगा यात्रा निकली

हाथों में तिरंगा ध्वज, होठों पर भारतमाता का जयघोष और वंदे मातरम का मंत्र। भारतीय जनता पार्टी द्वारा आयोजित तिरंगा यात्रा में शामिल हर युवा, बुजुर्ग, किशोर और महिलाएं देशभक्ति के रंग में रंगे हुए नजर आ रहे थे। देशभक्ति के तरानों के साथ तिरंगा यात्रा जिस मार्ग और चौराहे से गुजरी, हर जगह हाथों में तिरंगा थामे लोगों ने दिल खोलकर स्वागत किया।

बाइक पर सवार सैकड़ों कार्यकर्ता यात्रा में शामिल हुए। तिरंगा यात्रा का विभिन्न स्थानों पर सामाजिक और धार्मिक संगठनों द्वारा स्वागत किया गया।

तिरंगा झंडा लेकर जोश के साथ पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है - मुरलीधर राव

देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने संपूर्ण देश में आव्हान किया कि यह 75 वर्ष के आजादी का अमृत महोत्सव हर घर तिरंगा अभियान के रूप में मनाना चाहिए।

उनके आव्हान के अनुरूप पार्टी, मजहब और जाति से ऊपर उठकर अनेक भाषाओं एवं विविधता के बाद भी संपूर्ण देश में तिरंगा झंडा लेकर शहर-शहर में गांव-गांव, गली-गली में सभी जगह एक ही जोश के साथ पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। तिरंगा यात्रा के रूप में तिरंगा झंडा लेकर युवा शक्ति निकली है।

हम आजादी का जो आनंद ले रहे हैं उसके लिए महापुरूषों ने प्राणों की आहूति दी

पूरी दुनिया में सबसे बड़े लोकतंत्र और सबसे युवा आबादी देने वाला कोई देश है तो वह भारत है। ऐसे भारत का हम आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर अमृत महोत्सव मना रहे हैं। हम आजादी का जो आनंद ले रहे हैं इसके पीछे उन महापुरूषों को भी याद करना चाहिए जो आजादी के लिए लड़े अपने प्राणों की आहूति दी।

अपना सब कुछ न्यौछावर इस देश की आजादी के लिए कर दिया और इस गुलामी की जंजीरों से हमें आजाद कराया। हम स्वाभिमान के साथ छाती तान कर अपने स्वराज को अनुभव कर रहे हैं। स्वराज का मतलब अपनी भाषा के लिए स्वराज, अपने मजहब के लिए स्वराज, अपने धर्म के लिए स्वराज, अपने खानपान के लिए स्वराज, पढ़ाई के लिए स्वराज, अपने शासन के लिए स्वराज, स्वराज हर कण-कण में अभिव्यक्त होगा तभी यह स्वराज का अर्थ है।

निकाय परिणामों का संदेश
जन-जन तक पहुंची भाजपा

विष्णुदत्त शर्मा

राष्ट्रवाद और अंत्योदय के रास्ते पर चलने वाली भारतीय जनता पार्टी की सरकारों के लिए विकास और गरीब कल्याण सिर्फ नारे नहीं हैं, क्योंकि अगर ये नारे होते तो ये भी गरीबी हटाओ के नारे की तरह इतिहास में दफन हो चुके होते।

भारतीय जनता पार्टी की केंद्र और राज्य सरकारों ने गरीब कल्याण और विकास को ही अपना लक्ष्य बनाया और अंत्योदय के लिए पूरी ईमानदारी और समर्पण के साथ प्रयास शुरू किए।

प्रदेश में हाल ही में सम्पन्न हुए नगरीय निकाय और पंचायत चुनावों में हुई जीत-हार राजनीतिक विश्लेषण का विषय हो सकती है, लेकिन इन चुनावों के माध्यम से प्रदेश की जनता ने जो संदेश दिया है, वो स्पष्ट है और उसे समझने के लिए किसी विशेषज्ञ की जरूरत भी नहीं है। सुदूर ग्रामीण अंचलों से लेकर तेजी से महानगर बन रहे शहरों तक यह संदेश एक ही भाषा में है। इससे पता चलता है कि केंद्र और प्रदेश सरकार की गरीब कल्याण तथा विकास की योजनाओं के साथ-साथ भारतीय जनता पार्टी भी जन-जन तक पहुंच चुकी है। एक राजनीतिक दल और जन का आपसी जुड़ाव अब इतना परिपक्व हो चुका है कि विरोधियों के तमाम झूठ और दुष्प्रचार भी इन्हें अलग नहीं कर पा रहे हैं। पार्टी और जन के इस जुड़ाव के शिल्पकार वे परिश्रमी और समर्पित कार्यकर्ता रहे हैं, जो हर मुसीबत में लोगों का सहारा बने, उन्हें सरकारी योजनाओं की जानकारी दी तथा उनका लाभ भी दिलाया।

जीवन में बदलाव ला रहीं अंत्योदय की योजनाएं

राष्ट्रवाद और अंत्योदय के रास्ते पर चलने वाली भारतीय जनता पार्टी की सरकारों के लिए विकास और गरीब कल्याण सिर्फ नारे नहीं हैं, क्योंकि अगर ये नारे होते तो ये भी गरीबी हटाओ के नारे की तरह इतिहास में दफन हो चुके होते। भारतीय जनता पार्टी की केंद्र और राज्य सरकारों ने गरीब कल्याण और विकास को ही अपना लक्ष्य बनाया और अंत्योदय के लिए पूरी ईमानदारी और समर्पण के साथ प्रयास शुरू किए। लोगों तक वास्तविक लाभ पहुंचाने के लिए योजनाएं डिजाइन की गईं। एक तरफ प्रदेश की भाजपा सरकार ने लाड़ली लक्ष्मी, मुख्यमंत्री कन्यादान, तीर्थदर्शन और संबल जैसी योजनाएं शुरू की, जिनके दायरे में गरीब मजदूरों, किसानों, छोटे व्यापारियों, बुजुर्गों, छात्र-छात्राओं से लेकर गर्भवती महिलाओं तक को शामिल किया गया। वहीं, केंद्र की मोदी सरकार ने लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर प्रधानमंत्री आवास, गरीब कल्याण अन्न योजना, स्ट्रीट वेंडर योजना, आयुष्मान भारत योजना, किसान सम्मान निधि और उज्जवला जैसी योजनाएं लागू की तथा उन पर ईमानदारी से अमल के लिए एक सिस्टम भी बनाया। यही वजह है कि

केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं के लाभ झारखंड और उड़ीसा के आदिवासी अंचलों से लेकर सुदूर उत्तरपूर्व के पहुंच विहीन गांवों तक और विकास के रास्ते पर कदम बढ़ा रहे कस्बों से लेकर महानगरों की झुग्गी बस्तियों तक समान रूप से पहुंच रहे हैं।

जनता को लगी विकास की आदत

भाजपा सरकारों द्वारा लागू की गई योजनाएं लक्षित वर्ग जीवन में जो बदलाव ला रही हैं, उसकी कुछ दशक पहले तक कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। जिस व्यक्ति के लिए अपना और परिवार का पेट भरना ही मुश्किल रहा हो, वह पक्के घर में रहने, बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाने या महंगे अस्पतालों में इलाज कराने की कल्पना भी कैसे कर सकता था? लेकिन अब यह सब जमीन पर साकार हो रहा है और जनता अपने जीवन में इन योजनाओं के फलस्वरूप आ रहे बदलावों को पूरी शिद्दत से अनुभव भी कर रही है। निकाय और पंचायत चुनावों में जनता ने भारतीय जनता पार्टी को जो ऐतिहासिक समर्थन दिया है, वह साफ बताता है कि जनता को विकास की आदत लग गई है और विकास के रास्ते पर अब वह पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहती।

सफल रही संगठन की कवायदें

पार्टी संगठन ने स्व. कुशाभाऊ ठाकरे के जन्मशताब्दी वर्ष को संगठन पर्व के रूप में मनाने का निर्णय किया था और इसके अंतर्गत संगठन को सशक्त बनाने के लिए अनेक योजनाएं तथा अभियान शुरू किए गए थे। बूथ विस्तारक योजना, बूथ डिजिटाइजेशन और त्रिदेव जैसी योजनाओं को जमीन पर उतारने में पार्टी के उत्साही कार्यकर्ता पूरे समर्पण के साथ जुट गए थे।

इन योजनाओं के चलते पार्टी कार्यकर्ताओं ने जन-जन तक अपनी पहुंच बनाई। हर वर्ग के लोगों को पार्टी से जोड़ा। पुराने हितग्राहियों से संपर्क किया और नए पात्र लोगों को योजनाओं से जोड़ा। नगर निकाय और पंचायत चुनाव में पार्टी को मिली सफलता इन कार्यकर्ताओं के परिश्रम का प्रतिफल भी है।

गांवों से लेकर शहरों तक बढ़ा भाजपा का आधार

पंचायत चुनावों की घोषणा के समय हमारे नेतृत्व ने कहा था कि भारतीय जनता पार्टी नगरीय और ग्रामीण निकायों के चुनावों में ऐतिहासिक सफलता हासिल करने जा रही है। विरोधियों को यह बयान भले ही राजनीतिक आशावादिता नजर आया हो, लेकिन यह बयान प्रदेश की जनता के मन को समझते हुए दिया गया था। जब पंचायत और निकाय चुनावों के परिणाम आए, तो यह साबित हो गया कि ठेठ ग्रामीण अंचलों से लेकर महानगरों तक भाजपा के प्रति जनता का समर्थन बढ़ा है। प्रदेश की 22924 पंचायतों में हुए चुनावों में 19863 से अधिक पंचायतों में भाजपा समर्थित प्रत्याशी सरपंच बने। 51 जिला पंचायतों में से 42 में भाजपा के उम्मीदवार अध्यक्ष चुने गए। यही स्थिति नगरीय निकायों में भी रही। प्रदेश की 9 नगर निगमों में महापौर भाजपा के चुने गए। नगर निगमों में महापौर भाजपा के नहीं हैं, वहां भी पार्षद भाजपा के अधिक हैं और अधिकांश नगर निगम परिषद में भाजपा के प्रत्याशी ही अध्यक्ष चुने गए हैं। यही स्थिति नगर पालिकाओं और नगर परिषदों में भी रही है। प्रदेश की 76 नगर पालिकाओं में से 59 में भाजपा के अध्यक्ष चुने गए हैं और इनमें से भी दो नगर पालिकाओं में भाजपा निर्विरोध जीती है। इसी तरह प्रदेश की 255 नगर पालिका परिषदों में से 212 में भाजपा के अध्यक्ष चुने गए हैं और 14 नगर परिषदों में भाजपा निर्विरोध चुनाव जीती है।

चुनाव तो भाजपा जीती ही है, लेकिन इस बार के पंचायत और नगरीय निकाय चुनावों की जो सबसे बड़ी उपलब्धि रही है, वह यह है कि पंचायत जैसे छोटे स्तर के चुनाव में भी बड़ी संख्या में भाजपा समर्थित प्रत्याशी निर्विरोध चुने गए हैं। बढ़ती राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के दौर में यह एक सुखद संकेत है और इसके लिए प्रदेश की जनता बधाई की पात्र है। ▪

(लेखक भाजपा मध्यप्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष हैं।)

बरघाट नगर परिषद में आजादी के बाद पहली बार भाजपा अध्यक्ष निर्वाचित

सिवनी जिले की बरघाट नगर परिषद में भारतीय जनता पार्टी की प्रत्याशी श्रीमती साहू ने जीत दर्ज की है। आजादी के बाद पहली बार प्रदेश के इतिहास में बरघाट नगर परिषद में भाजपा के प्रत्याशी ने जीत दर्ज की है। ▪

मैं सोचने लगता हूँ

अटल बिहारी वाजपेयी

तेज रफ्तार से दौड़ती बसें,
बसों के पीछे भागते लोग,
बच्चे सम्हालती औरतें,

सड़कों पर इतनी धूल उड़ती है
कि मुझे कुछ दिखाई नहीं देता।
मैं सोचने लगता हूँ।

पुरखे सोचने के लिए आँखें
बन्द करते थे,
मै आँखें बन्द होने पर सोचता हूँ।

बसें ठिकानों पर क्यों नहीं
ठहरतीं?
लोग लाइनों में क्यों नहीं लगते?
आखिर यह भागदौड़ कब
तक चलेगी?

देश की राजधानी में,
संसद के सामने,
धूल कब तक उड़ेगी ?

मेरी आँखें बन्द हैं,
मुझे कुछ दिखाई नहीं देता।
मैं सोचने लगता हूँ।

सुशासन की पहली शर्त, कानून का राज

डॉ. नरोत्तम मिश्रा

मध्यप्रदेश में कानून का राज है यह कोई जादू की दम पर नही हुआ। इसके लिए निरंतर प्रयास किए गए। योजना व कार्य योजना बनाकर उन्हें इच्छा शक्ति से क्रियान्वित किया गया।

पुलिस को सक्षम व संवेदनशील बनाने में जो सफलता मध्यप्रदेश को मिली वह उदाहरण पेश करने वाली है।

देश का हृदय प्रदेश मध्यप्रदेश आज भले ही तेजी से विकसित होते राज्यों में से एक है लेकिन प्रदेश की जनता को प्रदेश का यह स्वरूप लंबे इंतजार के बाद देखने को मिला है। दो दशक पहले का प्रदेश जिसने देखा होगा वह विश्वास ही नहीं करेगा की यह वही प्रदेश है। दो दशक पहले लगभग अधिकांश समय कांग्रेस की सरकार रही लेकिन राजनैतिक इच्छा शक्ति व जनता के प्रति सेवा भाव की कमी ने प्रदेश को अंधेरे युग में पहुंचा दिया था। सड़क में गड्ढे हैं या गड्ढों में सड़क है यह पता ही नही चलता था। बिजली कभी कभी जाती नही थी एक समय तो कभी कभी आती थी। पानी के लिए लोगों को मीलों दूर जाना पड़ता था। कानून व्यवस्था का हाल तो यह था की डकैतों का बोल बाला था तो नक्सली खुले आम वारदात कर देते थे। आम आदमी की सुरक्षा का अंदाज इससे लगाया जा सकता है कि तत्कालीन मंत्री लिखीराम कांवरे की नक्सलियों ने हत्या कर दी थी। कैसा प्रदेश था न बिजली, न पानी, न सड़क और न ही सुरक्षा। 2003 के बाद सरकार बदली और जनता ने बीजेपी की सरकार को सेवा का मौका दिया। बीजेपी की सरकार बनते ही प्रदेश में बदलाव शुरू हो गए। और आज प्रदेश तेजी से विकसित होते राज्यों की दौड़ में आगे है।

यहाँ यह बताना जरूरी है की कोई भी प्रदेश तभी तेजी से विकास कर सकता है जब वहां सुशासन हो और सुशासन यानी गुड गवर्नेंस के लिए इच्छा शक्ति के बाद जो सबसे जरूरी है वह है सुरक्षा का भाव यानी कानून का राज। इसलिए पुलिस को सक्षम व आधुनिक बनाने के साथ पुलिस का मनोबल बढ़ाने व उनकी सुख सुविधाओं पर विशेष ध्यान दिया गया।

गृह मंत्री रहते मैने प्रयास किया कि इस कार्य की गति तेज की जाए। इसके सुखद परिणाम भी सामने आए हैं। मध्यप्रदेश को हम शांति का टापू बनाने में सफल हुए है। यहां आज कोई संगठित गिरोह नहीं है। डकैत गिरोह इतिहास बन गए हैं। नक्सलियों पर भी नकेल कसी हुई है। सिमी या अन्य आतंकी संगठनों को नेस्तनाबूद करने में हमारी पुलिस ने सफलता पाई है।

मध्यप्रदेश में कानून का राज है यह कोई जादू की दम पर नही हुआ। इसके लिए निरंतर

प्रयास किए गए। योजना व कार्य योजना बनाकर उन्हें इच्छा शक्ति से क्रियान्वित किया गया। पुलिस को सक्षम व संवेदनशील बनाने में जो सफलता मध्यप्रदेश को मिली वह उदाहरण पेश करने वाली है।

कोरोना काल में पुलिस का एक अलग ही चेहरा दुनिया ने देखा। पुलिस के जवान उस समय लॉकडाउन के लिये सड़क पर खड़े थे।

जब सब लोग घरों में थे, तब ये सड़क पर थे, लॉकडाउन के लिये तथा जनता की सुरक्षा के लिये और पुलिस की छवि के लिये - क्योंकि पहले लोग कहते थे कि हमारा जवान चौराहे पर खड़ा, तो कही वसूली के लिये तो नहीं खड़ा? पर जब ट्रेन बन्द थी, प्लेन बन्द था, बस बन्द थी, ट्रक बन्द था, मोटर साइकल एवं साइकल तक बन्द थी, तब भी पुलिस का जवान 45 डिग्री के टेम्प्रेचर में भी पी.पी.ई. किट पहनकर हमारी जान की खातिर खड़ा था। इससे लोगों का पुलिस के प्रति नजरिया बदला।

प्रदेश की संवेदनशील सरकार ने भी मजदूर को उसकी मजदूरी पसीना सूखने के पहले मिलनी चाहिए। ऐसी मान्यता को सामने रखते हुए पुलिस कर्मचारियों की क्रमोन्नति के लिये, कोरोना के तत्काल बाद कांस्टेबल को हेड कांस्टेबल, हेड कांस्टेबल को सहायक उप निरीक्षक, सहायक उप निरीक्षक को उप निरीक्षक, उप निरीक्षक को निरीक्षक एवं निरीक्षक को उप पुलिस अधीक्षक के पद पर कार्य करने हेतु आदेशित किया, जिससे इन पुलिस कर्मचारियों में नई ऊर्जा का संचार हुआ, उनका मनोबल बढ़ा।

अनेक नवाचार भी प्रदेश में हुये। ''ई-एफ.आई.आर.'' एवं ''एफ.आई.आर. आपके द्वार'' प्रारंभ किया गया। पुलिस कर्मचारियों को 39,185 कोरोना योद्धा पदक दिये गये। इन्दौर और भोपाल शहरों में पुलिस कमिश्नर सिस्टम प्रारंभ किया गया। जिसने पुलिस की कार्यक्षमता बढ़ाई। धर्म छिपाकर अपराध करने व दंगाइयों पर प्रभावी नियंत्रण के लिए बीजेपी सरकार ने कठोर कानून तक बनाने में देरी नही की। धर्म छुपाकर विवाह करने वालों के खिलाफ (धर्म स्वतंत्रता विधेयक), लव-जेहाद को रोकने के लिये लाया गया। पत्थर फेंकने वालों, आग लगाने वालों के खिलाफ प्रभावी कार्यवाही किये जाने के लिये लोक सम्पत्ति नुकसान विधेयक लाया गया। गुण्डा एवं माफिया विरोधी अभियान में 905 अपराधियों के विरूद्ध कार्यवाही की गई। 18 हजार एकड़ जमीन, जिसकी कीमत लगभग 500 करोड़ होगी, को मुक्त कराया, उस पर गरीबों के आवास निर्मित किये जायेंगे। महिला व बच्चियों के अपराध रोकने के लिए प्रभावी कदम उठाए गए ।

प्रदेश के सभी जिलों में महिला थाना एवं प्रत्येक थाने में महिला डेस्क स्थापित की गई। आपरेशन मुस्कान के तहत 6,100 बालिकाओं को बरामद किया गया है। बच्चियों के बलात्कार के मामलों में 38 अपराधियों को फांसी की सजा दिलाई गई है।

नक्सली हो या डकैत सबकी कमर तोड़ी

नक्सल गतिविधियों पर प्रभावी कार्यवाही करते हुये कई इनामी नक्सली या तो मार दिये गये या गिरफ्तार किये गये तथा 84 पुलिसकर्मियों को क्रमपूर्व पदोन्नति दी गई है। डाकू समस्या को पूरी तरह नियंत्रित किया गया है। अब कोई चिन्हित गैंग डाकुओं की आज मध्यप्रदेश में नहीं है। सिमी का नेटवर्क पूरी तरह ध्वस्त कर दिया गया है। पी.एफ.आई. की गतिविधियों को नियंत्रित किया गया है।

यहा तक की चिटफंड कंपनियों को भी राज्य में पनपने नहीं दिया गया। चिटफंड कंपनियों द्वारा निवेशकों को ठगने की घटना पर हमने सख्ती से कार्यवाही करते हुये हमने राज्यव्यापी अभियान चलाकर 55,774 निवेशकों को 179.50 करोड़ रूपये वापस दिलाया है।

यह सब ब्यौरा देने का मकसद सिर्फ इतना है कि यह समझाया जा सके कि सुशासन के लिए कानून का राज कितना आवश्यक है। प्रदेश में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह के नेतृत्व में या उससे पहले भी तत्कालीन मुख्यमंत्री उमा श्री भारती व स्व. श्री बाबू लाल गौर जी के समय भी बीजेपी सरकार ने भय मुक्त वातावरण देने को प्राथमिकता दी। आज भी यही सरकार की मुख्य प्राथमिकताओं में शामिल है। क्योंकी सुशासन के लिए भय मुक्त वातावरण अनिवार्य शर्त है। ▪

(लेखक मध्यप्रदेश शासन के गृह, जेल, विधि विधायी एवं संसदीय कार्य मंत्री हैं)

अटल भूजल योजना में छतरपुर और पन्ना जोड़े जाने पर प्रधानमंत्री को धन्यवाद

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने लोकसभा में अटल भूजल योजना के संबंध में मामला उठाया। अटल भूजल योजना में छतरपुर और पन्ना जिलों को जोड़े जाने पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत को धन्यवाद दिया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने केन बेतवा योजना को स्वीकृत कर बुन्देलखण्ड को बड़ी सौगात देने का काम किया। अब अटल भूजल योजना में खजुराहो संसदीय क्षेत्र के छतरपुर और पन्ना को जोड़कर बुन्देलखण्ड को एक और नई सौगात दी है। अटल भूजल योजना देश की पहली अनूठी योजना है। अब तक परियोजनाओं में आम सप्लाई साइड के मैनेजमेंट की होती थी। डिमांड साइड मैनेजमेंट से इस योजना का निर्माण पायलट प्रोजेक्ट के रूप में लागू किया है। इस योजना में ग्रामीण जनों के माध्यम से उन्हीं को आगे रखते हुए उनके द्वारा ही फसलों का चुनाव करने पर जोर दिया गया है, ताकि कम पानी में अधिकतम फसल ली जा सके। इस योजना के माध्यम से उल्लेखनीय प्रगति देखने को मिली है। पूरे देश में पिछले 10 साल से भूजल स्तर का अनुमान के आधार पर इस योजना से 2019-20 में 62 प्रतिशत 2020-21 में 65 प्रतिशत और वर्तमान में 70 प्रतिशत तक भूजल स्तर बढ़ने लगे हैं। पिछले 3 साल से जिस तरह भूजल स्तर बढ़ रहा है उससे निश्चित ही आशा की नई किरण दिखाई देती है। ▪

भाजपा का नगरीय निकायों में परचम - विष्णुदत्त शर्मा

62 में से 53 नगरीय निकाय में भाजपा के अध्यक्ष

मध्यप्रदेश के 62 नगरीय निकायों में हुए अध्यक्ष निर्वाचन में 53 स्थानों पर भाजपा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए है। जनता के आर्शीवाद से भारतीय जनता पार्टी लगातार जीत का परचम लहरा रही है। प्रदेश में अब तक 169 स्थानों पर संपन्न हुए अध्यक्ष निर्वाचन में से 151 स्थानों पर भारतीय जनता पार्टी के नगरीय निकाय अध्यक्ष निर्वाचित हुए है। कुछ स्थानों पर भाजपा के निर्विरोध अध्यक्ष भी चुने गए है। नगरीय निकायों में भाजपा कार्यकर्ताओं का अध्यक्ष चुना जाना जनता के विश्वास और कार्यकर्ताओं की मेहनत का परिणाम है।

छिंदवाड़ा के 5 नगरीय निकायों में भाजपा की विजय

छिंदवाड़ा में भारतीय जनता पार्टी ने 3 नगर परिषद और 2 नगर पालिका में शानदार जीत हासिल की है। छिंदवाड़ा जिले की नगर पालिका परिषद अमरवाड़ा में श्रीमती प्रीति नितिन तिवारी, चौरई नगर पालिका परिषद में श्रीमती पूर्णिमा शरद जैन, लोधीखेड़ा नगर परिषद में श्रीमती अर्चना जायसवाल, बिछुआ नगर परिषद में श्री रामचन्द्र बोगड़े, चांद नगर परिषद में श्री दान सिंह ठाकुर विजयी हुए है। चौरई नगर पालिका परिषद में 18 वर्ष बाद भारतीय जनता पार्टी ने जीत हासिल की है।

छिंदवाड़ा जिले सहित पूरे मध्यप्रदेश में जनता ने कांग्रेस को नकार दिया है। भारतीय जनता पार्टी सरकार की नीतियों और योजनाओं को जनता का समर्थन मिल रहा है।

भोपाल नगर निगम में श्री किशन सूर्यवंशी, खण्डवा नगर निगम में श्री अनिल विश्वकर्मा, इंदौर नगर निगम में श्री मुन्नालाल यादव, कटनी नगर निगम में श्री मनीष पाठक, सतना नगर निगम में श्री राजेन्द्र चतुर्वेदी के अध्यक्ष चुने गये हैं। इसी प्रकार शहडोल नगरपालिका परिषद के धनपुरी में श्रीमती रविन्द्र कौर छावड़ा, ब्यौहारी नगर परिषद श्री राजेन्द्र गुप्ता, बकहो नगर परिषद श्रीमती मौसमी केवट, नगर परिषद खांड श्रीमती सुशीला सिंह, बालाघाट नगर परिषद कटंगी में श्री योगेन्द्र बड्डू ठाकुर, बुरहानपुर नगर परिषद शाहपुर में श्रीमती साधना वीरेन्द्र तिवारी, बैतूल नगर पालिका परिषद बैतूल में श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, शाहपुर नगर परिषद में श्री विक्की नायक निर्दलीय (भाजपा समर्थित), भैंसदेही नगर परिषद में श्री मनीष सोलंकी निर्विरोध, बैतूल बाजार नगर परिषद में श्रीमती दुर्गावती संजय वर्मा, मंदसौर नगर परिषद भैंसोदा में श्रीमती गायत्री पुराणिक, सिवनी नगर परिषद छपारा में श्रीमती निशा सुरेश पटेल, बरघाट नगर परिषद में श्रीमती इमरता साहू, विदिशा नगर पालिका परिषद विदिशा में श्रीमती प्रीति शर्मा, गंजबासौदा नगर पालिका परिषद में श्रीमती शशि यादव, रायसेन नगर पालिका परिषद रायसेन में श्रीमती सविता जमुना सेन, बेगमगंज नगर पालिका परिषद श्री संदीप लोधी, मंडीदीप नगर पालिका परिषद श्रीमती प्रियंका राजेन्द्र अग्रवाल, उदयपुरा नगर परिषद में श्रीमती सीमा बृजेन्द्र सिंह राजपूत, सागर नगर परिषद बरोदियाकला में श्रीमती मीना चुन्नीलाल कुशवाहा, मकरोनिया बुजुर्ग नगर पालिका परिषद श्री मिहीलाल सूर्यवंशी, बीना नगर पालिका परिषद में श्रीमती लता सखवार, बंडा नगर परिषद में श्री वैभवराज कुथरेले, चित्रकूट नगर परिषद में सुश्री साधना पटेल, रामपुर बघेलान नगर परिषद में श्री रामसखी कचेल, उमरिया नगर परिषद के नौरोजाबाद में श्रीमती कुशलबाई, चंदिया नगर परिषद में श्री पुरूषोत्तम कौल निर्दलीय (भाजपा समर्थित), दतिया नगर परिषद सेवढ़ा में श्रीमती आशा गोविन्द सिंह नागिल, भाण्डेर नगर परिषद में श्रीमती सुनीता रामजीवन राय, इंदरगढ़ नगर परिषद में श्रीमती गौरी रामस्वरूप मंडेलिया, देवास नगर परिषद करनावद में श्री पारस राम पाटीदार, टोंकखुर्द नगर परिषद में श्रीमती अनीता सिंह छाबड़ा निर्दलीय (भाजपा समर्थित), खातेगांव नगर परिषद में श्रीमती सारिका नरेन्द्र चौधरी, सतवास नगर परिषद में श्री जयनारायण यादव, कन्नौद नगर परिषद में श्रीमती गायत्री राधेश्याम जाट निर्विरोध, भौंरासा नगर परिषद में श्री संजय कुमार जोशी, हाटपिपल्या नगर परिषद में श्रीमती चन्द्रकांता अरूण राठौड़ निर्विरोध, बागली नगर परिषद में श्रीमती सीमा कमल यादव, जबलपुर नगर पालिका परिषद पनागर में श्री प्रमोद पटेल, मझौली नगर परिषद में श्रीमती शिप्रा चौरसिया निर्विरोध, कटंगी नगर परिषद में श्री अमिताभ साहू, नर्मदापुरम के नगर पालिका परिषद सिवनी मालवा में श्री रीतेश जैन, बरखेड़ी नगर परिषद श्री हरीश मालानी निर्विरोध निर्वाचित हुए है। ▪

मध्यप्रदेश के 62 नगरीय निकायों में हुए अध्यक्ष निर्वाचन में 53 स्थानों पर भाजपा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए है। जनता के आर्शीवाद से भारतीय जनता पार्टी लगातार जीत का परचम लहरा रही है।

व्यवस्था परिवर्तन के लिए लगातार सरकार चाहिए, बूथ सशक्त बनाएं

दुनिया में वही देश आगे बढ़े हैं, जिनके सामने कोई लक्ष्य रहा है। विकास की दौड़ में भारत के पिछड़ जाने की एक बड़ी वजह यह रही कि आजादी के बाद देश के नेताओं ने कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं किया।

अब हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश को विश्वगुरु बनाने का लक्ष्य रखा है। लेकिन इसके लिए व्यवस्था में बदलाव जरूरी है और यह काम एक बार सरकार में आकर नहीं किया जा सकता। इसके लिए बार-बार पार्टी की सरकार जरूरी है और पार्टी की सरकार बनती रहे, इसके लिए हर बूथ का सशक्त होना जरूरी है। इसलिए अपने लिए, अपने देश और समाज के लिए, नई पीढ़ी के भविष्य के लिए बूथ सशक्तीकरण अभियान में जुट जाएं।

बूथ सशक्तीकरण का अभियान कोई साधारण अभियान नहीं है। यह एक दूरदर्शी अभियान है। यह अभियान सिर्फ चुनाव जीतने की तैयारी भर नहीं है। देश की व्यवस्थाओं में बदलाव के लिए और भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए भाजपा की सरकार लगातार चलती रहे, इसके लिए यह अभियान जरूरी है।

व्यवस्था परिवर्तन के लिए बूथ का सशक्त होना जरूरी: शिवप्रकाश जी

दुनिया में वही देश आगे बढ़े हैं, जिनके सामने कोई लक्ष्य रहा है। विकास की दौड़ में भारत के पिछड़ जाने की एक बड़ी वजह यह रही कि आजादी के बाद देश के नेताओं ने कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं किया। अब हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश को विश्वगुरु बनाने का लक्ष्य रखा है। लेकिन इसके लिए व्यवस्था में बदलाव जरूरी है और यह काम एक बार सरकार में आकर नहीं किया जा सकता। इसके लिए बार-बार पार्टी की सरकार जरूरी है और पार्टी की सरकार बनती रहे, इसके लिए हर बूथ का सशक्त होना जरूरी है। इसलिए अपने लिए, अपने देश और समाज के लिए, नई पीढ़ी के भविष्य के लिए बूथ सशक्तीकरण अभियान में जुट जाएं। यदि हम हर बूथ को 51 प्रतिशत वोट शेयर के लायक बना दें, तो हमें कोई चुनाव हरा नहीं सकता।

कांग्रेस की सरकारों ने दलितों के मसीहा डॉ. अम्बेडकर को चुनाव हराने का भरपूर प्रयास किया। उन्हें उस सम्मान से वंचित किया, जिसके वे हकदार थे, उनके बनाए संविधान की भावनाओं को कुचला। यह सत्य समाज को पता होना ही चाहिए। हमें गरीब कल्याण की ब्रांडिंग नहीं करना, लेकिन हमें सत्य को, अपनी सरकारों के कामों को जनता तक पहुंचाना है और इसके लिए बूथ सशक्तीकरण अभियान एक महत्वपूर्ण पहल है।

बूथ सशक्तीकरण एक दूरदर्शी योजना, इस पर गंभीरता से काम करें: शिवराजसिंह चौहान

बूथ सशक्तीकरण अभियान पार्टी नेतृत्व की एक दूरदर्शी योजना है। हालांकि इसका काम आसान है, लेकिन इसे पूरी गंभीरता से करना होगा।

हम अक्सर चुनाव जीत जाते हैं, लेकिन कमजोर बूथों पर ध्यान नहीं देते। हमें इन बूथों को खोजकर कमजोरी के कारणों का पता लगाना होगा। कमजोर बूथ दो तरह के होते हैं-एक स्थायी कमजोर बूथ और दूसरा अस्थायी कमजोर बूथ। अस्थायी कमजोर बूथ तात्कालिक परिस्थितियों की वजह से होते हैं और बदलते रहते हैं। लेकिन हमें अपना ध्यान स्थायी कमजोर बूथों पर केंद्रित करना है और उनकी कमजोरी के कारणों का पता लगाकर उन्हें दूर करना है। यही इस अभियान का उद्देश्य है। सांसदों और विधायकों को बूथ सशक्तीकरण के लिए लगातार प्रवास करना चाहिए और इस अभियान को समय सीमा में पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। हमारी कमियों के गंभीरतापूर्वक विश्लेषण और उन्हें दूर करने पर यह दूरदर्शी योजना पार्टी के लिए रामबाण सिद्ध हो सकती है।

नगर निकाय और पंचायत चुनावों में हमारे प्रतिनिधि बड़ी संख्या में जीतकर आए हैं, पार्टी को ऐतिहासिक सफलता मिली है, इसके लिए सभी कार्यकर्ताओं को बधाई। लेकिन बड़ी संख्या में जीतकर आए जनप्रतिनिधियों की ऊर्जा का सदुपयोग करने के लिए उन्हें पर्याप्त प्रशिक्षण देना और एक सकारात्मक दिशा देना जरूरी है, जिसके लिए सरकार के साथ-साथ पार्टी के स्तर पर भी प्रयास करना होंगे।

बूथों को सशक्त करने में जुट जाएं कार्यकर्ता - विष्णुदत्त शर्मा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा जी ने प्रत्येक लोकसभा और विधानसभा के जिन कमजोर बूथों को सशक्त करने की जो परिकल्पना की है, उसे बूथ सशक्तिकरण अभियान से हमें पूरा करना है। अधिकांश राज्यों में यह अभियान पूरा हो चुका है, लेकिन स्थानीय,

ग्रामीण एवं नगरीय निकाय चुनाव के कारण मध्यप्रदेश संगठन के इस अभियान की शुरूआत अब होगी। यह अभियान प्रधानमंत्री जी और राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने पूरी गंभीरता के साथ शुरू किया है, उसी गंभीरता के साथ हमें इस योजना में जुटना है।

बूथ विस्तारक अभियान में 64 हजार बूथों में से 90 प्रतिशत बूथों को डिजिटल बनाया। जिसके सफल परिणाम ग्रामीण एवं नगरीय निकाय चुनाव में देखने को मिले। सभी लोगों के प्रयासों और मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान के नेतृत्व में बूथ के कार्यकर्ताओं ने परिश्रम की पराकाष्ठा की और केन्द्र और राज्य सरकार की योजनाएं नीचे तक पहुंची, जिसके कारण हमें ऐतिहासिक जीत मिली है। जिन स्थानों पर हम पिछड़े हैं, वहां मंथन कर कमियों को दूर करेंगे। बूथ विस्तारक अभियान में पार्टी के 51 प्रतिशत वोट शेयर का जो टारगेट लिया था, पार्षदों के चुनाव में हमने उससे अधिक 53 प्रतिशत वोट हासिल किए हैं। 22 हजार पंचायतों में से 20 हजार में हमारे सरपंच हैं तथा 52 में से 42 जिला पंचायतों में हमारे अध्यक्ष बने हैं।

तीन चरणों में होगी बूथ सशक्तीकरण योजना - लालसिंह आर्य

किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कोई माध्यम होता है। पिछले लोकसभा चुनाव के दौरान 120 लोकसभा में इसी प्रकार बूथ को सशक्त करने का काम किया गया था, जिसके परिणाम स्वरूप 70 लोकसभाओं में हमें विजयश्री हासिल हुई थी। तीन चरणों में होने वाला यह बूथ सशक्तीकरण अभियान लोकसभा चुनाव की तैयारियों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। केन्द्रीय नेतृत्व ने चिन्हित बूथों पर इस योजना को शुरू किया है। सरल एप के माध्यम से बूथवार जानकारी हमें अपलोड करनी है। आगामी 15 दिनों के भीतर हमें इस काम को पूरा करना है। मध्यप्रदेश संगठन हमेशा अभियानों में आगे रहा है। बूथ सशक्तिकरण अभियान में भी हम पूरे देश में अव्वल स्थान हासिल करेंगे।

अभियान को सफल बनाने के लिए प्रचार-प्रसिद्धि से दूर रहकर काम करें: हितानंद जी

बूथ सशक्तीकरण अभियान तीन चरणों में होगा। पहले चरण में टोली का चयन, बूथों का चयन और कार्यकर्ताओं में कार्य विभाजन होगा। दूसरे चरण में राजनीतिक विश्लेषण होगा। तीसरे चरण में घर-घर जाकर विभिन्न सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों और की वोटर्स से संपर्क होगा। जिस तरह पार्टी के अन्य अभियानों में मध्यप्रदेश आगे रहा है, उसी तरह इस अभियान को भी समय सीमा में पूरा करेंगे, लेकिन इसके लिए प्रचार और प्रसिद्धि से दूर रहकर काम करना होगा। ▪

भाजपा सिर्फ सत्ता के लिए नहीं, देश-दुनिया के प्रति जिम्मेदारी भी निभाती है

मुख्यमंत्री, प्रदेश अध्यक्ष ने की 'हरा-भरा मध्यप्रदेश' अभियान की शुरुआत

अभियान के दौरान प्रदेश भर में 75 लाख पौधे रोपेंगे युवा मोर्चा कार्यकर्ता

भारतीय जनता पार्टी सिर्फ सत्ता के लिए राजनीति में नहीं है, बल्कि उसके कार्यकर्ता समाज और देश-दुनिया के प्रति अपनी जिम्मेदारी भी समझते हैं। भाजपा युवा मोर्चा का 'हरा-भरा मध्यप्रदेश' ऐसा ही अभियान है, जिसके दौरान मोर्चा कार्यकर्ता पर्यावरण संरक्षण तथा ग्लोबल वार्मिंग जैसे संकट का सामना करने के लिए 75 लाख पौधे रोपेंगे।

भाजपा देश को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है- शिवराजसिंह चौहान

भाजपा सिर्फ सत्ता चलाने के लिए नहीं, बल्कि देश को आगे बढ़ाने को लिए प्रतिबद्ध है। आज पूरा विश्व ग्लोबल वार्मिंग की समस्या का सामना कर रहा है। इसलिए प्रकृति को बचाने के लिए हमें पेड़ लगाकार हरा भरा राष्ट्र बनाना है। पेड़ हमारे जीवनदाता हैं। पेड़ लगाना मेरे जीवन का हिस्सा और संस्कार बन गया है। मेरे दिन की शुरुआत पौधारोपण से होती है। युवा मोर्चा के साथियों के साथ मेरा सभी नागरिकों से निवेदन है कि अपने परिवार के साथ एक पेड़ अवश्य लगाएँ।

भारत पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में अग्रदूत बना- विष्णुदत्त शर्मा

भाजपा कार्यकर्ता संगठन के साथ-साथ विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों में भी अपनी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आज भारत पर्यावरण संरक्षण की दिशा में दुनिया का अग्रदूत बनकर उभरा है, तो मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी प्रतिदिन पौधारोपण कर लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरुक कर रहे हैं। पर्यावरण की रक्षा की दिशा में 'हरा भरा मध्यप्रदेश' एक सराहनीय पहल है, जिसके लिए युवा मोर्चा कार्यकर्ताओं को बधाई और शुभकामनाएं।

मोर्चा कार्यकर्ता तीन चरणों में रोपेंगे 75 लाख पौधे: वैभव पवार

इस महा अभियान के लिए प्रदेश स्तरीय संचालन समिति गठित की गई है जो वार्ड, मंडल, विधानसभा, एवं जिला प्रभारियों से समन्वय स्थापित करेगी। इस अभियान के अंतर्गत तीन चरणों में 75 लाख पौधे रोपे जाएंगे।

पहला चरण 11 सितम्बर से शुरू होगा और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन 17 सितंबर तक चलेगा। द्वितीय चरण 18 सितम्बर से शुरू होगा और 25 सितंबर को श्रद्धेय पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की जयंती तक चलेगा। तृतीय चरण 26 सितम्बर से शुरू होगा और महात्मा गांधी जी की जयंती 02 अक्टूबर तक चलेगा। 17 सितम्बर, 25 सितम्बर एवं 02 अक्टूबर को पौधरोपण के वृहद अभियान चलाए जाएंगे। इस अभियान से जुड़ने के लिए लोग www.mpbjym.org वेबसाइट पर अपना रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं। इसके अलावा 9111003009 पर मिस्ड कॉल या व्हाट्सएप पर मैसेज कर अपना पंजीयन कर सकते हैं। ▪

निकाय अध्यक्षों में जीत सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं और कार्यकर्ताओं की मेहनत का परिणाम - विष्णुदत्त शर्मा

प्रदेश अध्यक्ष एवं संगठन महामंत्री ने दी नवनिर्वाचित नगरीय निकाय अध्यक्षों को बधाई

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने शिवपुरी जिले के बैराड, कोलारस, पोहरी और मगरोनी नगर परिषद अध्यक्ष एवं भोपाल की बैरसिया नगर पालिका परिषद अध्यक्ष चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के विजयी होने पर नवनिर्वाचित अध्यक्षों को बधाई दी।

श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं और कार्यकर्ताओं की मेहनत का परिणाम है कि निकाय चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को ऐतिहासिक जीत हासिल हुई। बड़ी संख्या में भाजपा के पार्षद चुने गए है। नगरपालिका और नगर परिषदों के अध्यक्ष निर्वाचन में भारतीय जनता पार्टी की जीत जनता के विश्वास और पार्टी नेतृत्व की लोकप्रियता का परिणाम है।

भोपाल की बैरसिया नगरपालिका परिषद में श्रीमती तनुश्री कुलदीप राठौर, ग्वालियर की डबरा नगर पालिका परिषद में श्रीमती लक्ष्मी देवी, शिवपुरी की बैराड नगर परिषद में श्रीमती मालती रावत, कोलारस नगर परिषद में श्रीमती प्रियंका शिवहरे, पोहरी नगर परिषद में श्रीमती रश्मि नेपाल सिंह वर्मा एवं मगरोनी नगर परिषद में श्री शंकर कौरव अध्यक्ष निर्वाचित हुए है। इनमें अधिकांश स्थानों पर महिला शक्ति को अध्यक्ष के रूप में प्रतिनिधित्व मिला है।

प्रदेश अध्यक्ष एवं प्रदेश संगठन महामंत्री ने सभी नवनिर्वाचित निकाय अध्यक्षों को शुभकामनाएं देते हुए नगर विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की आशा व्यक्त की है।

ट्रिपल इंजन की सरकार नगर विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी

प्रदेश अध्यक्ष ने 36 निकायों में चुने अध्यक्षों को दी बधाई

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा और प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानन्द जी ने 37 निकायों में हुए अध्यक्ष चुनाव में से 36 स्थानों पर भारतीय जनता पार्टी के पार्षदों के विजय होने पर उन्हें बधाई दी है। केंद्र और राज्य में भाजपा को चुना अब ग्रामीण निकायों के साथ नगर में भी भाजपा को आर्शीवाद देकर सेवा का अवसर दिया है। भाजपा की ट्रिपल इंजन की सरकार नगर विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।

उज्जैन, सागर नगर निगम सहित 3 नगर पालिका और 31 नगर परिषदों में भाजपा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए है। यह जीत जनता के विश्वास, कार्यकर्ताओं के परिश्रम और भाजपा की केंद्र और राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की सफलता की जीत है।

सागर में श्री वृन्दावन अहिरवार और उज्जैन में श्रीमती कलावती यादव नगर पालिका निगम अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं। धार के बदनावर नगर परिषद में श्रीमती मीना शेखर यादव निर्विरोध, माण्डव नगर परिषद में श्रीमती मालती जयराम, खण्डवा के नगर परिषद मूंदी में श्रीमती ज्योति बाला राठौड़, पंधाना नगर परिषद में श्रीमती सुनीता जगधन्ये, बालाघाट नगर परिषद लांजी में श्रीमती रेखा ताराचंद, कटनी के नगर परिषद विजयराघोगढ़ में श्रीमती वसुधा मनीष मिश्रा निर्विरोध, केमौर नगर परिषद श्रीमती मनीषा अजय शर्मा निर्विरोध, मुरैना नगर पालिका परिषद के अम्बाह में श्रीमती अंजली जैन, बानमोर नगर परिषद में श्रीमती गीता लक्ष्मण जाटव, जौरा नगर परिषद में श्री राजू अखिल माहेश्वरी निर्विरोध, निवाड़ी नगर परिषद ओरछा में श्री शिशुपाल सिंह राजपूत, पृथ्वीपुर नगर परिषद में श्रीमती नीलू केशव खटिक, तरीचरकलां नगर परिषद में श्री रोहित सूत्रकार (निदर्लीय भाजपा समर्थित), हरदा नगर परिषद सिराली में श्रीमती अनिता कैलाशचंद, खिरकिया नगर परिषद में श्रीमती इंद्रजीत कौर खनूजा, रीवा नगर परिषद नईगढ़ी में श्रीमती नागिता गुप्ता, नगर परिषद गुढ़ में श्रीमती अर्चना सिंह, नगर परिषद सिरमौर में श्री संदीप सिंह, बैकुण्ठपुर नगर परिषद में श्रीमती मीना तीरथ गुप्ता, त्यौंथर नगर परिषद में श्रीमती कृष्णावती शुक्ला (निर्दलीय भाजपा समर्थित), रायसेन नगर परिषद सांची में श्री पप्पू रेवाराम अहिरवार, औबेदुल्लागंज नगर परिषद में श्रीमती लक्ष्मी सोनू चौकसे, सिलवानी नगर परिषद में श्रीमती रेशु जैन, बाडी नगर परिषद में श्रीमती ममता चौहान निर्विरोध,

नर्मदापुरम नगर पालिका परिषद इटारसी में श्री पंकज चौरे, नीमच के नगर पालिका परिषद नीमच में श्रीमती स्वाति गौरव चौपड़ा, जावद नगर परिषद में श्री सोहनलाल माली निर्विरोध, सरवनिया महाराज नगर परिषद में श्री रूपेन्द्र सिंह निर्विरोध, मनासा नगर परिषद में श्रीमती सीमा अजय तिवारी, कुकड़ेश्वर नगर परिषद में श्रीमती उर्मिला पटवा, अठाना नगर परिषद में श्रीमती रिंका सचिन जैन, टीकमगढ़ के नगर परिषद खरगापुर सुश्री दीप्ती कोरी, बड़ागांव धसान नगर परिषद में श्री भारती प्रजापति निर्विरोध, जतारा नगर परिषद में श्री अनुराग सुनील नायक अध्यक्ष निर्वाचित हुए है। ▪

जो प्रण लिया, वो पूरा हो गया

भुज, गुजरात में कई परियोजनाओं की आधारशिला रखने और राष्ट्र को समर्पित करने के अवसर पर प्रधानमंत्री का संबोधन

मन बहुत सारी भावनाओं से भरा हुआ है। भुजिये डूंगर में स्मृतिवन मेमोरियल और अंजार में वीर बाल स्मारक का लोकार्पण, कच्छ की, गुजरात की, पूरे देश की साझी वेदना का प्रतीक है। इनके निर्माण में सिर्फ पसीना ही नहीं बल्कि कितने ही परिवारों के आंसुओं ने भी इसके ईंट-पत्थरों को सींचा है।

मुझे याद है कि अंजार में बच्चों के परिजनों ने बाल स्मारक बनाने का विचार रखा था। तब हम सभी ने ये तय किया था कि कारसेवा से इसको पूरा करेंगे। जो प्रण हमने लिया था, वो आज पूरा हो गया है। जिन्होंने अपनों को खोया, अपने बच्चों को खोया, मैं बहुत भारी मन से इन स्मारकों को उन्हें समर्पित करता हूं। कच्छ के विकास से जुड़े 4 हजार करोड़ रुपए से अधिक के अन्य प्रोजेक्टस का भी शिलान्यास और लोकार्पण हुआ है। इनमें पानी, बिजली, सड़क और डेयरी से जुड़े प्रोजेक्ट हैं। ये गुजरात के, कच्छ के विकास के लिए डबल इंजन सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। मां आशापुरा के दर्शन और आसान हों, इसके लिए आज नई सुविधाओं का शिलान्यास भी किया गया है। मातानो मढ़ इसके विकास की ये सुविधाएं जब तैयार हो जाएंगी, तो देश भर से आने वाले भक्तों को नया अनुभव मिलेगा। हमारे लोकप्रिय मुख्यमंत्री भूपेंद्र भाई के नेतृत्व में कैसे कच्छ आगे बढ़ रहा है, गुजरात आगे बढ़ रहा है, ये उसका भी प्रमाण है।

भुज की धरती पर आया और स्मृति वन जा रहा था, पूरे रास्ते भर कच्छ ने जो प्यार बरसाया, जो आर्शीवाद दिए, मैं धरती को भी नमन करता हूं और यहां के लोगों को भी नमन करता हूं। यहां आने में मुझे जरा देरी हो गई, मैं भुज तो समय पर आ गया था लेकिन वो रोड शो में जो स्वागत चला और बाद में मैं स्मृतिवन मैमोरियल में गया, वहां से निकलने का मन ही नहीं करता था।

दो दशक पहले कच्छ ने जो कुछ झेला और इसके बाद कच्छ ने जो हौसला दिखाया, उसकी हर झलक इस स्मृति वन में है। जिस प्रकार जीवन के लिए कहा जाता है

वयम अमृतास: के पुत्र:

जैसी हमारी कल्पना है, **चरैवेति-चरैवेति** का मंत्र हमारी प्रेरणा है, उसी प्रकार ये स्मारक भी आगे बढ़ने की शाश्वत भावना से प्रेरित है।

दो दशक पहले कच्छ ने जो कुछ झेला और इसके बाद कच्छ ने जो हौसला दिखाया, उसकी हर झलक इस स्मृति वन में है। जिस प्रकार जीवन के लिए कहा जाता है

वयम अमृतास: के पुत्र:

जैसी हमारी कल्पना है, **चरैवेति-चरैवेति** का मंत्र हमारी प्रेरणा है, उसी प्रकार ये स्मारक भी आगे बढ़ने की शाश्वत भावना से प्रेरित है।

जब मैं स्मृति वन के अलग-अलग हिस्सों में गुजर रहा था तो बहुत सारी पुरानी यादें मन-मस्तिष्क में आ रही थीं।

अमेरिका में 9/11 जो बहुत बड़ा आतंकी हमला हुआ था, उसके बाद वहां एक स्मारक बनाया गया है, "Ground Zero", मैंने वो भी देखा है। मैंने जापान में हिरोशिमा की त्रासदी के बाद उसकी स्मृति को संजोने वाला एक म्यूजियम बना है वो भी देखा है और आज स्मृतिवन देखने के बाद मैं देशवासियों को बड़ी नम्रता के साथ कहना चाहता हूं, पूरे देश के लोगों को कहता हूं कि हमारा स्मृति वन दुनिया के अच्छे से अच्छे ऐसे स्मारकों की तुलना में एक कदम भी पीछे नहीं है।

यहां प्रकृति, पृथ्वी, जीवन, इसकी शिक्षा-दीक्षा की पूरी व्यवस्था है। मैं कच्छ के लोगों से कहूंगा जब आपके यहां कोई मेहमान आए तो स्मृति वन देखे बिना जाना नहीं चाहिए। अब आपके इस कच्छ में मैं शिक्षा विभाग को भी कहूंगा कि जब स्कूल के बच्चे टूर करते हैं, वो एक दिन स्मृति वन के लिए भी रखें ताकि उनको पता चले कि पृथ्वी और प्रकृति का व्यवहार क्या होता है।

मुझे याद है, भूकंप जब आया था, 26 जनवरी का वो दिन, मैं दिल्ली में था। भूकंप का एहसास दिल्ली में भी हुआ था। और कुछ ही घंटों में मैं दिल्ली से अहमदाबाद पहुंचा और दूसरे दिन मैं कच्छ पहुंच गया। तब मैं मुख्यमंत्री नहीं था, एक साधारण राजनीतिक भारतीय जनता पार्टी का छोटा सा कार्यकर्ता था। मुझे नहीं पता था कि मैं कैसे और कितने लोगों की मदद कर पाऊंगा। लेकिन मैंने ये तय किया कि मैं इस दुख की घड़ी में आप सबके बीच में रहूंगा और जो भी संभव होगा, मैं आपके दुख में हाथ बंटाने का प्रयास करूंगा।

मुझे पता तक नहीं था, अचानक मुझे मुख्यमंत्री बनना पड़ा और जब मुख्यमंत्री बना, तो उस सेवा कार्यों के अनुभव मेरे बहुत काम आए। उस समय की एक बात और मुझे याद आती है। भूकंप पीड़ितों की मदद के लिए तब विदेशों से भी अनेक लोग यहां आए हुए थे। उनको इस बात की हैरानी होती थी कि कैसे यहां निस्वार्थ भाव से स्वयंसेवक जुटे हुए हैं, उनकी धार्मिक, सामाजिक संस्थाएं राहत और बचाव में लगी हुई हैं। वे मुझे बताते थे कि दुनिया में बहुत जगह पर वो जाते हैं लेकिन ऐसा सेवा भाव शायद हमने पहले कभी नहीं देखा। सामूहिकता की यही शक्ति है जिसने उस मुश्किल समय में कच्छ को, गुजरात को संभाला।

आज मुझे जब कच्छ की धरती पर आया, बहुत लंबा नाता रहा है मेरा आपसे, बहुत गहरा नाता रहा है। अनगिनत नामों की स्मृतियां मेरे

सामने उभर करके आती हैं। कितने ही लोगों के नाम याद आ रहे हैं। हमारे धीरुभाई शाह, ताराचंद छेड़ा, अनंत भाई दवे, प्रताप सिंह जाड़ेजा, नरेंद्र भाई जाड़ेजा, हीरा लाल पारिख, भाई धनसुख ठक्कर, रसिक ठक्कर, गोपाल भाई, अपने अंजार के चंपक लाल शाह अनगिनत लोग जिनके साथ कंधे से कंधा मिला करके काम करने का सौभाग्य मिला था, आज वो इस दुनिया में नहीं हैं। लेकिन उनकी आत्मा जहां भी होगी, कच्छ के विकास के लिए उनको संतुष्टि का भाव होता होगा, वो हमें आशीर्वाद देते होंगे।

और आज, आज भी जब मेरे साथियों को मिलता हूं, चाहे हमारे पुष्पदान भाई हों, हमारे मंगलदादा धनजी भाई हों, हमारे जीवा सेठ जैसे व्यक्तित्व, आज भी कच्छ के विकास को प्रेरणा दे रहे हैं। कच्छ की एक विशेषता तो हमेशा ही रही है, और जिसकी चर्चा मैं हमेशा करता हूं। यहां रास्ते चलते भी कोई व्यक्ति एक सपना बो जाए तो पूरा कच्छ उसको वटवृक्ष बनाने में जुट जाता है। कच्छ के इन्हीं संस्कारों ने हर आशंका, हर आकलन को गलत सिद्ध किया। ऐसा कहने वाले बहुत थे कि अब कच्छ कभी अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो पाएगा। लेकिन आज कच्छ के लोगों ने यहां की तस्वीर पूरी तरह बदल दी है।

मुख्यमंत्री के रूप में मेरी पहली दीवाली और भूकंप के बाद कच्छ के लोगों के लिए भी पहली दीवाली, मैंने उस दीवाली को नहीं मनाया था। मेरी सरकार के किसी मंत्री ने दीवाली नहीं मनाई थी और हम सब भूकंप के बाद जो पहली दीवाली, अपनों की याद आने की बहुत स्वाभाविक स्थिति थी, मैं आपके बीच आकर रहा और आप जानते हैं मैं वर्षों से दीवाली बॉर्डर पर जाकर, सीमा पर जाकर देश के जवानों के साथ बिताकर आया हूं। लेकिन उस वर्ष मैंने वो मेरी परंपरा को छोड़ करके भूकंप पीड़ितों के साथ दीवाली मनाने के लिए मैं उनके बीच रहने आया था। मुझे याद है मैं पूरा दिन भर चौबारी में रहा था और फिर शाम को त्रम्बो गांव चला गया था। मेरे साथ मेरी कैबिनेट के सारे सदस्य, गुजरात में जहां-जहां भूकंप की आपदा आई थी, वहीं जा करके उन्होंने दीवाली के दिन सब दुख में शरीक हुए थे।

मुझे याद है, मुश्किल भरे उन दिनों में मैंने कहा था और बड़े आत्मविश्वास के साथ कहा था कि हम आपदा को अवसर में बदलकर रहेंगे। मैंने ये भी कहा था आपको जो रण दिखता है ना, उस रण में मुझे भारत का तोरण दिखता है और आज जब मैं कहता हूं, लाल किले से कहता हूं, 15 अगस्त को कहता हूं कि 2047 भारत developed कंट्री बनेगा। जिन्होंने मुझे कच्छ में सुना है, देखा है, 2001-02 भूकंप के उसका कालखंड में विपरीत परिस्थिति में मैंने जो कहा था, वो आज आपकी आंखों के सामने सत्य बन करके उभरा हुआ है। इसीलिए कहता हूं आज जो हिन्दुस्तान, आपको बहुत कुछ कमियां नजर आती होंगी, 2047 में, मैं आज सपना देख रहा हूं दोस्तों, जैसा 2001-02 में मौत की चादर ओढ़ करके वो जो हमारा कच्छ था, तब जो सपने देखे, आज करके दिखाया, 2047 में हिन्दुस्तान भी करके दिखाएगा।

और कच्छ के लोगों ने, भुज के लोगों की भुजाओं ने इस पूरे क्षेत्र का कायाकल्प करके दिखा दिया है। कच्छ का कायाकल्प भारत ही

नहीं बल्कि पूरे विश्व के बड़े शिक्षा संस्थानों के लिए, रिसर्च इंस्टिट्यूट के लिए एक रिसर्च का विषय है। 2001 में पूरी तरह तबाह होने के बाद से कच्छ में जो काम हुआ है, वो अकल्पनीय हैं।

कच्छ में 2003 में क्रांतिगुरू श्यामजी कृष्ण वर्मा यूनिर्वसिटी बनी तो वहीं 35 से भी ज्यादा नए कॉलेजों की भी स्थापना की गई है। इतना ही नहीं, इतने कम समय में 1000 से ज्यादा अच्छे नए स्कूल बनाए गए।

भूकंप में कच्छ का जिला अस्पताल पूरी तरह जमीदोंज हो गया था। आज कच्छ में भूकंप-रोधी आधुनिक अस्पताल है, 200 से ज्यादा नए चिकित्सा केंद्र काम कर रहे हैं। जो कच्छ हमेशा सूखे की चपेट में रहता था, जहां पानी जीवन की सबसे बड़ी चुनौती थी, वहां आज कच्छ जिले के हर घर में नर्मदा का पानी पहुंचने लगा है।

हम कभी आस्था और श्रद्धा के नाते गंगाजी में स्नान करते हैं, यमुनाजी में, सरयु में और नर्मदा जी में भी और यहां तक कहते हैं नर्मदा जी तो इतनी पवित्र हैं कि नाम स्मरण से पुण्य मिलता है। जिस नर्मदा जी के दर्शन करने के लिए लोग यात्राएं करते थे, आज वो मां नर्मदा कच्छ की धरती पर आई है।

कोई कल्पना नहीं कर सकता था कि कभी टप्पर, फतेहगढ़ और सुवाई बांधों में भी नर्मदा का पानी पहुंच सकता है। लेकिन ये सपना भी कच्छ के लोगों ने साकार करके दिखाया है। जिस कच्छ में सिंचाई परियोजना की कोई सोच नहीं सकता था, वहां हजारों चेक डैम्स बनाकर, सुजलाम-सुफलाम जल अभियान चलाकर हजारों हेक्टेयर जमीन को सिंचाई के दायरे में लाया जा चुका है।

पिछले महीने जब रायण-गांव में मां-नर्मदा का पानी पहुंचा, तो लोगों ने जिस प्रकार उत्सव मनाया उसको देखकर दुनिया में अनेक लोगों को आश्चर्य हुआ। ये आश्चर्य इसलिए था क्योंकि उनको इस बात का आभास नहीं है कि कच्छ के लिए पानी का मतलब क्या होता है। एक जमाना था बच्चे के जन्म के बाद चार-चार साल की उम्र हो जाए उसने बारिश नहीं देखी होती थी। ये मेरे कच्छ ने गुजारा, जिंदगी कठिनाइयों से गुजारी है। कच्छ में कभी नहरें होंगी, टपक सिंचाई की सुविधा होगी, इसके बारे में 2 दशक पहले कोई बात करता था, तो विश्वास करने वाले बहुत कम लोग मिलते थे।

मुझे याद है कि 2002 में जब गुजरात गौरव यात्रा के दौरान मांडवी आया था, तो मैंने कच्छवासियों से आर्शीवाद मांगा था। आर्शीवाद इस बात का कि मैं कच्छ के अधिकतर हिस्सों को मां-नर्मदा के पानी से जोड़ सकूं । आपके आर्शीवाद ने जो शक्ति दी उसी का परिणाम है आज हम इस सारे अच्छे अवसर के भागीदार बन रहे हैं। आज कच्छ-भुज नहर का लोकार्पण हुआ है। इससे सैकड़ों गांवों के हजारों किसान परिवारों को लाभ हुआ है।

कच्छ के लोगों की भाषा बोली इतनी मीठी है, कि जो एक बार यहां आ गया, वो कच्छ को भूल नहीं पाता। और मुझे तो सैकड़ों बार कच्छ आने का सौभाग्य मिला है। यहां की दाबेली, भेलपुरी, हमारी कच्छ की पतली छाछ, कच्छ की खारे, केसर का स्वाद, क्या कुछ नहीं है। पुरानी कहावत है कि मेहनत का फल मीठा होता है। कच्छ ने इस कहावत को जमीन पर उतारकर दिखाया है।

मुझे खुशी है कि फल उत्पादन के मामले में कच्छ आज पूरे गुजरात का नंबर-वन जिला बन गया है। यहां के ग्रीन डेट्स, केसर आम, अनार और कमलम, ऐसे कितने ही फल देश में ही नहीं बल्कि विदेश में भी अपनी मिठास लेकर जा रहे हैं।

मैं वो दिन भूल नहीं सकता जब कच्छ में रहने वाले लोग ना चाहते हुए भी कभी पशुओं को ले करके मीलों तक पलायन कर जाते थे या कभी पशु छोड़कर खुद जाने के लिए मजबूर हो जाते थे। साधन ना होने की वजह से, संसाधन ना होने की वजह से, पशुधन का त्याग इस पूरे क्षेत्र की मजबूरी बना हुआ था। जिस क्षेत्र में पशुपालन सैकड़ों वर्षों से आजीविका का साधन रहा हो, वहां ये स्थिती बहुत ही चिंता में डालने वाली थी। लेकिन आज इसी कच्छ में किसानों ने पशुधन से धन बढ़ाना शुरू कर दिया है। बीस साल में कच्छ में दूध का उत्पादन तीन गुना से ज्यादा बढ़ गया है।

जब मैं यहां मुख्यमंत्री के रूप में काम करता था, तब साल 2009 में यहां सरहद डेयरी की शुरुआत की गई थी। उस समय में ये डेयरी का एक दिन में 1400 लीटर से भी कम दूध जमा होता था। जब उसका प्रारंभ किया 1400 लीटर से भी कम। लेकिन आज ये सरहद डेयरी हर रोज 5 लाख लीटर तक दूध किसानों से जमा करती है। आज इस डेयरी की वजह से हर साल किसानों की जेब में करीब-करीब 800 करोड़ रुपए उनकी जेब में जा रहे हैं, मेरे कच्छ के किसानों की जेब में।

आज अंजार तालुका के चंद्राणी गांव में सरहद डेयरी के जिस नए आधुनिक प्लांट का लोकार्पण हुआ है, उससे भी किसानों-पशुपालकों को बहुत फायदा होने वाला है। इसमें जो आधुनिक टेक्नॉलॉजी है, उससे दूध के ऐसे उत्पाद बनेंगे जो किसानों की आय बढ़ाने में मदद करेंगे।

कच्छ ने सिर्फ खुद को ऊपर उठाया, इतना ही नहीं है,लेकिन पूरे गुजरात को विकास की एक नई गति दी है। एक दौर था जब गुजरात पर एक के बाद एक संकट आ रहे थे। प्राकृतिक आपदा से गुजरात निपट ही रहा था, कि साजिशों का दौर शुरु हो गया। देश और दुनिया में गुजरात को बदनाम करने के लिए, यहां निवेश को रोकने के लिए एक के बाद एक साजिशें की गईं। ऐसी स्थिति में भी एक तरफ गुजरात देश में डिजास्टर मैनेजमेंट एक्ट बनाने वाला पहला राज्य बना। इसी एक्ट की प्रेरणा से पूरे देश के लिए भी ऐसा ही कानून बना। कोरोना के संकटकाल में इसी कानून ने हर सरकार और प्रशासन की बहुत मदद की।

हर साजिश को पीछे छोड़ते हुए, गुजरात ने नई औद्योगिक नीति लाकर गुजरात में औद्योगिक

विकास की नई राह चुनी थी। इसका बहुत अधिक लाभ कच्छ को हुआ, कच्छ में निवेश को हुआ। कच्छ के औद्योगिक विकास के लिए लाखों करोड़ रुपए का निवेश हो चुका है। आज कच्छ में दुनिया के सबसे बड़े सीमेंट प्लांट हैं। वेल्डिंग पाइप मैन्यूफैक्चरिंग के मामले में कच्छ पूरी दुनिया में दूसरे नंबर पर है। पूरी दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा टेक्सटाइल प्लांट कच्छ में ही है। कच्छ में एशिया का पहला स्पेशल इकॉनॉमिक जोन बना है। कंडला और मुंद्रा पोर्ट में देश का 30 प्रतिशत कार्गो हैंडल होता है। कच्छ वो इलाका है जहां से भारत का 30 प्रतिशत से ज्यादा नमक पैदा होता है, हिन्दुस्तान का कोई लाल ऐसा नहीं होगा जिसने कच्छ का नमक न खाया हो। जहां 30 से ज्यादा सॉल्ट रिफाइनरीज हैं।

एक समय था जब कच्छ में कोई सोलर पावर, विंड पावर के बारे में सोच भी नहीं पाता था। आज कच्छ में करीब-करीब ढाई हजार मेगावॉट बिजली सोलर और विंड एनर्जी से पैदा होती है। आज कच्छ के खावड़ा में सबसे बड़ा सोलर विंड हाइब्रिड पार्क बन रहा है। देश में आज जो ग्रीन हाइड्रोजन अभियान चल रहा है, उसमें गुजरात की बहुत बड़ी भूमिका है। इसी तरह जब गुजरात, दुनिया भर में ग्रीन हाइड्रोजन कैपिटल के रूप में अपनी पहचान बनाएगा, तो उसमें कच्छ का बहुत बड़ा योगदान होगा। कच्छ का ये क्षेत्र, भारत ही नहीं पूरी दुनिया के लिए उदाहरण है। दुनिया में ऐसी जगहें कम ही होती हैं, जो खेती-पशुपालन में आगे हो, औद्योगिक विकास में आगे हो, टूरिज्म में आगे हो, कला-संस्कृति में आगे हो। कच्छ के पास क्या नहीं है। कच्छ ने, गुजरात ने अपनी विरासत को पूरे गौरव से अपनाने का उदाहरण भी देश के सामने रखा है।

इस बार 15 अगस्त पर लाल किले से मैंने देश से अपनी विरासत पर और गर्व करने का आव्हान किया है। पिछले 7-8 वर्षों में अपनी विरासत के प्रति गौरव का जो भाव प्रबल हुआ है, वो आज भारत की ताकत बन रहा है। आज भारत उस मनोस्थिति से बाहर निकला है जब अपनी धरोहरों की बात करने वाले को हीन भावना से भर दिया जाता था।

अब देखिए, हमारे कच्छ में क्या नहीं है। नगर निर्माण को लेकर हमारी विशेषज्ञता धौलावीरा में दिखती है। पिछले वर्ष ही धौलावीरा को वर्ल्ड हैरिटेज साइट का दर्जा दिया गया है। धौलावीरा की एक-एक ईंट हमारे पूर्वजों के कौशल, उनके ज्ञान-विज्ञान को दर्शाती है। जब दुनिया की अनेक सभ्यताएं अपने शुरुआती दौर में थीं, तब हमारे पूर्वजों ने धौलावीरा जैसे विकसित शहर बसा दिए थे।

इसी प्रकार मांडवी जहाज निर्माण के मामले में अग्रणी था। अपने इतिहास, अपनी विरासत और अपने स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति कितनी बेरुखी रही है, इसका एक उदाहरण हमारे श्यामजी कृष्ण वर्मा से भी जुड़ा है। आजादी के बाद दशकों तक उनकी अस्थियां तक विदेश में रखी रही। मुख्यमंत्री के रूप में ये मेरा सौभाग्य था कि उनकी अस्थियों को ला करके मैंने मातृभूमि को सौंपा। आज जब देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, तब गुजरात वासी, देशवासी मांडवी में बने क्रांति तीर्थ पर उन्हें श्रद्धांजलि दे पा रहे हैं।

एक भारत, श्रेष्ठ भारत के लिए, किसानों-पशुपालकों का जीवन बदलने के लिए, जिन सरदार साहब ने खुद को खपा दिया, उनकी स्टैच्यु ऑफ यूनिटी भी आज देश की शान बन चुकी है। हर दिन हजारों पर्यटक वहां से प्रेरित होकर जाते हैं, राष्ट्रीय एकता का संकल्प लेकर जाते हैं।

बीते 2 दशकों में कच्छ की, गुजरात की इन धरोहरों को सहेजने, उन्हें दुनिया के सामने लाने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। कच्छ का रण, धोरड़ो टेंट सिटी, मांडवी बीच, आज देश के बड़े टूरिस्ट डेस्टिनेशन बन रहे हैं। यहां के कारीगरों, हस्तशिल्पियों के बनाए उत्पाद आज पूरी दुनिया में जा रहे हैं। निरोना, भुजौड़ी और अजरखपुर जैसे गांवों का हैंडीक्राफ्ट आज देश-दुनिया में धूम मचा रहा है। कच्छ की रोगन आर्ट, मड आर्ट, बांधनी, अजरख प्रिंटिंग के चर्चे हर तरफ बढ़ रहे हैं। कच्छ की शॉल और कच्छ की कढ़ाई को GI-टैग मिलने के बाद इनकी डिमांड और बढ़ गई है।

इसलिए आज गुजरात में ही नहीं, बल्कि देश-दुनिया में चर्चा होने लगी है कि जिसने कच्छ नहीं देखा, उसने कुछ नहीं देखा। इनका बहुत अधिक लाभ कच्छ के, गुजरात के टूरिज्म को हो रहा है, मेरी नौजवान पीढ़ी को हो रहा है। आज नेशनल हाईवे नंबर 41 के चौड़ीकरण का जो काम शुरू हुआ है उससे टूरिस्टों को तो मदद मिलेगी ही, बॉर्डर एरिया के लिहाज से भी ये बहुत महत्वपूर्ण है।

भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय यहां की माताओं-बहनों-बेटियों का पराक्रम, आज भी श्रेष्ठ वीर-गाथाओं में लिखा जाता है। कच्छ का विकास, सबका प्रयास से सार्थक परिवर्तन का एक उत्तम उदाहरण है। कच्छ सिर्फ एक स्थान नहीं है, भूभाग का एक हिस्सा नहीं है, ये कच्छ तो स्पिरिट है, जीती-जागती भावना है, जिंदादिल मनोभाव। ये वो भावना है, जो हमें आजादी के अमृतकाल के विराट संकल्पों की सिद्धि का रास्ता दिखाती है।

कच्छ के भाईयो-बहनों फिर से कहता हुँ कि आपका यह प्यार, आपका आर्शीवाद कच्छ का तो भला करता है, लेकिन उसमें से प्रेरणा लेकर हिन्दुस्तान के कोने-कोने में कुछ कर दिखाने कि प्रेरणा भी देता है। यह आपकी ताकत है दोस्तों,

इसलिए मैं कहता था, कच्छ का क और ख खमीर का ख। उसका नाम मेरा कच्छी बारह माह।

आपके स्वागत सम्मान के लिए, आपके प्यार के लिए मैं दिल से आपका आभारी हुँ। परंतु यह स्मृतिवन इस दुनिया के लिए महत्व का आकर्षण है। उसे संभालने की जिम्मेदारी मेरे कच्छ की है, मेरे भाईयो-बहनों की है। एक भी कोना ऐसा ना रहे कि जहाँ घना जंगल न बना हो। हमें इस भूजिया डुंगर को हरा-भरा बना देना है।

आप कल्पना नहीं कर सकते कि, जितनी ताकत कच्छ के रणोत्सव में है, उससे ज्यादा ताकत अपने इस स्मृतिवन में है। यह मौका छोड़ मत देना, बहुत सपनों के साथ मैंने यह काम किया है। एक बड़े संकल्प के साथ काम किया है, और उसमें मुझे आपकी जीवंत भागीदारी चाहिए। अविरत साथ-सहकार चाहिए। दुनिया में मेरा भुजिया डुंगर गूंजे उसके लिए मुझे आपका साथ चाहिए।

एक बार फिर आप सभी को विकास की तमाम परियोजनाओं के लिए बहुत-बहुत बधाई और बहुत-बहुत शुभकामनाएं। आज बहुत दिनों के बाद आइए मेरे साथ बोलिए-

में कहूंगा नर्मदे-आप कहेंगे सर्वदे-
नर्मदे - सर्वदे !
नर्मदे - सर्वदे !
नर्मदे - सर्वदे !▪

अमृत महोत्सव की अमृतधारा बह रही है

अमृत महोत्सव के ये रंग, केवल भारत में ही नहीं, बल्कि, दुनिया के दूसरे देशों में भी देखने को मिले। बोत्स्वाना में वहाँ के रहने वाले स्थानीय Singers ने भारत की आजादी के 75 साल मनाने के लिए देशभक्ति के 75 गीत गाए।

इसमें और भी ख़ास बात ये है, कि ये 75 गीत हिन्दी, पंजाबी, गुजराती, बांग्ला, असमिया, तमिल, तेलुगू, कन्नड़ा और संस्कृत जैसी भाषाओं में गाये गए। इसी तरह, नामीबिया में भारत-नामीबिया के सांस्कृतिक-पारंपरिक संबंधों पर विशेष स्टैम्प जारी किया है।

अगस्त के इस महीने में, आप सभी के पत्रों, संदेशों और cards ने, मेरे कार्यालय को तिरंगामय कर दिया है। मुझे ऐसा शायद ही कोई पत्र मिला हो, जिस पर तिरंगा न हो, या तिरंगे और आजादी से जुड़ी बात न हो। बच्चों ने, युवा साथियों ने तो अमृत महोत्सव पर खूब सुंदर-सुंदर चित्र और कलाकारी भी बनाकर भेजी है। आजादी के इस महीने में हमारे पूरे देश में, हर शहर, हर गाँव में, अमृत महोत्सव की अमृतधारा बह रही है। अमृत महोत्सव और स्वतंत्रता दिवस के इस विशेष अवसर पर हमने देश की सामूहिक शक्ति के दर्शन किए हैं। एक चेतना की अनुभूति हुई है। इतना बड़ा देश, इतनी विविधताएं, लेकिन जब बात तिरंगा फहराने की आई, तो हर कोई, एक ही भावना में बहता दिखाई दिया। तिरंगे के गौरव के प्रथम प्रहरी बनकर, लोग, खुद आगे आए। हमने स्वच्छता अभियान और वैक्सीनेशन अभियान में भी देश की spirit को देखा था। अमृत महोत्सव में हमें फिर देशभक्ति का वैसा ही जज्बा देखने को मिल रहा है। हमारे सैनिकों ने ऊँची-ऊँची पहाड़ की चोटियों पर, देश की सीमाओं पर, और बीच समंदर में तिरंगा फहराया। लोगों ने तिरंगा अभियान के लिए अलग-अलग innovative ideas भी निकाले। जैसे युवा साथी, कृशनील अनिल जी ने, अनिल जी एक Puzzle artist हैं और उन्होंने record समय में खूबसूरत तिरंगा mosaic art तैयार की है। कर्नाटका के कोलार में, लोगों ने 630 फीट लम्बा और 205 फीट चौड़ा तिरंगा पकड़कर अनूठा दृश्य प्रस्तुत किया। असम में सरकारी कर्मियों ने दिघालीपुखुरी वार मेमोरियल में तिरंगा फहराने के लिए अपने हाथों से 20 फीट का तिरंगा बनाया। इसी तरह, इंदौर में लोगों ने human chain के जरिए भारत का नक्शा बनाया। चंडीगढ़ में, युवाओं ने, विशाल human तिरंगा बनाया। ये दोनों ही प्रयास Guinness Record में भी दर्ज किये गए हैं। इस सबके बीच, हिमाचल प्रदेश की गंगोट पंचायत से एक बड़ा प्रेरणादायी उदाहरण भी देखने को मिला। यहाँ पंचायत में स्वतंत्रता दिवस के कार्यक्रम में प्रवासी मजदूरों के बच्चों को मुख्य अतिथि के रूप में शामिल किया गया।

अमृत महोत्सव के ये रंग, केवल भारत में ही नहीं, बल्कि, दुनिया के दूसरे देशों में भी देखने को मिले। बोत्स्वाना में वहाँ के रहने वाले स्थानीय singers ने भारत की आजादी के 75 साल मनाने के लिए देशभक्ति के 75 गीत गाए। इसमें और भी खास बात ये है, कि ये 75 गीत हिन्दी, पंजाबी, गुजराती, बांग्ला, असमिया, तमिल, तेलुगू, कन्नड़ा और संस्कृत जैसी भाषाओं में गाये गए। इसी तरह, नामीबिया में भारत-नामीबिया के सांस्कृतिक-पारंपरिक संबंधों पर विशेष स्टैम्प जारी किया है।

मैं और एक खुशी की बात बताना चाहता हूँ। अभी कुछ दिन पहले, मुझे, भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय के कार्यक्रम में जाने का अवसर मिला। वहाँ उन्होंने 'स्वराज' दूरदर्शन के serial का screening रखा था। मुझे, उसके premiere पर जाने का मौका मिला। ये आजादी के आंदोलन में हिस्सा लेने वाले अनसुने नायक-नायिकाओं के प्रयासों से देश की युवा-पीढ़ी को परिचित कराने की एक बेहतरीन पहल है। दूरदर्शन पर, हर रविवार रात 9 बजे, इसका प्रसारण होता है। और मुझे बताया गया कि 75 सप्ताह तक चलने वाला है। मेरा आग्रह है कि आप समय निकालकर इसे खुद भी देखें और अपने घर के बच्चों को भी जरुर दिखाएं और स्कूल-कॉलेज के लोग तो इसको रिकॉर्डिंग करके जब सोमवार को स्कूल-कॉलेज खुलते हैं तो विशेष कार्यक्रम की रचना भी कर सकते हैं, ताकि आजादी के जन्म के इन महानायकों के प्रति, हमारे देश में, एक नई जागरूकता पैदा होगी। आजादी का अमृत महोत्सव अगले साल यानी अगस्त 2023 तक चलेगा। देश के लिए, स्वतंत्रता सेनानियों के लिए, जो लेखन-आयोजन आदि हम कर रहे थे, हमें उन्हें और आगे बढ़ाना है।

हमारे पूर्वजों का ज्ञान, हमारे पूर्वजों की दीर्घ-दृष्टि और हमारे पूर्वजों का एकात्मचिंतन, आज

भी कितना महत्वपूर्ण है, जब उसकी गहराई में जाते हैं तो हम आश्चर्य से भर जाते हैं। हजारों साल पुराना हमारा ऋग्वेद। ऋग्वेद में कहा गया है:-

ओमान-मापो मानुषी: अमृक्तम् धात तोकाय तनयाय शं यो:।
यूयं हिष्ठा भिषजो मातृतमा विश्वस्य स्थातु: जगतो जनित्री:।।

अर्थात् - हे जल, आप मानवता के परम मित्र हैं। आप, जीवनदायिनी हैं, आप से ही अन्न उत्पन्न होता है, और आप से ही हमारी संतानों का हित होता है। आप, हमें सुरक्षा प्रदान करने वाले हैं और सभी बुराइयों से दूर रखते हैं। आप, सबसे उत्तम औषधि हैं, और आप ही, इस ब्रह्मांड के पालनहार हैं।

सोचिए, हमारी संस्कृति में हजारों वर्ष पहले जल और जल संरक्षण का महत्व समझाया गया है। जब ये ज्ञान, हम, आज के सन्दर्भ में देखते हैं, तो रोमांचित हो उठते हैं, लेकिन, जब इसी ज्ञान को देश, अपने सामर्थ्य के रूप में स्वीकारता है तो उनकी ताकत अनेक गुना बढ़ जाती है। आपको याद होगा, 'मन की बात' में ही चार महीने पहले मैंने अमृत सरोवर की बात की थी। उसके बाद अलग-अलग जिलों में स्थानीय प्रशासन जुटा, स्वयं सेवी संस्थाएं जुटीं और स्थानीय लोग जुटे - देखते ही देखते, अमृत सरोवर का निर्माण एक जन-आंदोलन बन गया है। जब देश के लिए कुछ करने की भावना हो, अपने कर्तव्यों का एहसास हो, आने वाली पीढ़ियों की चिंता हो, तो सामर्थ्य भी जुड़ता है, और संकल्प, नेक बन जाता है। मुझे तेलंगाना के वारंगल के एक शानदार प्रयास की जानकारी मिली है। यहाँ एक नई ग्राम पंचायत का गठन हुआ है जिसका नाम है 'मंग्त्या-वाल्या थांडा'। यह गाँव Forest Area के करीब है। यहाँ के गाँव के पास ही एक ऐसा स्थान था जहाँ मानसून के दौरान काफी पानी इकट्ठा हो जाता था। गाँव वालों की पहल पर अब इस स्थान को अमृत सरोवर अभियान के तहत विकसित किया जा रहा है। इस बार मानसून के दौरान हुई बारिश में ये सरोवर पानी से लबालब भर गया है।

मैं मध्य प्रदेश के मंडला में मोचा ग्राम पंचायत में बने अमृत सरोवर के बारे में भी आपको बताना चाहता हूँ। ये अमृत सरोवर कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के पास बना है और इससे इस इलाके की सुन्दरता को और बढ़ा दिया है। उत्तर प्रदेश के ललितपुर में, नवनिर्मित शहीद भगत सिंह अमृत सरोवर भी लोगों को काफी आकर्षित कर रहा है। यहाँ की निवारी ग्राम पंचायत में बना ये सरोवर 4 एकड़ में फैला हुआ है। सरोवर के किनारे हुआ वृक्षारोपण इसकी शोभा को बढ़ा रहा है। सरोवर के पास लगे 35 फीट ऊँचे तिरंगे को देखने के लिए भी दूर-दूर से लोग आ रहे हैं। अमृत सरोवर का ये अभियान कर्नाटका में भी जोरों पर चल रहा है। यहाँ के बागलकोट जिले के 'बिल्केरूर' गाँव में लोगों ने बहुत सुंदर अमृत सरोवर बनाया है। दरअसल इस क्षेत्र में, पहाड़ से निकले पानी की वजह से लोगों को बहुत मुश्किल होती थी, किसानों और उनकी फसलों को भी नुकसान पहुँचता था। अमृत सरोवर बनाने के लिए गाँव के लोग, सारा पानी channelize करके एक तरफ ले आए। इससे इलाके में बाढ़ की समस्या भी दूर हो गई। अमृत सरोवर अभियान हमारी आज की अनेक समस्याओं का समाधान तो करता ही है, हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उतना ही आवश्यक है। इस अभियान के तहत, कई जगहों पर, पुराने जलाशयों का भी कायाकल्प किया जा रहा है। अमृत सरोवर का उपयोग, पशुओं की प्यास बुझाने के साथ ही, खेती-किसानी के लिए भी, हो रहा है। इन तालाबों की वजह से आस-पास के क्षेत्रों का Ground Water Lable बढ़ा है। वही इनके चारों ओर हरियाली भी बढ़ रही है। इतना ही नहीं, कई जगह लोग अमृत सरोवर में मछली पालन की तैयारियों में भी जुटे हैं। मेरा, आप सभी से और खास कर मेरे युवा साथियों से आग्रह है कि आप अमृत सरोवर अभियान में बढ़-चढ़कर के हिस्सा लें और जल संचय और जलसंरक्षण के इन प्रयासों को पूरी की पूरी ताकत दें, उसको आगे बढ़ायें।

असम के बोंगाई गाँव में एक दिलचस्प परियोजना चलाई जा रही है-Project सम्पूर्णा। इस project का मकसद है कुपोषण के खिलाफ लड़ाई और इस लड़ाई का तरीका भी बहुत unique है। इसके तहत, किसी आंगनबाड़ी केंद्र के एक स्वस्थ बच्चे की माँ, एक कुपोषित बच्चे की माँ से हर सप्ताह मिलती है और पोषण से संबंधित सारी जानकारियों पर चर्चा करती है। यानी, एक माँ, दूसरी माँ की मित्र बन, उसकी मदद करती है, उसे सीख देती है। इस project की मदद से, इस क्षेत्र में, एक साल में, 90 प्रतिशत से ज्यादा बच्चों में कुपोषण दूर हुआ है। आप कल्पना कर सकते हैं, क्या कुपोषण दूर करने में गीत-संगीत और भजन का भी इस्तेमाल हो सकता है? मध्य प्रदेश के दतिया जिले में ''मेरा बच्चा अभियान''! इस ''मेरा बच्चा अभियान'' में इसका सफलता पूर्वक प्रयोग किया गया। इसके तहत, जिले में भजन-कीर्तन आयोजित हुए, जिसमें पोषण गुरु कहलाने वाले शिक्षकों को बुलाया गया। एक मटका कार्यक्रम भी हुआ, इसमें महिलाएँ, आंगनबाड़ी केंद्र के लिए मुट्ठी भर अनाज लेकर आती हैं और इसी अनाज से शनिवार को 'बालभोज' का आयोजन होता है। इससे आंगनबाड़ी केन्द्रों में बच्चों की

उपस्थिति बढ़ने के साथ ही कुपोषण भी कम हुआ है। कुपोषण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए एक unique अभियान झारखंड में भी चल रहा है। झारखंड के गिरिडीह में सांप-सीढ़ी का एक game तैयार किया गया है। खेल-खेल में बच्चे, अच्छी और खराब आदतों के बारे में सीखते हैं।

कुपोषण से जुड़े इतने सारे अभिनव प्रयोगों के बारे में, मैं आपको इसीलिये बता रहा हूँ, क्योंकि हम सब को भी, आने वाले महीने में, इस अभियान से जुड़ना है। सितम्बर का महीना त्योहारों के साथ-साथ पोषण से जुड़े बड़े अभियान को भी समर्पित है। हम हर साल 1 से 30 सितम्बर के बीच पोषण माह मनाते हैं। कुपोषण के खिलाफ पूरे देश में अनेक Creative और Diverse Efforts किए जा रहे हैं। Technology का बेहतर इस्तेमाल और जन-भागीदारी भी, पोषण अभियान का महत्वपूर्ण हिस्सा बना है। देश में लाखों आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को mobile devices देने से लेकर आंगनबाड़ी

आजकल, युवा-पीढ़ी, Healthy Living और Eating को लेकर बहुत Focussed है। इस हिसाब से भी देखें तो, Millets में, भरपूर Protein, Fibre और Minerals मौजूद होते हैं। कई लोग तो इसे, Super food भी बोलते हैं।

Millets से एक नहीं, अनेक लाभ हैं। Obesity को कम करने के साथ ही Diabetes, Hypertension और Heart related diseases के खतरे को भी कम करते हैं।

सेवाओं की पहुँच को Monitor करने के लिए Poshan Tracker भी launch किया गया है। सभी Aspirational Districts और North East के राज्यों में 14 से 18 साल की बेटियों को भी, पोषण अभियान के दायरे में लाया गया है। कुपोषण की समस्या का निराकरण इन कदमों तक ही सीमित नहीं है - इस लड़ाई में, दूसरी कई और पहल की भी अहम भूमिका है। उदाहरण के तौर पर, जल जीवन मिशन को ही लें, तो भारत को कुपोषण मुक्त कराने में इस मिशन का भी बहुत बड़ा असर होने वाला है। कुपोषण की चुनौतियों से निपटने में, सामाजिक जागरूकता से जुड़े प्रयास, महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मैं आप सभी से आग्रह करूँगा, कि आप, आने वाले पोषण माह में, कुपोषण या Malnutrition को, दूर करने के प्रयासों में, हिस्सा जरुर लें।

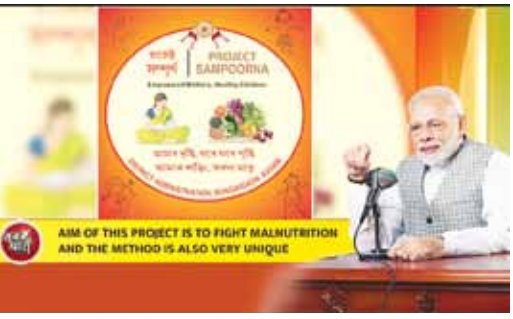

चेन्नई से श्रीदेवी वर्दराजन जी ने मुझे एक Reminder भेजा है। उन्होंने MyGov पर अपनी बात कुछ इस प्रकार से लिखी है - नए साल के आने में अब 5 महीने से भी कम समय बचा है, और हम सब जानते हैं कि आने वाला नया साल International Year of Millets के तौर पर मनाया जाएगा। उन्होंने मुझे देश का एक millet Map भी भेजा है। साथ ही पूछा है कि क्या आप 'मन की बात' में, आने वाले एपिसोड में इस पर चर्चा कर सकते हैं? मुझे, अपने देशवासियों में इस तरह के जज्बे को देखकर बहुत ही आनन्द की अनुभूति होती है। आपको याद होगा कि United Nations ने एक प्रस्ताव पारित कर वर्ष 2023 (दो हजार तेईस) को International Year of Millets घोषित किया है। आपको ये जानकर भी बहुत खुशी होगी कि भारत के इस प्रस्ताव को 70 से ज्यादा देशों का समर्थन मिला था। आज, दुनिया भर में, इसी मोटे अनाज का, Millets का, Craze बढ़ता जा रहा है।

जब मैं मोटे अनाज की बात करता हूँ तो मेरे एक प्रयास को भी आज आपको share करना चाहता हूँ। पिछले कुछ समय से भारत में कोई भी जब विदेशी मेहमान आते हैं, राष्ट्राध्यक्ष भारत आते हैं तो मेरी कोशिश रहती है कि भोजन में भारत के Millets यानी हमारे मोटे अनाज से बनी हुई Dishes बनवाऊं और अनुभव यह आया है, इन महानुभावों को, यह Dishes, बहुत पसंद आती है, और हमारे मोटे अनाज के संबंध में, Millets के संबंध में, काफी कुछ जानकारियाँ एकत्र करने का वो प्रयास भी करते हैं। Millets, मोटे अनाज, प्राचीन काल से ही हमारे Agriculture, Culture और Civilisation का हिस्सा रहे हैं। हमारे वेदों में Millets का उल्लेख मिलता है, और इसी तरह, पुराणनुरू और तोल्काप्पियम में भी, इसके बारे में, बताया गया है। आप, देश के किसी भी हिस्से में जाएं, आपको, वहां लोगों के खान-पान में, अलग-अलग तरह के Millets जरुर देखने को मिलेंगे। हमारी संस्कृति की ही तरह, Millets में भी, बहुत विविधताएँ पाई जाती हैं। ज्वार, बाजरा, रागी, सावां, कंगनी, चीना, कोदो, कुटकी, कुटटू, ये सब Millets ही तो हैं। भारत, विश्व में, Millets का

सबसे बड़ा उत्पादक देश है, इसलिए इस पहल को सफल बनाने की बड़ी जिम्मेदारी भी हम भारत-वासियों के कंधे पर ही है। हम सबको मिलकर इसे जन-आंदोलन बनाना है, और देश के लोगों में Millets के प्रति जागरूकता भी बढ़ानी है। और साथियो, आप तो भली भांति जानते हैं, Millets, किसानों के लिए भी फायदेमंद हैं और वो भी खास करके छोटे किसानों को। दरअसल, बहुत ही कम समय में फसल तैयार हो जाती है, और इसमें, ज्यादा पानी की आवश्यकता भी नहीं होती है। हमारे छोटे किसानों के लिए तो Millets विशेष रूप से लाभकारी है। Millets के भूसे को बेहतरीन चारा भी माना जाता है। आजकल, युवा-पीढ़ी, Healthy Living और Eating को लेकर बहुत Focussed है। इस हिसाब से भी देखें तो, Millets में, भरपूर Protein, Fibre और Minerals मौजूद होते हैं। कई लोग तो इसे, Super food भी बोलते हैं। Millets से एक नहीं, अनेक लाभ हैं। Obesity

को कम करने के साथ ही Diabetes, Hypertension और Heart related diseases के खतरे को भी कम करते हैं। इसके साथ ही ये पेट और लीवर की बीमारियों से बचाव में भी मददगार हैं। थोड़ी देर पहले ही हमने कुपोषण के बारे में बात की है। कुपोषण से लड़ने में भी Millets काफी लाभदायक हैं, क्योंकि, ये, protein के साथ-साथ energy से भी भरे होते हैं। देश में आज Millets को बढ़ावा देने के लिए काफी कुछ किया जा रहा है। इससे जुड़ी Research और Innovation पर Focus करने के साथ ही FPOs को प्रोत्साहित किया जा रहा है, ताकि, उत्पादन बढ़ाया जा सके। मेरा, अपने किसान भाई-बहनों से, यही आग्रह है कि, Millets, यानी मोटे अनाज को, अधिक-से-अधिक अपनाएं और इसका फायदा उठाएं। मुझे ये देखकर काफी अच्छा लगता है कि आज कई ऐसे Start-Ups उभर रहे हैं, जो Millets पर काम कर रहे हैं। इनमें से कुछ Millet Cookies बना रहे हैं, तो कुछ, Millet Pan Cakes और डोसा भी बना रहे हैं। वहीं कुछ ऐसे हैं, जो, Millet Energy Bars, और Millet Breakfast तैयार कर रहे हैं। मैं इस क्षेत्र में काम करने वाले सभी लोगों को बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ। त्योहारों के इस मौसम में हम लोग अधिकतर पकवानों में भी Millets का उपयोग करते हैं। आप अपने घरों में बने ऐसे पकवानों की तस्वीरें Social Media पर जरुर Share करें, ताकि लोगों के बीच Millets को लेकर जागरूकता बढ़ाने में मदद मिले।

अभी कुछ दिन पहले, मैंने, अरुणाचल प्रदेश के सियांग जिले में जोरसिंग गाँव की एक खबर देखी। ये खबर एक ऐसे बदलाव के बारे में थी, जिसका इंतजार, इस गाँव के लोगों को, कई वर्षों से था। दरअसल, जोरसिंग गाँव में इसी महीने, स्वतन्त्रता दिवस के दिन से 4G internet की सेवाएँ शुरू हो गई हैं। जैसे, पहले कभी गाँव में बिजली पहुँचने पर लोग खुश होते थे, अब, नए भारत में वैसी ही खुशी, 4G पहुँचने पर होती है। अरुणाचल और नार्थ ईस्ट के दूर-सुदूर इलाकों में 4G के तौर पर एक नया सूर्योदय हुआ है, Internet Connectivity एक नया सवेरा लेकर आई है। जो सुविधाएं कभी सिर्फ बड़े शहरों में होती थी, वो Digital India ने गाँव-गाँव में पहुंचा दी हैं। इस वजह से देश में नए Digital Entrepreneur पैदा हो रहे हैं। राजस्थान के अजमेर जिले के सेठा सिंह रावत जी 'दर्जी ऑनलाइन' 'E-store' चलाते हैं। आप सोचेंगे ये क्या काम हुआ, दर्जी ऑनलाइन!! दरअसल, सेठा सिंह रावत कोविड के पहले tailoring का काम करते थे। कोविड

आया, तो रावत जी ने इस चुनौती को मुश्किल नहीं, बल्कि अवसर के रूप में लिया। उन्होंने, 'Common Service Centre' यानी CSC E-Store join किया, और, online कामकाज शुरू किया। उन्होंने देखा कि ग्राहक, बड़ी संख्या में, mask का order दे रहे हैं। उन्होंने कुछ महिलाओं को काम पर रखा और mask बनवाने लगे। इसके बाद उन्होंने 'दर्जी ऑनलाइन' नाम से अपना online store शुरू कर दिया जिसमें और भी कई तरह से कपड़े

जोरसिंग गाँव में इसी महीने, स्वतन्त्रता दिवस के दिन से 4G internet की सेवाएँ शुरू हो गई हैं। जैसे, पहले कभी गाँव में बिजली पहुँचने पर लोग खुश होते थे, अब, नए भारत में वैसी ही खुशी, 4G पहुँचने पर होती है।

अरुणाचल और नार्थ ईस्ट के दूर-सुदूर इलाकों में 4G के तौर पर एक नया सूर्योदय हुआ है, Internet Connectivity एक नया सवेरा लेकर आई है।

वो बनाकर बेचने लगे। आज Digital India की ताकत से सेठा सिंह जी का काम इतना बढ़ चुका है, कि अब उन्हें पूरे देश से order मिलते हैं। सैकड़ों महिलाओं को उन्होंने अपने यहाँ रोजगार दे रखा है। Digital India ने यूपी के उन्नाव में रहने वाले ओम प्रकाश सिंह जी को भी Digital Entrepreneur बना दिया है। उन्होंने अपने गांव में एक हजार से ज्यादा Broadband connection स्थापित किए हैं। ओम प्रकाश जी ने अपनेCommon Service Centre के आसपास, निशुल्क WiFi zone का भी निर्माण किया है, जिससे, जरूरतमंद लोगों की बहुत मदद हो रही है। ओम प्रकाश जी का काम अब इतना बढ़ गया है कि उन्होंने 20 से ज्यादा लोगों को नौकरी पर रख लिया है। ये लोग, गांवो के स्कूल, अस्पताल, तहसील ऑफिस और आंगनवाड़ी केंद्रों तक Broadband Connection पहुंचा रहे हैं और इससे रोजगार भी प्राप्त कर रहे हैं। Common Service Centre की तरह ही Government E- market place यानी GEM portal पर भी ऐसी कितनी success stories देखने को मिल रही हैं।

मुझे गावों से ऐसे कितने ही सन्देश मिलते हैं, जो internet की वजह से आए बदलावों को मुझसे साझा करते हैं। internet ने हमारे युवा साथियों की पढ़ाई और सीखने के तरीकों को ही बदल दिया है। जैसे कि यूपी की गुड़िया सिंह जब उन्नाव के अमोइया गांव में अपनी ससुराल आई, तो उन्हें अपनी पढ़ाई की चिंता हुई। लेकिन, भारतनेट ने उनकी इस चिंता का समाधान कर दिया। गड़िया ने internet के जरिए अपनी पढ़ाई को आगे बढ़ाया, और अपना Graduation भी पूरा किया। गांव-गांव में ऐसे कितने ही जीवन, Digital India अभियान से नयी शक्ति पा रहे हैं। आप मुझे, गावों के Digital Entrepreneurs के बारे में, ज्यादा-से-ज्यादा लिखकर भेजें, और उनकी success stories को social media पर भी जरूर साझा करें।

कुछ समय पहले, मुझे, हिमाचल प्रदेश से 'मन की बात' के एक श्रोता रमेश जी का पत्र मिला। रमेश जी ने अपने पत्र में पहाड़ों की कई खूबियों का जिक्र किया है। उन्होंने लिखा, कि, पहाड़ों पर बस्तियाँ भले ही दूर-दूर बसती हों, लेकिन, लोगों के दिल, एक-दूसरे के, बहुत नजदीक होते हैं। वाकई, पहाड़ों पर रहने वाले लोगों के जीवन से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। पहाड़ों की जीवनशैली और संस्कृति से हमें पहला पाठ तो यही मिलता है कि हम परिस्थितियों के दबाव में ना आएं तो आसानी से उन पर विजय भी प्राप्त कर सकते हैं, और दूसरा, हम कैसे स्थानीय संसाधनों से आत्मनिर्भर बन सकते हैं। जिस पहली सीख का जिक्र मैंने किया,

उसका एक सुन्दर चित्र इन दिनों स्पीती क्षेत्र में देखने को मिल रहा है। स्पीती एक जनजातीय क्षेत्र है। यहाँ, इन दिनों, मटर तोड़ने का काम चलता है। पहाड़ी खेतों पर ये एक मेहनत भरा और मुश्किल काम होता है। लेकिन यहाँ, गाँव की महिलाएं इकट्ठा होकर, एक साथ मिलकर, एक-दूसरे के खेतों से मटर तोड़ती हैं। इस काम के साथ-साथ महिलाएं स्थानीय गीत 'छपरा माझी छपरा' ये भी गाती हैं। यानी यहाँ आपसी सहयोग भी लोक-परंपरा का एक हिस्सा है। स्पीती में स्थानीय संसाधनों के सदुपयोग का भी

बेहतरीन उदाहरण मिलता है। स्पीती में किसान जो गाय पालते हैं, उनके गोबर को सुखाकर बोरियों में भर लेते हैं। जब सर्दियाँ आती हैं, तो इन बोरियों को गाय के रहने की जगह में, जिसे यहाँ खूड़ कहते हैं, उसमें बिछा दिया जाता है। बर्फ बारी के बीच, ये बोरियाँ, गायों को, ठंड से सुरक्षा देती हैं। सर्दियाँ जाने के बाद, यही गोबर, खेतों में खाद के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। यानी, पशुओं के waste से ही उनकी सुरक्षा भी, और खेतों के लिए खाद भी। खेती की लागत भी कम, और खेत में उपज भी ज्यादा। इसीलिए तो ये क्षेत्र, इन दिनों, प्राकृतिक खेती के लिए भी एक प्रेरणा बन रहा है।

इसी तरह के कई सराहनीय प्रयास, हमारे, एक और पहाड़ी राज्य, उत्तराखंड में भी देखने को मिल रहे हैं। उत्तराखंड में कई प्रकार के औषधि और वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। जो हमारे सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होती हैं। उन्हीं में से एक फल है - बेडू। इसे, हिमालयन फिग के नाम से भी जाना जाता है। इस फल में, खनिज और विटामिन भरपूर मात्रा में पाये जाते हैं। लोग, फल के रूप में तो इसका सेवन करते ही हैं, साथ ही कई बीमारियों के इलाज में भी इसका उपयोग होता है।

इस फल की इन्हीं खूबियों को देखते हुए अब बेडू के जूस, इससे बने जैम, चटनी, अचार और इन्हें सुखाकर तैयार किए गए ड्राई फ्रूट को बाजार में उतारा गया है। पिथौरागढ़ प्रशासन की पहल और स्थानीय लोगों के सहयोग से, बेडू को बाजार तक अलग-अलग रूपों में पहुँचाने में सफलता मिली है। बेडू को पहाड़ी अंजीर के नाम से branding करके online market में भी उतारा गया है। इससे किसानों को आय का नया स्त्रोत तो मिला ही है, साथ ही बेडू के औषधीय गुणों का फायदा दूर-दूर तक पहुँचने लगा है।

'मन की बात' में आज शुरुआत में हमने आजादी के अमृत महोत्सव के बारे में बात की है। स्वतंत्रता दिवस के महान पर्व के साथ-साथ आने वाले दिनों में और भी कई पर्व आने वाले हैं। अभी कुछ दिन बाद ही भगवान गणेश की आराधना का पर्व गणेश चतुर्थी है। गणेश चतुर्थी, यानी गणपति बप्पा के आशीर्वाद का पर्व। गणेश चतुर्थी के पहले ओणम का पर्व भी शुरू हो रहा है। विशेष रूप से केरला में ओणम शांति और समृद्धि की भावना के साथ मनाया जाएगा। 30 अगस्त को हरतालिका तीज भी है। ओडिशा में 1 सितंबर को नुआखाई का पर्व भी मनाया जाएगा। नुआखाई का मतलब ही होता है, नया खाना, यानी, ये भी, दूसरे कई पर्वों की तरह ही, हमारी, कृषि परंपरा से जुड़ा त्योहार है। इसी बीच, जैन समाज का संवत्सरी पर्व भी होगा। हमारे ये सभी

पर्व, हमारी सांस्कृतिक समृद्धि और जीवंतता के पर्याय हैं। मैं, आप सभी को, इन त्यौहारों और विशेष अवसरों के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ। इन पर्वों के साथ-साथ, 29 अगस्त को, मेजर ध्यानचंद जी की जन्म जयंती पर राष्ट्रीय खेल दिवस भी मनाया जाएगा। हमारे युवा खिलाड़ी वैश्विक मंचों पर हमारे तिरंगे की शान बढ़ाते रहें, यही हमारी ध्यानचंद जी के प्रति श्रद्धांजलि होगी। देश के लिए हम सभी मिलकर ऐसे ही काम करते रहें, देश का मान बढ़ाते रहें। ▪

संपूर्ण शिक्षक बिरादरी के सम्मान का दिन है शिक्षक दिवस

स्वतन्त्र भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने राजनीति में आने से पूर्व अपने जीवन के महत्वपूर्ण 40 वर्ष शिक्षक के रूप में व्यतीत किये। उनमें एक आदर्श शिक्षक के सारे गुण मौजूद थे।

उन्होंने अपना जन्म दिन अपने व्यक्तिगत नाम से नहीं अपितु संपूर्ण शिक्षक बिरादरी को सम्मानित किये जाने के उद्देश्य से शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की इच्छा व्यक्त की थी जिसके परिणामस्वरूप आज भी सारे देश में उनका जन्म दिन (5 सितम्बर) को प्रति वर्ष शिक्षक दिवस के नाम से ही मनाया जाता है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति और द्वितीय राष्ट्रपति रहे। वे भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद, उत्कृष्ट वक्ता, महान दार्शनिक और एक आस्थावान हिन्दू विचारक थे। उन्हें 1931 में ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा सर की उपाधि प्रदान की गयी थी लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात उसका औचित्य डॉ. राधाकृष्णन के लिये समाप्त हो चुका था। जब वे उपराष्ट्रपति बन गये तो स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने 1954 में उन्हें उनकी महान दार्शनिक व शैक्षिक उपलब्धियों के लिये देश का सर्वोच्च अलंकरण भारत रत्न प्रदान किया।

डॉ. राधाकृष्णन का जन्म तमिलनाडु के तिरूतनी ग्राम में, जो तत्कालीन मद्रास से लगभग 64 कि.मी. की दूरी पर स्थित है, 5 सितम्बर 1888 को हुआ था। जिस परिवार में उन्होंने जन्म लिया वह एक गरीब किन्तु विद्वान ब्राह्मण परिवार था। उनका जन्म स्थान भी एक पवित्र तीर्थस्थल के रूप में विख्यात रहा है। राधाकृष्णन के पुरखे पहले कभी सर्वपल्ली नामक ग्राम में रहते थे और 18वीं शताब्दी के मध्य में उनका परिवार तिरूतनी ग्राम आ गया था, लेकिन उनके पुरखे चाहते थे कि उनके नाम के साथ उनके जन्मस्थल के ग्राम का बोध भी सदैव रहना चाहिये। इसी कारण उनके परिजन अपने नाम के पूर्व सर्वपल्ली धारण करने लगे थे। उनके पिता का नाम सर्वपल्ली वीरास्वामी और माता का नाम सीतामा था।

स्वतन्त्र भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने राजनीति में आने से पूर्व अपने

जन्म 5 सितम्बर 1888

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

जीवन के महत्वपूर्ण 40 वर्ष शिक्षक के रूप में व्यतीत किये। उनमें एक आदर्श शिक्षक के सारे गुण मौजूद थे। उन्होंने अपना जन्म दिन अपने व्यक्तिगत नाम से नहीं अपितु संपूर्ण शिक्षक बिरादरी को सम्मानित किये जाने के उद्देश्य से शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की इच्छा व्यक्त की थी, जिसके परिणामस्वरूप आज भी सारे देश में उनका जन्म दिन (5 सितम्बर) को प्रति वर्ष शिक्षक दिवस के नाम से ही मनाया जाता है। इन दिनों जब शिक्षा की गुणात्मकता का ह्रास होता जा रहा है और गुरुशिष्य सबन्धों की पवित्रता को ग्रहण लगता जा रहा है,उनका पुण्य स्मरण फिर एक नयी चेतना पैदा कर सकता है। 1962 में जब वे भारत के दूसरे राष्ट्रपति बने, तो उनके कुछ शिष्य और प्रशंसक उनके पास गए। उन्होंने उनसे निवेदन किया की वे उनके जन्मदिन को एक समारोह के रूप में मनाना चाहते हैं। यह सुनकर उन्होंने कहा सिर्फ मेरा जन्मदिन मनाने से अच्छा अगर तुम इस दिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाओगे तो मुझे ज्यादा खुशी होगी। तब से 5 सितबर सारे देश में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। उनकी यह इच्छा अध्यापन के प्रति उनके प्रेम को दर्शाती है। वे जीवनभर अपने आप को शिक्षक मानते रहे।

शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. राधाकृष्णन ने जो अमूल्य योगदान दिया वह निश्चय ही अविस्मरणीय रहेगा। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। यद्यपि वे एक जाने-माने विद्वान, शिक्षक, वक्ता, प्रशासक, राजनयिक, देशभक्त और शिक्षा शास्त्री थे, तथापि अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में अनेक उच्च पदों पर काम करते हुए भी वे शिक्षा के क्षेत्र में सतत योगदान करते रहे। उनकी मान्यता थी कि यदि सही तरीके से शिक्षा दी जाये तो समाज की अनेक बुराइयों को मिटाया जा सकता है। डॉ. राधाकृष्णन कहा करते थे कि मात्र जानकारियाँ देना शिक्षा नहीं है। यद्यपि जानकारी का अपना महत्व है और आधुनिक युग में तकनीक की जानकारी महत्वपूर्ण भी है तथापि व्यक्ति के बौद्धिक झुकाव और उसकी लोकतान्त्रिक भावना का

भी बड़ा महत्व है। ये बातें व्यक्ति को एक उत्तरदायी नागरिक बनाती हैं। शिक्षा का लक्ष्य है ज्ञान के प्रति समर्पण की भावना और निरन्तर सीखते रहने की प्रवृत्ति। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को ज्ञान और कौशल दोनों प्रदान करती है तथा इनका जीवन में उपयोग करने का मार्ग प्रशस्त करती है। करुणा, प्रेम और श्रेष्ठ परंपराओं का विकास भी शिक्षा के उद्देश्य हैं।

वे कहते थे कि जब तक शिक्षक शिक्षा के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध नहीं होता और शिक्षा को एक मिशन नहीं मानता तब तक अच्छी शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती। एक आदर्श शिक्षक के सभी गुण उनमें विद्यमान थे। उनका कहना था कि शिक्षक उन्हीं लोगों को बनाया जाना चाहिये जो सबसे अधिक बुद्धिमान हों। शिक्षक को मात्र अच्छी तरह अध्यापन करके ही सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिये अपितु उसे अपने छात्रों का स्नेह और आदर भी अर्जित करना चाहिये। सम्मान शिक्षक होने भर से नहीं मिलता, उसे अर्जित करना पड़ता है।

हिन्दू शास्त्रों का गहरा अध्ययन

शिक्षा का प्रभाव जहाँ प्रत्येक व्यक्ति पर निश्चित रूप से पड़ता है, वहीं शैक्षिक संस्थान की गुणवत्ता भी अपना प्रभाव छोड़ती है। क्रिश्चियन संस्थाओं द्वारा उस समय पश्चिमी जीवन मूल्यों को विद्यार्थियों के भीतर काफी गहराई तक स्थापित किया जाता था। यही कारण है कि क्रिश्चियन संस्थाओं में अध्ययन करते हुए राधाकृष्णन के जीवन में उच्च गुण समाहित हो गये। लेकिन उनमें एक अन्य परिवर्तन भी आया जो कि क्रिश्चियन संस्थाओं के कारण ही था। कुछ लोग हिन्दुत्ववादी विचारों को हेय दृष्टि से देखते थे और उनकी आलोचना करते थे। उनकी आलोचना को डॉ. राधाकृष्णन ने चुनौती की तरह लिया और हिन्दू शास्त्रों का गहरा अध्ययन करना आरंभ कर दिया। डॉ. राधाकृष्णन यह जानना चाहते थे कि वस्तुतः किस संस्कृति के विचारों में चेतनता है और किस संस्कृति के विचारों में जड़ता है, तब स्वाभाविक अंर्तप्रज्ञा द्वारा इस बात पर दृढ़ता से विश्वास करना आरंभ कर दिया कि भारत के दूरस्थ स्थानों पर रहने वाले गरीब तथा अनपढ़ व्यक्ति भी प्राचीन सत्य को जानते थे। इस कारण राधाकृष्णन ने तुलनात्मक रूप से यह जान लिया कि भारतीय आध्यात्म काफी समृद्ध है और क्रिश्चियन मिशनरियों द्वारा हिन्दुत्व की आलोचनाएँ निराधार हैं। इससे इन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि भारतीय संस्कृति धर्म, ज्ञान और सत्य पर आधारित है जो प्राणी को जीवन का सच्चा सन्देश देती है।

गुरु का महत्व

गुरु गोविंद दोउ खड़े काके लागू पाय
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।

कबीरदास द्वारा लिखी गई उक्त पंक्तियाँ जीवन में गुरु के महत्व को वर्णित करने के लिए काफी हैं। भारत में प्राचीन समय से ही गुरु व शिक्षक परंपरा चली आ रही है। गुरुओं की महिमा का वृत्तांत ग्रंथों में भी मिलता है। जीवन में माता-पिता का स्थान कभी कोई नहीं ले सकता, क्योंकि वे ही हमें इस रंगीन खूबसूरत दुनिया में लाते हैं। उनका ऋण हम किसी भी रूप में उतार नहीं सकते, लेकिन जिस समाज में रहना है, उसके योग्य हमें केवल शिक्षक ही बनाते हैं। यद्यपि परिवार को बच्चे के प्रारंभिक विद्यालय का दर्जा दिया जाता है, लेकिन जीने का असली सलीका उसे शिक्षक ही सिखाता है। समाज के शिल्पकार कहे जाने वाले शिक्षकों का महत्व यहीं समाप्त नहीं होता, क्योंकि वह ना सिर्फ विद्यार्थी को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं, बल्कि उसके सफल जीवन की नींव भी उन्हीं के हाथों द्वारा रखी जाती है।

भारतीय संस्कृति

डॉ. राधाकृष्णन ने यह भली भाँति जान लिया था कि जीवन बहुत ही छोटा है परन्तु इसमें व्याप्त खुशियाँ अनिश्चित हैं। इस कारण व्यक्ति को सुख-दुख में समभाव से रहना चाहिये। वस्तुतः मृत्यु एक अटल सच्चाई है, जो अमीर गरीब सभी को अपना ग्रास बनाती है तथा किसी प्रकार का वर्ग भेद नहीं करती। सच्चा ज्ञान वही है जो आपके अन्दर के अज्ञान को समाप्त कर सकता है। सादगीपूर्ण सन्तोषवृत्ति का जीवन अमीरों के अहंकारी जीवन से बेहतर है, जिनमें असन्तोष का निवास है।

एक शान्त मस्तिष्क बेहतर है, तालियों की उन गड़गड़ाहटों से, जो संसदों एवं दरबारों में सुनायी देती हैं। वस्तुतः इसी कारण डॉ. राधाकृष्णन भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्यों को समझ पाने में सफल रहे, क्योंकि वे विभिन्न समुदायों द्वारा की गई आलोचनाओं के सत्य को स्वयं परखना चाहते थे। इसीलिए कहा गया है कि आलोचनाएँ परिशुद्धि का कार्य करती हैं। सभी माताएँ अपने बच्चों में उच्च संस्कार देखना चाहती हैं। इसी कारण वे बच्चों को ईश्वर पर विश्वास रखने, पाप से दूर रहने एवं मुसीबत में फँसे लोगों की मदद करने का पाठ पढ़ाती हैं। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने यह भी जाना कि भारतीय संस्कृति में सभी धर्मों का आदर करना सिखाया गया है और सभी धर्मों के लिये समता का भाव भी हिन्दू संस्कृति की विशिष्ट पहचान है। इस प्रकार उन्होंने भारतीय संस्कृति की विशिष्ट पहचान को समझा और उसके काफी नजदीक हो गये।

जीवन दर्शन एक आदर्श शिक्षक

डॉ. राधाकृष्णन समस्त विश्व को एक शिक्षालय मानते थे। उनकी मान्यता थी कि शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग किया जाना संभव है। इसीलिए समस्त विश्व को एक इकाई समझकर ही शिक्षा का प्रबन्धन किया जाना चाहिये। एक बार ब्रिटेन के एडिनबरा विश्वविद्यालय में भाषण देते हुए उन्होंने कहा था कि मानव की जाति एक होनी चाहिये।

मानव इतिहास का सम्पूर्ण लक्ष्य मानव जाति की मुक्ति है। यह तभी संभव है जब समस्त देशों की नीतियों का आधार विश्व शान्ति की स्थापना का प्रयत्न करना हो। वे अपनी बुद्धिमतापूर्ण व्याख्याओं, आनन्ददायी अभिव्यक्तियों और हँसाने व गुदगुदाने वाली कहानियों से अपने छात्रों को मन्त्रमुग्ध कर दिया करते थे। वे छात्रों को प्रेरित करते थे कि वे उच्च नैतिक मूल्यों को अपने आचरण में उतारें। वे जिस विषय को पढ़ाते थे, पढ़ाने के पहले स्वयं उसका अच्छा अध्ययन करते थे। दर्शन जैसे गभीर विषय को भी वे अपनी शैली की नवीनता से सरल और रोचक बना देते थे।

मात्र ढाई हजार वेतन!!

1952 से 1962 तक देश के उपराष्ट्रपति रहने के बाद सन् 1962 में वे भारत के राष्ट्रपति चुने गए। उन दिनों राष्ट्रपति का वेतन 10 हजार रुपए मासिक था लेकिन डॉ. राधाकृष्णन मात्र ढाई हजार रुपए ही लेते थे और शेष राशि प्रधानमंत्री के राष्ट्रीय राहत कोष में जमा करा देते थे। देश के सर्वोच्च पद पर पहुंचकर भी वे सादगी भरा जीवन बिताते रहे। ▪

देश सेवा में डॉ. विश्वेश्वरैया

भारत सरकार द्वारा 1968 ई. में डॉ. मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया की जन्म तिथि को अभियंता दिवस घोषित किया गया था।

अभियंता दिवस भारत में प्रत्येक वर्ष 15 सितम्बर को मनाया जाता है। इसी दिन भारत के महान अभियंता और भारतरत्न प्राप्त मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का जन्म दिवस होता है। आज भी मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को आधुनिक भारत के विश्वकर्मा के रूप में बड़े सम्मान के साथ स्मरण किया जाता है। अपने समय के बहुत बड़े इंजीनियर, वैज्ञानिक और निर्माता के रूप में देश की सेवा में अपना जीवन समर्पित करने वाले डॉ. मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को भारत ही नहीं, वरन विश्व की महान प्रतिभाओं में गिना जाता है।

एक सौ एक वर्ष का यशस्वी जीवन जीने वाले मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया सदैव भारतीय आकाश में अपना प्रकाश बिखेरते रहेंगे। भारत सरकार द्वारा 1968 ई. में डॉ. मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया की जन्म तिथि को अभियंता दिवस घोषित किया गया था। तब से हर वर्ष इस पुनीत अवसर पर सभी भारतीय अभियंता एकत्रित होकर उनकी प्रेरणादायिनी कृतित्व एवं आदर्शों के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित कर अपने कार्यकलापों का आत्म विमोचन करते हैं और इसे संकल्प दिवस के रूप में मनाने का प्रण लेते हैं। संकल्प अपने दायित्वों एवं कर्तव्यों का समर्पित भाव से निर्वहन करते हैं।

भारत की आजादी के बाद नये भारत के निर्माण और विकास में प्रतिभावान इंजीनियरों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। गांव एवं शहरों के समग्र विकास के लिए सड़कों, पुल-पुलियों और सिंचाई जलाशयों सहित अधोसंरचना निर्माण के अनेक कार्य हो रहे हैं। हमारे इंजीनियरों ने अपनी कुशलता से इन सभी निर्माण कार्यों को गति प्रदान की है। राज्य और देश के विकास में इंजीनियरों के इस योगदान के साथ-साथ अभियंता दिवस के इस मौके पर भारतरत्न सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया की प्रेरणादायक जीवन गाथा को भी याद किया जाता है। विश्वेश्वरैया का जन्म मैसूर, जो कि अब कर्नाटक में है, के मुद्देनाहल्ली नामक स्थान पर 15 सितबर, 1861 को हुआ था। बहुत ही गरीब परिवार में जन्मे विश्वेश्वरैया का बाल्यकाल बहुत ही आर्थिक संकट में व्यतीत हुआ था। उनके पिता वैद्य थे। वर्षों पहले उनके पूर्वज आंध्र प्रदेश के मोक्षगुंडम नामक स्थान से मैसूर में आकर बस गये थे। मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया ने प्रारंभिक शिक्षा जन्म स्थान से ही पूरी की। आगे की पढ़ाई के लिए उन्होंने बंगलूर के सेंट्रल कॉलेज में दाखिला लिया। लेकिन यहाँ उनके पास धन का अभाव था। अतः उन्हें ट्यूशन करना पड़ा। विश्वेश्वरैया ने 1881 में बी.ए. की परीक्षा में अव्वल स्थान प्राप्त किया। इसके बाद मैसूर सरकार की मदद से इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए पूना के साइंस कॉलेज में दाखिला लिया। 1883 की एल.सी.ई. व एफ.सी.ई. (वर्तमान समय की बीई उपाधि) की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करके अपनी योग्यता का परिचय दिया। इसी उपलब्धि के चलते महाराष्ट्र की सरकार ने इन्हें नासिक में सहायक इंजीनियर के पद पर नियुक्त किया था।

दक्षिण भारत के मैसूर, कर्नाटक को एक विकसित एवं समृद्धशाली क्षेत्र बनाने में मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का अभूतपूर्व योगदान रहा है। जब देश स्वंतत्र नहीं था, तब कृष्ण राज सागर बांध, भद्रावती आयरन एंड स्टील वर्क्स, मैसूर संदल ऑयल एंड सोप फैक्टरी, मैसूर विश्वविद्यालय, बैंक ऑफ मैसूर समेत अन्य कई महान् उपलब्धियां मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया के कड़े प्रयास से ही संभव हो पाई। इसीलिए इन्हें कर्नाटक का भगीरथ भी कहते हैं। जब वह केवल 32 वर्ष के थे, उन्होंने सिंधु नदी से सुक्कुर कस्बे को पानी की पूर्ति भेजने का प्लान तैयार किया, जो सभी इंजीनियरों को पसंद आया। सरकार ने सिंचाई व्यवस्था को दुरुस्त करने के उपायों को ढूंढने के लिए समिति बनाई। इसके लिए विश्वेश्वरैया ने एक नए लॉक सिस्टम को ईजाद किया। उन्होंने स्टील के दरवाजे बनाए, जो कि बांध से पानी के बहाव को रोकने में मदद करता था। उनके इस सिस्टम की प्रशंसा ब्रिटिश अधिकारियों ने मुक्त कंठ से की थी। आज यह प्रणाली पूरे विश्व में प्रयोग में लाई जा रही है। विश्वेश्वरैया ने मूसा व इसा नामक दो नदियों के पानी को बांधने के लिए भी प्लान तैयार किए। इसके बाद उन्हें मैसूर का चीफ इंजीनियर नियुक्त किया गया। मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया के जीवन से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्य भी हैं, जो आज किसी भी अभियन्ता को प्रेरणा प्रदान करने की अभूतपूर्व सामर्थ्य रखते हैं।

जब भारत में अंग्रेजों का शासन था, खचाखच भरी एक रेलगाड़ी चली जा रही थी। यात्रियों में अधिकतर अंग्रेज थे। एक डिबे में एक भारतीय मुसाफिर गंभीर मुद्रा में बैठा था। सांवले रंग और मंझले कद का वह यात्री साधारण वेशभूषा में था, इसलिए वहाँ बैठे अंग्रेज उसे मूर्ख और अनपढ़ समझ रहे थे और उसका मजाक उड़ा रहे थे। पर वह व्यक्ति किसी की बात पर ध्यान नहीं दे रहा था। अचानक उस व्यक्ति ने उठकर गाड़ी की जंजीर खींच दी।

तेज रफ्तार में दौड़ती वह गाड़ी तत्काल रुक गई। सभी यात्री उसे भलाबुरा कहने लगे। थोड़ी देर में गार्ड भी आ गया और उसने पूछा 'जंजीर किसने खींची है?' उस व्यक्ति ने उत्तर दिया 'मैंने खींची है।' कारण पूछने पर उसने बताया 'मेरा अनुमान है कि यहाँ से लगभग एक फर्लांग की दूरी पर रेल की पटरी उखड़ी हुई है।' गार्ड ने पूछा 'आपको कैसे पता चला?' वह बोला 'श्रीमान! मैंने अनुभव किया कि गाड़ी की स्वाभाविक गति में अंतर आ गया है। पटरी से गूंजने वाली आवाज की गति से मुझे खतरे का आभास हो रहा है।'

गार्ड उस व्यक्ति को साथ लेकर जब कुछ दूरी पर पहुँचा तो यह देखकर दंग रहा गया कि वास्तव में एक जगह से रेल की पटरी के जोड़ खुले हुए थे और सब नटबोल्ट अलग बिखरे पड़े थे। दूसरे यात्री भी वहाँ आ पहुँचे। जब लोगों को पता चला कि उस व्यक्ति की सूझबूझ के कारण उनकी जान बच गई है तो वे उसकी प्रशंसा करने लगे। गार्ड ने पूछा 'आप कौन हैं?' उस व्यक्ति ने कहा 'मैं एक इंजीनियर हूँ और मेरा नाम है डॉ. एम. विश्वेश्वरैया।' नाम सुन कर सब स्तब्ध रह गए। दरअसल उस समय तक देश में डॉ. विश्वेश्वरैया की ख्याति फैल चुकी थी। लोग उनसे क्षमा मांगने लगे। डॉ. विश्वेश्वरैया का उत्तर था 'आप सब ने मुझे जो कुछ भी कहा होगा, मुझे तो बिल्कुल याद नहीं है।' ▪

राष्ट्रीय जीवन के अनुकूल अर्थ-रचना

पं. दीनदयाल उपाध्याय

प्राचीन साहित्य में कहीं-कहीं जहाँ राजा का वर्णन किया गया है और राज्यधर्म का उसको उपदेश दिया गया है, वहाँ उसे अत्यन्त महत्वशाली अवश्य बताया गया है। यह शायद इसलिए कि उसे अपने कर्तव्य का भान रहे, अपने दायित्व की जानकारी रहे। वह संपूर्ण समाज जीवन के ऊपर प्रभाव डालने वाला व्यक्ति है। उसे अपने ऊपर पूरा ध्यान देना चाहिए। महाभारत में भीष्म ने यही बात कहीं। राजा काल का कारण है अथवा काल राजा का कारण? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने बिल्कुल निश्चयात्मक रूप से बतलाया। **राजा कालस्य कारणम् कि** राजा ही काल का कारण है। अब इसमें से कुछ लोग यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि उन्होंने राजा को ही सर्वोपरि माना है, परन्तु यह बात सत्य नहीं है। भीष्म ने राजा को इतना महत्व देते हुए भी विधि से ऊपर नहीं बताया। राजा का प्रभाव होता है सत्य है और राजा, समाज में धर्म रहे, इस बात को देखने की जिम्मेदारी लेकर चलता है, यह भी सत्य है। किन्तु राजा धर्म का निर्माण करने वाला नहीं होता। धर्म का लोग पालन करें यही बात वह देखने वाला है। यानि एक प्रकार से कहा जाय तो राजा का स्थान उतना ही है, जितना आज के समय में कार्यपालिका का होता है।

जिम्मेदार कार्यपालिका

कार्यपालिका आज भी कानून नहीं बनाती, परन्तु राज्य ठीक प्रकार से चले यह जिम्मेदारी कार्यपालिका पर होती है। अगर कार्यपालिका ठीक न चले तो कानून की कैसी धज्जियां उड़ती हैं, वह आज हम अच्छी तरह से देख रहे है। आज भी हम कह सकते हैं कार्यपालिका **कालस्य कारणम् कि** आज जो बुराइयाँ चल रही हैं उसमें कार्यपालिका की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। आखिर नशाबन्दी क्यों असफल हो गई है? यहाँ उसके लिए कौन जिम्मेदार है? जिन लोगों पर इस बात का दायित्व डाला गया कि नशाबन्दी चलेगी कहाँ से? उसके लिए जिम्मेदारी कार्यपालिका पर आती है। इसी जिम्मेदारी के रूप में भीष्म की उपर्युक्त सर्वप्रभुता सपन्न माना है। अगर ऐसा होता तो फिर अत्याचारी राजा वेण को राज्यसिंहासन से हटाकर पृथु को गद्दी पर बिठाने का काम ऋषियों ने न किया होता। ऋषियों के इस कार्य को किसी भी शास्त्र ने, किसी भी इतिहास ने बुरा नहीं कहा, बल्कि अच्छा ही कहा। धर्म की प्रभुता स्वीकार करने पर ही ऋषियों को अधर्मी राजा को हटाने का अधिकार प्राप्त होता है, अन्यथा राजा को हटाना अवैध माना जाता। यदि राजा अपने कर्तव्य का पालन न करे तो राजा को हटाना धर्म है। किन्तु पश्चिम में एक राजा को दूसरे राजा ने संघर्ष करके हटाया या जनता ने उस समय हटाया जब उन्होंने तत्वतः राजपद्धति को अमान्य कर दिया। वहाँ राजा ईश्वर का प्रतिनिधि है और किसी भी परिस्थिति में नहीं हटाया जा सकता।

समाज व्यवस्था में अनेक संस्थायें

राजा या राज्य सर्वोपरि तो है ही नहीं, वह एकमेव संस्था भी नहीं है। समाज की व्यवस्था तथा उसके जीवन का नियमन करने वाली, समाज की व्यवस्था देखने वाली, अनेक संस्थायें हैं। उनका प्रादेशिक और व्यवसायिक दोनों आधारों पर गठन हुआ है। पंचायतें और जनपद सभायें हमारे यहाँ रही है। बड़े-से-बड़े चक्रवर्ती सार्वभौम राजा ने कभी पंचायतों को समाप्त नहीं किया। इसी प्रकार व्यवसायिक संगठन भी रहे हैं। उन्हें भी किसी ने समाप्त नहीं किया, अपितु उनकी स्वायात्तता को स्वीकार किया गया। अपनेअपने क्षेत्र में उन्होंने नियम बनाये। जाति की पंचायतें, श्रेणियाँ, निगम, ग्राम पंचायतें, जनपद सभायें आदि संस्थायें नियम बनाती थीं। राज्य का काम यही था कि इन नियमों का पालन होता है कि नहीं, यह देखें। राज्य ने कभी उनके मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया। इस प्रकार हमारे यहाँ राज्य तो जीवन के थोड़े से हिस्से को ही छूता था।

इसी प्रकार आर्थिक क्षेत्र में भी अनेक संस्थाएं जन्म लेती हैं। इस दृष्टि से हमें आज कुछ अर्थव्यवस्था का भी विचार करना पड़ेगा। अर्थव्यवस्था कैसी हो? हमें ऐसी व्यवस्था चाहिए जो हमारे मानवत्व को विकसित कर सके, हमारे मानव्य को समाप्त न करें, उसके ऊपर प्रतिकूल प्रभाव न डाले और जिसके द्वारा हम मानव से ऊँचे उठकर देवत्व को प्राप्त कर सकें। क्योंकि हमारे यहाँ पर मानव जीवन का पूर्ण विकास उसका देवत्व के रूप में आविर्भाव ही माना गया। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए अर्थव्यवस्था की क्या मर्यादायें होनी चाहिए, इसका विचार करें।

अर्थव्यवस्था की मर्यादायें

लोगों के भरणपोषण के लिए, जीवन के विकास के लिए और राष्ट्र की धारणा और विकास के लिए जिन मौलिक साधनों की आवश्यकता होती है उनका उत्पादन अर्थव्यवस्था का लक्ष्य होना चाहिए। न्यूनतम मर्यादा के बाद और अधिक समृद्धि एवं सुख के लिए अर्थोत्पादन करना चाहिए या नहीं, यह स्वाभाविक प्रश्न पैदा होता है। पश्चिम का अर्थशास्त्र तो इच्छाओं को बराबर समझता है। इस विषय में उसकी कोई अधिकतम मर्यादा नहीं है। सामान्यतयाः तो पहले इच्छा होती है और फिर उसकी पूर्ति के साधन जुटाये जाते है, उसके

उपयोग हो इसके लिए लोगों में इच्छा पैदा की जाती है। बाजार के लिए माल पैदा करने के स्थान पर पैदा किये हुए के लिए बाजार ढूँढना, न मिले तो बाजार पैदा करना आज की अर्थनीति का प्रमुख अंग बन गया है। आरंभ में उत्पादन उपभोग का अनुसरण करता था, अब उपभोग उत्पादन का अनुचर है।

हम चाय का ही उदाहरण लें। चाय की माँग थी, इसलिए चाय नहीं पैदा की गई। किन्तु चाय पैदा की गई और इसलिए हमें पीना सिखाई गई। हम जब चाय पीते हैं। वह हमारे जीवन का एक अंग बन गई है। इसी प्रकार हम आजकल वनस्पति तेल का उपभोग कर रहे हैं। क्या हमने कभी इसकी माँग की थी? वास्तव में वनस्पति पैदा किया गया और फिर हमें उसका उपभोग सिखाया गया। जो कुछ पैदा होता है यदि उसका उपभोग न करें तो वहाँ पर मन्दी आ जावेगी। 1930-32 की मन्दी का जमाना हमें याद होगा। उस समय माल तो था पर उसकी खपत नहीं थी, इसलिए धड़ाधड़ कारखाने बन्द होते जाते थे। दिवाले निकल रहे थे तथा बेकारी बढ़ती जाती थी। इसलिए आज महत्व की वस्तु यह हो गई है कि पैदा माल की खपत हो जाय।

अंग्रेजी के साप्ताहिक ऑर्गनाइजर के संपादक कुछ वर्ष पूर्व अमरीका गये थे। वहाँ से लौटने के बाद उन्होंने एक मजेदार घटना बताई। वहाँ आलू छीलने का चाकू बनाने का एक कारखाना है। उस कारखाने का उत्पादन इतना बढ़ गया कि लोगों की आवश्यकता से ज्यादा पैदा करने लगा। अतः प्रश्न पैदा हुआ कि लोग चाकू अधिक संख्या में खरीदें इसका कोई तरीका ढूंढा जाए। कारखाने के सेल्समेनों की बैठक हुई। एक सुझाव रखा गया कि यदि चाकू के बेंटे का रंग आलू के छिलके जैसा ही बनाया जाय तो आलू छीलने क बाद छिलके के साथ चाकू को भी कूड़े की टोकरी में फेंकने की संभावना बढ़ जाएगी। इस प्रकार माल की अधिक खपत होगी। चाकू को आकर्षक बनाने के लिए सुन्दर पैकिंग की भी व्यवस्था की गई। अब यह अर्थव्यवस्था उपभोग प्रधान न होकर विनाशोन्मुख है। पुराना फेंको और नया खरीदों। नया खरीदने की चाह उपभोक्ता में पैदा करना, मांग पूरी करना नहीं, मांग पैदा करना यही आज अर्थव्यवस्था का लक्ष्य हो गया है।

प्रकृति की मर्यादा न भूलें

किन्तु उत्पादन का संबंध प्राकृतिक साधनों से भी है। यदि अन्धाधुन्ध उत्पादन बढ़ाते गए तो ये प्राकृतिक साधन कब तक साथ देंगे? कुछ लोग यह कहकर समाधान कर देते हैं कि यदि एक प्रकार के साधन समाप्त हो गए तो दूसरी प्रकार की वस्तुओं की खोज हो जाएगी। नये इंस्टीट्यूट ढूँढे जा सकते हैं। उनके इस तर्क में निहित बल को स्वीकार करने के बाद भी यह कहना पड़ेगा कि प्रकृति की सम्पदा अपार होने पर भी उसकी मर्यादा है। यदि बड़ी तेजी के साथ आवश्यक रूप से हम उसका खर्च करते गए तो एक दिन हमें पछताना पड़ेगा।

प्रकृति से उच्छृंखलता

प्रकृति की संपदा की मर्यादा की चिन्ता न भी करें तो कम से कम इतना तो हमें मानना ही पड़ेगा कि प्रकृति में विभिन्न वस्तुओं के बीच एक परस्परावलंबी सबन्ध हैं। एक-दूसरे के सहारे खड़ी तीन लकड़ियों में से यदि हम एक की स्थिति में परिवर्तन कर दें तो शेष दो अपने आप गिर जाएंगी। आज की अर्थव्यवस्था और उत्पादन की पद्धति इस सामंजस्य को बड़ी तेजी से बिगाड़ती जा रही है। परिणामतः जहाँ एक ओर हम नये-नये प्रश्न हमारी संपूर्ण सभ्यता और मानवता को समाप्त करने के लिए पैदा होते जा रहे है।

हम प्रकृति से उतना तथा इस प्रकार लें कि वह उस कमी को स्वयं पुनः पूरित कर ले। पेड़ से फल लेने में उसकी हानि नहीं होती, लाभ होता है। पर भूमि से अधिक फसल लेने के लोभ में हम ऐसे उर्वरकों का प्रयोग कर रहे हैं जिनसे कुछ दिनों के बाद उसकी उत्पादन शक्ति समाप्त हो जाती है। आज अमरीका मे लाखों एकड़ भूमि इस प्रकार की खेती के कारण ऊसर हो चुकी है। यह विनाशलीला कब तक चलती रहेगी?

कारखानेदार मशीन आदि के लिए घिसाई-निधि की व्यवस्था करता है। परन्तु प्रकृति के इस कारखाने के लिए हम किसी भी घिसाई निधि की चिन्ता न करें, यह कैसे हो सकता है, इस दृष्टि से विचार किया जाए तो कहना होगा कि हमारी अर्थव्यवस्था का लक्ष्य अमर्यादा उपभोग नहीं अपितु संयमित उपभोग होना चाहिए। सोद्देश्य, सुखी, विकासमान जीवन के लिए जिन भौतिक साधनों की आवश्यकता है वे अवश्य ही प्राप्त होने चाहिए। भगवान की सृष्टि का अध्ययन करें तो पता चलेगा कि उतनी व्यवस्था उसने की है। किन्तु जब हम यह समझ कर कि भगवान ने मनुष्य को केवल उपभोग प्रवण प्राणी बनाया है और उसके लिए अन्धाधुन्ध उपभोग के लिए ही अपनी संपूर्ण शक्ति खर्च करें, तो यह ठीक नहीं। इंजिन को चलाने के लिए कोयला चाहिए। किन्तु कोयला खाने के लिए इंजिन नहीं बनाया गया। प्रत्युत हमारा प्रयत्न तो यही रहता है कि कम से कम इँधन से ज्यादा से ज्यादा शक्ति कैसे पैदा हो। यह बचत का दृष्टिकोण है। मानव जीवन के उद्देश्य का विचार करके हमें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे वह न्यूनतम इँधन से अधिकतम गति के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकें। यह अर्थव्यवस्था माननी होगी। यह मानव के एक पहलू का विचार न कर उसके पूर्ण जीवन का तथा अन्तिम उद्देश्य का विचार करेगी। यह संहारात्मक न होकर सृजनात्मक होगी। यह प्रकृति के शोषण पर निर्भर न रहकर उसके पोषण पर निर्भर रहेगी। शोषण नहीं, दोहन हमारा आधार होना चाहिए था। प्रकृति का स्तन्य हमारे लिए जीवनदायी हो, यही व्यवस्था करनी चाहिए।

पश्चिम के घातक आर्थिक नारे

अर्थव्यवस्था का यह मानवी उद्देश्य रहा तो आर्थिक प्रश्नों की ओर देखने की हमारी दृष्टि बदल जायेगी। पश्चिम की अर्थव्यवस्था में, वह पूंजीवादी हो या समाजवादी, मूल्य को अत्यन्त महत्व का एवं केन्द्रीय स्थान प्राप्त है। उसके चारों ओर ही संपूर्ण आर्थिक विचार चक्कर लगाता रहता है। एक नैयायिक की दृष्टि से मूल्य सबन्धी विश्लेषण का चाहे जो महत्व हो किन्तु उसके आधार पर जो जीवनदर्शन बने हैं वे बहुत ही अधूरे, अमानवीय एवं कुछ अंशों में नीति-विहीन भी हैं। एक उदाहरण लें। आजकल का नारा लगाया जाता है कमाने वाला खाएगा। सामान्यतया यह नारा कम्यूनिस्ट लगाते हैं, किन्तु पूंजीवादी भी इस नारे के मूल में निहित सिद्धान्त से असहमत नहीं। यदि दोनों में झगड़ा है तो इसी बात का कि कौन कितना कमाता है। पूंजीवादी साहस और पूँजी को महत्व देते हैं और इसलिए खाने में उनका प्रमुख भाग रहा तो उसे वे उचित ही मानते हैं। दूसरी ओर कम्यूनिस्ट श्रम को ही निर्माण मानते हैं, इसलिए वे श्रमिक को ही खाने का अधिकार देते हैं। ये दोनों ही विचार ठीक नहीं हैं। वास्तव में तो हमारा नारा होना चाहिए 'कमाने वाला खिलायेगा' तथा जन्मा सो खायेगा। खाने का अधिकार जन्म से प्राप्त होता है। कमाने की पात्रता शिक्षा से आती है। समाज में जो कमाते नहीं वे भी खाते हैं। बच्चे, बूढ़े, रोगी, अपाहिज सबकी चिन्ता समाज को करनी पड़ती है। प्रत्येक समाज इस कर्तव्य का निर्वाह करता है। मानव की सामाजिकता और संस्कृति का मापदण्ड इस कर्तव्य के निर्वाह की तत्परता ही है। इस कर्तव्य के निर्वाह की क्षमता पैदा करना ही अर्थव्यवस्था का काम है। अर्थशास्त्र इस कर्तव्य की प्रेरणा का विचार नहीं कर पाता। काम तो मनुष्य अपने इस कर्तव्य के निर्वाह के लिए करता है, अन्यथा जिनकी भूख मिट गई है वे काम ही नहीं करेंगे।

न्यूनतम स्तर

मानव के नाते भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति किसी भी अर्थव्यवस्था का न्यूनतम स्तर है। रोटी, कपड़ा और मकान मोटे रूप में इन आवश्यकताओं की अभिव्यंज्जना करते हैं। इसी प्रकार व्यक्ति को समाज के प्रति कर्तव्यों का निर्वाह करने के लिए सक्षम बनाना भी समाज का आधारभूत दायित्व है। और किसी भी प्रकार के अस्वास्थ्य की दशा में व्यक्ति को स्वस्थ्य बनाने की व्यवस्था करना तथा उसके निर्वाह की व्यवस्था करना भी समाज का काम है। इतना कम से कम जिस राज्य में हो वही धर्मराज्य है, नहीं तो अधर्म राज्य है।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने भोपाल में स्वतंत्रता दिवस समारोह में ध्वजारोहण किया।

प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने स्वाधीनता दिवस पर कटनी भाजपा कार्यालय में ध्वजारोहण किया।

भाजपा के वरिष्ठ नेता, केन्द्रीय संसदीय बोर्ड के सदस्य डॉ. सत्यनारायण जटिया ने प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा से भेंट की।

प्रदेश अध्यक्ष ने 'हर घर तिरंगा अभियान' के लिए सुविधा केन्द्र का उदघाटन किया।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने उज्जैन राम घाट पर भगवान चंद्रमौलेश्वर जी का अभिषेक एवं पूजन किया।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान मंदसौर में भगवान पशुपतिनाथ की शाही सवारी में शामिल हुए और रथ खींचा।

पिछड़ा वर्ग मोर्चा के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष श्री नारायण सिंह कुशवाह ने पदभार ग्रहण किया।

प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने पन्ना स्थित निवास पर 'हर घर तिरंगा अभियान' तिरंगा लगा कर मनाया।